गीता परिवार

गीता मैत्री

A Learngeeta Yearly Newsletter



LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

June 2020 - October 2021



संस्थापक अध्यक्ष

प. पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज

कार्याध्यक्ष

डॉ. संजय मालपाणी, संगमनेर

उपाध्यक्ष

श्री हरिनारायण व्यास (दक्षिणांचल प्रभारी)
डॉ. आशू गोयल (उत्तरांचल प्रभारी)
आ. प्रमिला माहेश्वरी (मध्यांचल प्रभारी)
श्री संदीप माहेश्वरी (पूर्वांचल प्रभारी)
श्री गोविंद माहेश्वरी (पश्चिमांचल प्रभारी)

कोषाध्यक्ष

श्री महेंद्र काबरा, मुम्बई

सचिव

श्री श्रीकांत कासट, संगमनेर

सह सचिव

श्री गिरीश डागा

गीता मैत्री

A Learngeeta Newsletter

मुख्य संपादक

डॉ. आशू गोयल

सह संपादक

सुश्री कविता वर्मा

लेखक एवं संकलनकर्ता

सौ. जान्हवी केलकर - औरंगाबाद
श्री गीत गोविन्द साहू - जगदलपुर
श्रीमती सुधा शुक्ला - मुम्बई
श्री रमेश कुमार रतेरिया - कोलकाता
सौ. कोमल नायडू - पुणे
श्री प्रसाद मनोहर लेले - पुणे

श्री घनशाम दास - नई दिल्ली
डॉ. अपर्णा होलकुंडकर - भोपाल
सौ. रेणू पुराणिक - नागपुर
श्री विमल जैन - कोलकाता
सौ. मोहिनी दुर्गवले - ठाणे
सौ. अल्का शर्मा - गाज़ियाबाद

श्रीमती शशि बैजल - कानपुर
श्री यतीश विजयवर्गीय - कोटा
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे - पुणे
श्रीमती सन्ध्या गंगराडे - इंदौर
सौ. पुनीता प्रसाद - चेन्नई

मुखपृष्ठ

सुश्री कश्मीरा, ठाणे

ई-बुक डिज़ाइनर

सुश्री सायली खेडकर
Pixel N Paper, Pune

अनुक्रमणिका

सीधे पृष्ठ पर जाने हेतु विषय पर क्लिक करें (Tap on the topic to read)

गीता मैत्री	- प.पू. स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज	1
प्रास्ताविक	- डॉ. संजय जी मालपाणी	2
सम्पादकीय	- डॉ. आशू जी गोयल	3
निमित्त मात्रं भव सव्यसाचिन्		5
Introduction of Learngeeta		7
पृष्ठभूमि		9
शुभारम्भ		12
चारधाम यात्रा		15
• स्तर - 1		17
• स्तर - 2		21
• स्तर - 3		22
• स्तर - 4		23
साप्ताहिक गीता विवेचन सत्र		25
कण्ठस्थीकरण परीक्षाएं		29
विशेष गीता व्याकरण वर्ग		32
आओ गीता सेवी बनें		35
एक्स्ट्रा क्लासेस		37
गीता चिन्तनिका सत्र		38
गीता संथा वर्गों के अंतर्गत विभिन्न उत्सव		
• आनन्दोत्सव		41
• गीता संथा दीपोत्सव		43
• गीता जयंती महोत्सव		45
• प्रचलित नववर्ष उत्सव		47
• गीता भक्ति दिवस		48
• प्रथम वार्षिकोत्सव		53
• श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		56
• प्रथम L4 वर्ग पूर्णाहुति		58
कोविड में गीता		61
Learngeeta - निःस्वार्थ सेवा		63
मनोगत		64
प्रश्नमाला		69
गीतासेवी टीम्स का परिचय		70
आंकड़ों की नज़र में...		72
Volunteers' Brigade		73
गीता प्रशस्ति पत्रक योजना		74



स्वागत - 'गीता मैत्री' का



।।ॐ।।

गीता-गोरस उपनिषदों का
कृष्ण-कन्हैया बाँट रहे
सुनकर दौड़े बालक सारे
धूम मची, सब लूट रहे

ग्वाल बाल - बालाएँ अगनित
जुटकर गीता सीख रहे
गीता पढ़ें, पढ़ायें कैसे
यह प्रयास कर देख रहे

धन्य हुआ आभासी परदा
गीता-गान चला ऐसा
वर्षावधि का विवरण इसमें
एकत्रित है सुंदर सा

'गीता-मैत्री' हम सबकी यह
जनम-जनम तक बनी रहे
मधुरिम है यह यात्रा मित्रों
टोली अपनी जमी रहे

मार्ग० कृ. २
युगाब्द. ५१२३
दि. २१.११.२०२१

स्वामी गोविंददेवगिरि

प्रास्ताविक



गोवर्धन जो स्वयं भगवान ने उठा लिया!

संथा कक्षा का ऑनलाइन उपक्रम लखनऊ की बेटियों ने मात्र 15-20 साधकों के साथ आरंभ किया था। मुझे अतिथिरुप में आमंत्रित किया गया था। यह उपक्रम देख मैंने आशू भैया से कहा कि इसे हम कम से कम एक हजार लोगों तक पहुँचाते हैं। आशू भैय्या ने एक लिंक तैयार कर लोगों को जुड़ने का आवाह्न किया कुछ घंटो में ही 2000 गीताप्रेमी जुड़ गये।

हमें अंदाजा ही नहीं था कि ऐसा प्रतिसाद मिलेगा। मैंने सत्वर संगमनेर के 25 प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण श्रीमती सुवर्णा काकीजी से आरंभ करवाया। कुछ युवा कार्यकर्ता इस उपक्रम को तंत्र सहयोग देने हेतु जोड़े। पहला वर्ग सुचारु रूप से संपन्न हुआ। जब तक दूसरा वर्ग आरंभ होता तब तक और भी प्रशिक्षक तैयार किये गये और देखते ही देखते यह कारवाँ आगे बढ़ता गया। आज प्रतिदिन लगभग 1000 ज़ूम कक्षाएँ चल रही हैं। 10 भाषाओं में संस्कृत देवनागरी के गीता श्लोकों को लिखवाया गया। अनुस्वार, विसर्ग, आघात के चिह्नांकन किये गये और लगभग 5000 कार्यकर्ता इस काम से जुड़ गये।

पीछे मुड़कर देखते हैं तो मात्र एक हजार लोगों के लिए आरंभिक यह उपक्रम देखते ही देखते तीन लाख लोगों को लाभान्वित कर गया। यह देखकर हम भी अचंभित हो गए। यह कैसे संभव हुआ, इस विषय में सोचते हैं तो प्रतीत होता हैं कि यह पूज्य स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरि जी महाराज का संकल्प प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्ण द्वारा संघ शक्ति के माध्यम से ही चलाया जा रहा हैं। गीता से प्रेम करने वाले हजारों लोग गीता परिवार के सदस्य बन इस उपक्रम से निःस्वार्थ भाव से जुड़ गये हैं।

हर सप्ताह विवेचन करने का दायित्व मुझे सौंपा गया। मेरे जैसे अल्पमति अबोध द्वारा इस कार्यकाल में डेढ़ सौ से अधिक विवेचन 'मूकं करोति वाचालं' की अनुभूति देने वाले रहे हैं। आज जहां भी जाता हूँ, लोग गीता के नाम से पहचान रहे हैं यह उस परमपिता की अहैतुकी कृपा ही हैं।

आशू भैया के निर्देशन में यह उपक्रम इतना विस्तारित हुआ है यह देखकर अतीव प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ। कोई पूछे कि क्या आपने भगवान को देखा है? तो मेरा उत्तर होगा, जी हॉ ! उसका विराट रूप गीता संथा कक्षा को चलाता हुआ मैं देख रहा हूँ... यह गोवर्धन उसी ने उठा रखा है।

डॉ. संजय मालपाणी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
गीता परिवार

सम्पादकीय



गीताशास्त्रमिदं पुण्यम्

Learngeeta प्रोग्राम का जो वर्तमान स्वरुप है इसका संकल्प पूज्य स्वामीजी महाराज ने जब दिसम्बर 2019 में गीता परिवार के कार्यकर्ताओं के सामने 'हर हर गीता - घर घर गीता' संकल्पना के साथ रखा, तब यह अनुमान किसी को नहीं था कि इतना शीघ्र ही यह स्वप्न साकार भी हो जायेगा।

गीता परिवार की स्थापना पूज्य स्वामीजी ने परमादरणीय स्व. श्री ओंकारनाथ जी मालपाणी की छत्रछाया में पाण्डव पञ्चमी को सन् 1986 में की थी और तब ही यह घोषणा कर दी थी कि भविष्य में यह पूरे विश्व का सांस्कृतिक नेतृत्व करने वाली संस्था बनेगी। भगवद्भक्ति, भगवद्गीता, भारतमाता, विज्ञानदृष्टि एवं स्वामी विवेकानंद के आदर्श, इस पञ्चसूत्री आधार पर गीता परिवार ने गत वर्षों में देश के छोटे-छोटे गाँवों से लेकर महानगरों तक मीडिया की चमक दमक एवं ग्लैमर आदि से दूर रहकर बाल संस्कार, योग एवं गीता प्रचार का कार्य नि:स्वार्थ भाव से निरंतर किया।

कोरोना काल में गीता परिवार के अनेक केन्द्र अपने-अपने स्थान पर 'आपदा अन्नसेवा' के विशाल उपक्रम द्वारा लाखों प्रवासी मजदूरों और दैनिक आय पर आधारित जनमानस तक भोजन पँहुचाने की वृहत सेवा करते रहे। तब यही विचार मन में निरंतर चला कि वर्षों की गीता परिवार की साधना के फल के रूप में भगवान ने ऐसी सेवा के लिये हमें चुना और जब यह 'Learngeeta - गीता संथा वर्ग' विशाल वटवृक्ष बनता दिखायी दिया तब ऐसा प्रतीत हुआ कि साधना और सेवा का यह प्रत्यक्ष प्रसाद है कि प्रभु ने अपना सबसे प्रिय कार्य करने हेतु गीता परिवार के कार्यकर्ताओं को नियुक्त कर दिया। गीता परिवार को माध्यम बनाकर आज हजारों-हजार गीतासेवी पूरे विश्वपटल से इस महायज्ञ में अपनी आहुति अर्पित कर अपने जीवन की धन्यता का अनुभव कर रहे हैं।

मात्र पाँच-सात सौ साधकों को सिखाने के विचार से आदरणीय संजय भैया की प्रेरणा से जब इसका नियोजन हुआ तो कल्पना भी नहीं थी कि यह विश्वपटल पर भगवद्गीता का परचम फहराने वाला यह इतिहास का सबसे बड़ा प्रकल्प बन जायेगा। 'गीताप्रेमी जुड़ते गये और काफिला बनता गया' मात्र कुछ घंटों में ही 2000 साधकों द्वारा फॉर्म भरने से हमें भविष्य में होने वाले इस चमत्कार की आहट मिल गयी थी। जैसा कि भगवान ने 18वें अध्याय के 69वें श्लोक में कहा – 'न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः' उसी के अनुसार भगवान ने अपनी सर्वाधिक प्रिय सेवा के लिए हमें चुन लिया है, ऐसे संकेत मिलने लगे।

लगभग एक वर्ष में 2.5 लाख गीताप्रेमियों का पंजीकरण, नित्य 50000 से अधिक साधकों की ज़ूम कक्षाओं में उपस्थिति, 10 भाषाओं और 13 समय सत्रों में सीखने की सुविधा, इतना प्रचुर शुद्ध ऑडियो वीडियो पीडीएफ आदि साहित्य, उत्तम विनम्र प्रशिक्षकों का सान्निध्य एवं सभी कुछ पूर्णत: नि:शुल्क। साप्ताहिक विवेचन सत्रों में प्रति सप्ताह 30000 से भी अधिक दृश्यों(views) के साथ गीता पाठ एवं विवेचन श्रवण से अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन के अनुभवों के भण्डार सुनने को मिलना किसी दैवीय चमत्कार की ही बात लगती है। कोरोना की इस भीषण आपदा में हममें से किसने अपने निकट के इष्ट-मित्र, परिजन, सम्बन्धियों को नहीं खोया और ऐसे में भगवद्गीता का सान्निध्य हजारों साधकों को अवसाद के काल से निकालकर भक्तिपूर्ण कर गया। 5 वर्ष से 88 वर्ष आयुवर्ग के प्रतिमाह लगभग 3000 से 5000 साधकों का कंठस्थीकरण गीता परीक्षाओं में सम्मिलित होकर हतप्रभ कर देने वाला प्रदर्शन।

भगवद्गीता का विराट दर्शन साक्षात् साकार हो रहा है। अपने भाग्य की मैं कैसे सराहना करूँ, उसके लिए शब्दविहीन सा हो गया हूँ। पूज्य स्वामीजी व आ. संजय भैया के नेतृत्व में इस विशाल रथ का सारथ्य करने की मुझमें कोई योग्यता नहीं दिखती परन्तु **'जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करे सब कोई'**, इसका प्रत्यक्ष अनुभव मैं नित्य हर क्षण करता हूँ। अब तो श्रीभगवान् व गुरुदेव के चरणों में यही विनती है कि इस अकिञ्चन दास की एक-एक श्वास बस इस सेवा में ही अर्पित होती रहे। परमपूज्य ब्रह्मलीन पथिक जी महाराज की ये पंक्तियाँ स्मरण हो रही हैं -

वह योग्यता दो, सत्कर्म कर लूँ, अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ, नर तन है साधन भव सिन्धु तर लूँ,
हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये

'सर्वभूत हिते रताः' संकल्प के साथ लर्नगीता की पूरी टीम, कुछ प्रत्यक्ष-कुछ अप्रत्यक्ष, कोई प्रशिक्षक, कोई तकनीकी सहायक, कोई ग्रुप कोऑर्डिनेटर, कोई आई.टी सपोर्ट , कोई टेली कालिंग, कोई ट्रांसलेटर आदि आदि प्रतिनिधित्व इतने क्षेत्र हैं कि सब याद रखना भी कठिन हो जाता है, हजारों की संख्या में नित्य सेवा करने वाले साधक कार्यकताओं का सादर अभिनन्दन। इस गुरुतर गुरु-कार्य करने वालों को सादर साधुवाद। सभी कार्यकर्ता **'निमित्त मात्रं भव सव्यसाचिन्'** के भाव से अग्रसर हैं। यश लेने में निमित्तमात्र परन्तु कार्य करने के लिए सव्यसाची। प्रभुकृपा और स्वामीजी का आशीर्वाद प्राप्त कर सभी का इह लोक और परलोक दोनों संवर जाये ऐसी शुभकामना सभी के लिये अर्पित करता हूँ।

'प्रभु की कृपा भयउ सब काजू, जन्म हमार सफल भा आजू' ये विचारकर सब कार्यकर्त्ताओं को अपने अन्दर धन्यता का अनुभव हो रहा है, ऐसे प्रतिसाद नित्य ही सुनने को मिलते हैं। जब विचार करता हूँ तो मुझे लर्नगीता का कार्य विशाल गोवर्धन पर्वत के समान दीखता है। पूज्य स्वामीजी महाराज भगवान श्रीकृष्ण की तरह इस गोवर्धन को अपनी अंगुलि पर उठाये हुये हैं और हम सब कार्यकर्ता गोप और गोपी बनकर अपनी लाठी लगाकर यश प्राप्त कर रहे हैं।

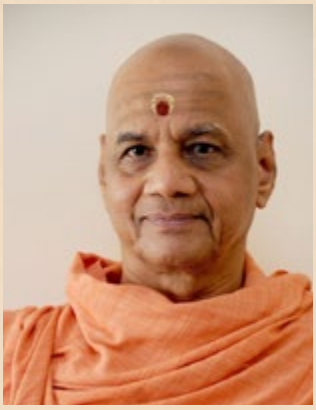
इस न्यूज़लेटर 'गीता मैत्री' के प्रकाशन हेतु पूज्य स्वामीजी ने बहुत समय पूर्व ही मुझे निर्देश दिए थे परन्तु अन्य सेवाओं की प्राथमिकता में इस कार्य को करने में बड़ा विलम्ब हो गया उसके लिये हृदय से क्षमा प्रार्थी हूँ। आशा है हमारी टीम के अथक परिश्रम से तैयार किये गये सब लेखों, आंकड़ों व फोटो आदि को देखकर पाठकों को अत्यन्त आनन्द व संतोष की अनुभूति होगी।

यह गीतामैत्री का अंक प्रति 2 माह में प्रकाशित होता रहे, ऐसा विचार है। इस हेतु पाठक अपने लेख एवं इस पत्रिका में प्रकाशन योग्य सामग्री newsletter.geetamaitri@gmail.com पर भेज सकते हैं, चुनी हुयी सामग्री एवं लेखों को प्रकाशित किया जायेगा।

डॉ. आशू गोयल
कार्यक्रम निदेशक
लर्नगीता, गीता परिवार

निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्

- स्वामी गोविन्ददेव गिरि



Learngeeta कार्यक्रम में ये सभी कार्यकर्ता गत डेढ़ वर्षों से निरंतर कार्य कर रहे हैं, इन्हें देखकर गीता का श्लोक स्मरण में आता है -

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते।।

भगवद्गीता ने सात्त्विक कार्यकर्ता की जो व्याख्या की है वह इन सभी कार्यकर्ताओं में दिखती है, क्योंकि जिस उत्साह एवं धृति के साथ ये सभी कार्य कर रहे हैं वह अद्भत है। मुझे तो प्रतीत होता है कि संजय भैया और आशू भैया ने यह प्रण लिया है कि न सोयेंगे न सोने देंगे।

ये सभी कार्यकर्ता दिन में तो कार्य करते ही है किंतु रात्रि में भी इनके कार्यों का प्रवाह नही टूटता है। और यह सबकार्य जो ये कर रहें हैं इसमे किसी का कोई निजी स्वार्थ नही है। सभी के अन्तःकरण में मात्र एक बात है कि गीता घर घर तक पहुँचे। श्रीकृष्ण की वाणी जो मंत्रमयी है एवं सभी मे उत्साह भरती है। गीता हमें अनेक बाते सिखाती है, उनमे से दो बातें जो आज मैं कहना चाहता हूँ प्रथम भगवद्गीता हमे जीवन में संतुलन का संदेश देती है। समत्वं योग उच्यते!

समत्व का जीवन जीना ही तो भगवद्गीताकार 'योग' कहते हैं। दूसरी बात है 'दक्षता' - **'अनपेक्षः शुचिर्दक्ष'**

भगवान का भक्त दक्ष भी होना चाहिये यदि वह दक्ष नहीं होगा तो आगे दीर्घकाल तक कार्य नही कर पायेगा। और इन्ही सब बातों को समेटकर ये कार्यकर्ता डेढ़ वर्षों तक कार्य करते रहें। मैं तो इनके साथ नाम मात्र से जुड़ा हूँ। किन्तु फिरभी ये कार्य का श्रेय मुझे दे देते है।

आश्चर्य की बात है कि 117 देशों से तीन लाख से अधिक साधक 13 विभिन्न समयों पर 10 भाषाओं में गीता सीख रहे हैं। गीता इतना व्यापक प्रचार हो गया तो इसे देखकर एक बात संज्ञान में आती है कि यह कार्य हम नही कर रहे हैं किंतु यह कार्य तो स्वयं श्रीकृष्ण ही कर रहे हैं। हमे तो उन्हीने कृपा करके इस कार्य का निमित्त बना दिया। वे स्वयं गीता में कहते हैं- **'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्!'**

कार्य तो वे स्वयं कर रहे हैं किंतु श्रेय गीता परिवार को देना चाहते हैं। **'तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व!'**

अतः भगवान हमसे यह कार्य करवा रहे हैं। इसी कार्य का सम्पूर्ण एक वर्ष का लेखा जोखा यहां गीता मैत्री में संकलित किया जा रहा इसके लिए मुझे अत्यंत प्रसन्नता है।

आज यह कहते हुए अत्यंत आह्लाद होता है कि गीता सीखने की जो शुद्ध प्रक्रिया आज गीता परिवार द्वारा निर्माण की गई है वह सभी के द्वारा प्रमाण मानी गयी है एवं संसार मे अग्रगण्य है। इसका श्रेय सभी कार्यकर्ताओं को जाता है। हमारी टोली निरन्तर जमकर यह कार्य करती रहेगी।

'एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः। अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।।'

एक बात हमे अवश्य ध्यान में आती है कि जो लोग इस कार्य मे जुड़ पाएं हैं उन्हें अपनी धन्यता का अनुभव अवश्य होने वाला है और जो लोग इस गंगा में गोते लगाने से रह गयें। उन्हें भी कभी न कभी यह पछतावा अवश्य होने वाला है। इस विराट कार्य को सदा ही संतों का आशीर्वाद है। अतः यह कार्य और पुष्ट होगा इसमे कोई संदेह नहीं है। अतः धन्य है वे जो गीता पढ़ते हैं पढ़ाते हैं एवं जीवन मे लाते है।

आओ गीता प्रचारक बनें

REG.LEARNGEETA.COM

सहज व सरल ढंग से भगवान की वाणी में गायी गयी भगवद्गीता
का शुद्ध उच्चारण सीखें व अन्यों को प्रेरित कर
भगवान का प्रिय कार्य करने वाला बनें।

Introduction of Learngeeta

Bhagavad Gītā embodies the essence of Indian culture. At Geeta Pariwar, our mission is to spread this sacred knowledge far and wide. With the blessings of Param Pujya Swami Shri Govindadev Giri Ji Maharaj, in June 2020, we started free online classes teaching the correct way to recite the Sanskrit shlokas of Shrimad Bhagavad Gītā. In these seventeen months up to November 2021, we now have 292,000 active participants from 117 countries who registered to learn to recite Bhagavad Gītā. To accommodate the time zones of the daily 60,000 participants from India and around the world, everyday 936 zoom online classes; each of 40 minutes duration are conducted Monday to Friday from 6:00 am to 2:00 am in 10 different languages including English, Hindi, Gujarati, Marathi, Bangla, Kannada, Malayalam, Odiya, Tamil and Telugu. Every class has a dedicated trainer, well qualified Technical Assistant, a highly organized Group Coordinator with support at backend from hundreds of volunteers. Exams are held every month but are not mandatory to progress to the learning of all 18 chapters. In October 2021 exam, 39 participants successfully passed the very difficult test of memorizing the entire18 Chapters of Bhagavad Gītā and are now a part of the very elite group of Gītāvrati.

Every weekend on Saturday and Sunday, Geeta Vivechan Sessions are taught by eminent Geeta Viśārada and Geeta Vidushi scholars explaining with deep insight the profound meaning of the individual shlokas. These Vivechan Satras are extremely popular and help the listener to learn and understand the message that Paramatma Shri Krishna Bhagwan gave to Arjuna.

We are pleased to share our updated user friendly website https://learngeeta.com to serve the needs of the ever growing base of Geeta Sadhaks worldwide. All information that you may require is organized in an easy-to-find manner. Website Developed by Shri Harshvardhan Malpani (Son of Dr. Sanjay Ji Malpani - The National President of Geeta Pariwar) and his professional team adept at delivering their magnum opus in a jiff, the website is an amalgamation of cutting edge technology with picturesque visualization and high utility content.

If you navigate to “Learngeeta” tab at top, you will find options to either preview or download Basic Sanskrit Grammar, Reference Books as well as PDFs of all the 18 Chapters. Similarly, at the “Videos” tab, you will find video anupathan of the Chapters in the sweet voice of Respected Smt. Suvarna Kaki Ji and at the “Audios” tab, you can find audios of the Chapters. The texts, audios and videos will be immensely helpful in practicing the correct recitation of the Sanskrit shlokas.

ceremonies, Geeta Grammar classes as well as find information on the upcoming Geeta Pariwar events. You can also find recordings of Geeta Chintanika sessions held every Ekadashi in which 3 Adhyay's are recited by Geeta Vratis. Geeta Maitri, a bi-monthly newsletter that was recently launched will also be made available on this website. Our online portal https://learngeeta.com/help is the easiest way to manage your transition to the next class level, to change language, class time or download exam e-certificate. A dedicated customer service center with Toll-free Helpline number is also available to help participants or answer their questions.

This vast scale of operation in such a short frame of time has been made possible by the untiring efforts of the 4,000 dedicated volunteers and teachers who have offered their services. Come, let's be A Gita Sevi in this noble cause and offer our service to Paramatma Shree Krishna.

Learn Gita, Teach Gita and Live Gita

Be a Geeta Pracharak

REG.LEARNGEETA.COM

Learn the pure pronunciation of Bhagavad-Gītā intonated by God in His voice in a simple and easy way and inspire others to become a doer of what God loves to do.

पृष्ठभूमि

रामकाज कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम

ऑनलाइन गीता संथा वर्गों का आरम्भ



बात 2020 के मार्च-अप्रैल की है जब कोरोना के अचानक आ जाने से सब कुछ एकदम थम सा गया था। गीता परिवार का कार्य भी, जो विगत 34 वर्षों से ऑफलाइन चल रहा था, उसका पहिया भी इस आपदा में मद्धम पड़ गया था। किन्तु पूज्य स्वामी जी में श्रद्धाभाव रखने वाले गीता परिवार के अत्यंत उत्साही कार्यकर्ता कैसे रुक सकते थे। उनके मन में तो रह रह कर एक ही बात आ रही थी कि "रामकाज कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम"। इस विचार से ओतप्रोत कार्यकर्ताओं ने तत्काल ही इस विषय पर चिंतन-मनन किया। जैसे ही कुछ कुछ गतिशीलता दिखी, इसे दैवीय संकेत मान गीता परिवार की दृष्टि ऑनलाइन प्रशिक्षण माध्यम की ओर गई। बस फिर क्या था, गीता परिवार की युवा कार्यकर्ता लखनऊ की गीताव्रती-गीता प्रवीण ज्योति शुक्ला दीदी के निर्देशन में चल रही ऑफलाइन गीता कक्षाओं को संस्कृताचार्या श्रीमती पूनम मिश्रा जी के निर्देशन में ऑनलाइन प्रशिक्षण में परिवर्तित करने का विचार का उद्गम आ. आशू भैया के मार्गदर्शन में आरम्भ हुआ। आरम्भ में 20-25 साधकों के साथ एक ऑनलाइन ज़ूम कक्षा एक व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से प्रयोग रूप में आरम्भ की गयी। फिर शीघ्र ही ऐसी 2-3 कक्षायें और आरम्भ की गयीं।

ऑनलाइन गीता कक्षाओं का प्रयोग व पद्धति देखने हेतु गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी जी भी पधारे व इनका नियमन और लाभ देखकर वह इतने अभिभूत हो गए कि तुरंत ही उन्होंने आशू भैया के साथ मंत्रणा करके इसको विस्तारित कर एक भव्य प्रोजेक्ट के रूप में रूपरेखा बनाने को कहा।

इन कक्षाओं को सैकड़ों, हज़ारों गीताप्रेमियों तक पहुँचाने हेतु एक त्वरित योजना का निर्माण हुआ, जिसमें उत्तम प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा संस्कृत की शुद्ध वैदिक उच्चारण पद्धति जिसमें अनुस्वार, आघात आदि के नियमों का भी समावेश हो ऐसी एक विशिष्ट पद्धति विकसित करने हेतु गीता परिवार के मनस्वी तत्परता से लग गये। सामान्य व्यक्ति को शुद्ध उच्चारण की सुलभता, उनकी भाषा में, उनके समय पर वह भी पूर्णत: नि:शुल्क यह अद्भुत कल्पना थी।

आरम्भ में मात्र 500 साधकों का आँकड़ा मन में लेकर पहला ऑनलाइन प्रशिक्षण प्लेटफार्म लॉन्च किया गया। परन्तु भगवद्कृपा से मात्र 24 घंटे में ही, फेसबुक एवं व्हाट्सएप्प पर सूचना देने मात्र से 2000 से अधिक गीताप्रेमियों के आवेदन प्राप्त हो गये और फॉर्म को तत्काल बंद करना पड़ा। 2000 साधकों को सुगमता से ऑनलाइन गीता सिखाने हेतु एक विस्तृत योजना का क्रियान्वयन आरम्भ हुआ। गीता का शुद्ध उच्चारण सिखाने हेतु प्रशिक्षक एवं तकनीकी सहायता हेतु तकनीकी सहायकों का चयन कर, उन्हें आवश्यक ट्रेनिंग दी गयी व तत्काल इस हेतु आवश्यक साहित्य

कि– कक्षा के बाद भेजने हेतु प्रत्येक श्लोक की ऑडियो, नित्य अभ्यास हेतु अनुपठन विडियो, अनुस्वार, विसर्ग, अघात पद्धति से अभ्यास हेतु पीडीएफ आदि के निर्माण का कार्य आरम्भ किया गया। धीरे धीरे जहाँ जैसी आवश्यकता लगी नये सत्रों एवं नई प्रक्रियाओं का निर्माण हुआ । गीता कक्षाओं में सिखाई जाने वाली शुद्ध संस्कृत पद्धति को प्रशिक्षार्थियों के लिए सुलभ बनाने हेतु श्री नारायण जी शेटे द्वारा "विशेष व्याकरण वर्ग" का एवं परीक्षाओं में उत्तम प्रदर्शन हेतु सुश्री ज्योति जी शुक्ला के निर्देशन में सभी अतिरिक्त आवृत्ति कक्षाओं का आयोजन होने लगा ।

"गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें " इस सूत्र को लेकर इस चार धाम यात्रा में निकले सभी लोगों हेतु पढ़ने, पढ़ाने का कार्य तो आरंभ हो चुका था अब समय था इसे जीवन में लाया जाये इस हेतु से विवेचन सत्रों का आरंभ हुआ। हिंदी अंग्रेजी भाषाओं समेत वर्तमान में आ. संजय भैया, आ. आशू भैया, आ. वर्णेकर काकाजी, आ. वंदना काकी जी, आ. प्रणव जी पटवारी, सुश्री कविता वर्मा जी, सुश्री रूपल शुक्ला जी द्वारा गीता विवेचन किये जा रहे हैं।

कार्य की तीव्र गति को देखते हुये बहुत सारा कार्य जो बिना सॉफ्टवेर की सहायता के बहुत संसाधन लगाने पर हो पा रहा था उस हेतु सॉफ्टवेर निर्माण का कार्य भी आरम्भ हुआ और श्री प्रदीप राठी जी के निर्देशन एवं श्री कवडे सर के अथक प्रयासों से वह अक्टूबर तक इतना तैयार हो गया कि अक्टूबर स्तर 1 का कार्यान्वयन सॉफ्टवेर से ही हुआ। सॉफ्टवेर की टीम रुकी नहीं और एक के बाद एक सभी प्रक्रियाओं को ऑटोमेट करने के लिए सिस्टम का निर्माण होता गया इसीक्रम में गीता साधकों की सभी समस्याओं के समाधान हेतु हेल्प पोर्टल सामने आया। परीक्षा प्रक्रिया को आसान करने हेतु आ. हेमंत भैया द्वारा सिस्टम निर्मित किया गया । अभी एप्प निर्माण के कार्य में भी विवेक सिन्हा जी, श्री गगन जी होलानी, मीनाक्षी जी शाह, आशीष जी, सहित पूरी टीम तीव्रता से इसमें लगी हुई है।

23 जून, 2020 को 2000 गीता प्रेमियों का पहला ऑनलाइन गीता वर्ग आरम्भ हुआ। इसके उद्घाटन समारोह में गीता परिवार की सभी शाखाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। तत्पश्चात् यह कार्य अपना विराट रूप लेता गया । जुलाई माह में सभी जनों को गीता के शुद्ध उच्चारण के साथ ही अर्थ के अवगमन हेतु आ. संजय भैया व आ. आशू भैया के द्वारा सप्ताह में एक दिन विवेचन सत्र होने आरम्भ हो गये। सितम्बर से हिंदी, अंग्रेजी के साथ ही मराठी भाषा में भी कक्षा आरम्भ की गयी । रात्रि 10 बजे का समय सत्र जुड़ गया। अब कुल 10 समय सत्रों एवं 3 भाषाओं में गीता सिखाई जाने लगी । इसके अतिरिक्त देशों के जुड़ने की संख्या भी बढ़ती जा रही थी अतः NRIs गीता प्रेमियों हेतु अलग से कुछ कक्षाएं आवंटित की जाने लगी । गीता कक्षाओं में से ही लोग आगे आये कि हमारी अन्य भाषाओं में भी कक्षाएं आरंभ करें, साहित्य तैयार करवाने का बीड़ा वह उठाने को तैयार हैं। इसके फलस्वरूप ओड़िया, गुजराती, तेलुगु, बंगला, तमिल इन भाषाओं के समावेश के साथ ही अब कुल 8 भाषाओं में कक्षाएं उपलब्ध थी। अक्टूबर माह में गीता सीखने हेतु 36 देशों से साधकों की संख्या 2000 से 12000 तक पहुँच चुकी थी । जनवरी तक 50 देशों से 20 हज़ार एवं जुलाई में 1 वर्ष पूर्ण करते करते यह संख्या ४० हज़ार तक पहुँच चुकी थी। पूरे देश में फैली गीता परिवार की शाखायें, कोरोना की आपदा को सुअवसर में परिवर्तित करने हेतु एक मंच पर आकर खड़ी हो गयीं। तेलुगु भाषा का रागिनी पोलीसेट्टि जी, तमिल का गोपालरत्नम जी, ओडिया का प्रमोद बारीक़ जी, मलयालम का विवेक विजयन जी, बांग्ला का आशा साबू जी एवं कविता तापडिया जी, गुजराती में हीरल पटेल, कन्नड़ का संतोष सोमानी जी, सुरेश कुम्भर जी, श्रीवत्स जोशी जी सहित उनकी पूरी टीम ने मुख्य रूप से कार्यभार संभाला ।

लगभग एक वर्ष की यात्रा पूर्ण करते हुए 10 भाषाओं में 13 समय सत्रों में 117 देशों से दो लाख सत्तर हजार से भी अधिक गीता साधकों को 10 भाषाओं में 13 समय विकल्पों के साथ दृश्य-श्रव्य माध्यमों से गीतामृत का रसपान कराने का कीर्तिमान गीता परिवार स्थापित कर चुका है।

इस यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में अक्टूबर 2020 में 'गोल्डन बुक ऑफ द वर्ल्ड रिकॉर्ड' में गीता परिवार की ऑनलाइन संथा का नाम विश्व के सर्वाधिक गीता प्रतिभागियों के पंजीकरण हेतु अंकित हुआ। तब से इस संख्या में

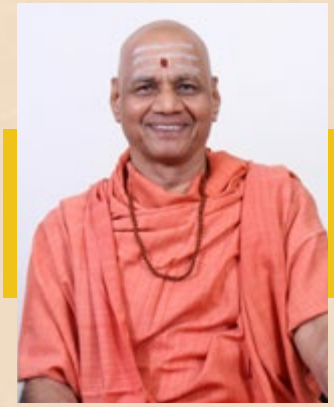
सतत् वृद्धि हो रही | इस विराट यात्रा को प. पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज, संस्थापक गीता परिवार का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन व राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य संतों के आशीर्वाद प्रत्येक वर्ग के उद्घाटन समारोह में प्राप्त हो रहे हैं। अभी तक प. पू. स्वामी रामदेव जी महाराज, प. पू. स्वामी अवधेशानंद जी महाराज, प. पू. स्वामी शरणानन्द जी महाराज, प. पू. स्वामी राजेन्द्रदास जी महाराज, प. पू. ब्रह्मविहारी जी महाराज, प. पू. रमेश भाई ओझा, प. पू. सद्गुरु जी, प. पू. रविशंकर जी, प. पू. सुगुणेंद्र तीर्थ जी महाराज आदि अनेक संतों के आशीर्वाद प्राप्त हुये । 5157वीं गीता जयंती के पावन अवसर पर देश/विदेश के 70 देशों के 50,000 साधकों के द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता के 12वें अध्याय के 1 लाख पाठ के साथ, गीता परिवार द्वारा पहली बार एक दिव्य वातावरण का निर्माण कर कोरोना काल में समूचे विश्व को भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त किया।

Learngeeta गीता संथा वर्ग के प्रमुख आकर्षण बिंदु - https://youtu.be/CURS9MQ3w98 –

1. **हिंदी व अंग्रेजी सहित भारत की 10 प्रमुख भाषाओं में प्रशिक्षण**
2. **प्रातः 6 से रात्रि 2 बजे तक 13 समय सत्रों का चुनाव**
3. **उत्तम प्रशिक्षकों के सान्निध्य में सप्ताह में 5 दिन 40 मिनट की लाइव ऑनलाइन ज़ूम कक्षा**
4. **चार स्तरों में सम्पूर्ण 18 अध्यायों का प्रशिक्षण**

   (L1- दो अध्याय, L2- चार अध्याय, L3- छः अध्याय, L4- छः अध्याय)
5. **गीता कंठस्थीकरण की परीक्षायें एवं उत्तीर्ण करने पर अंकपत्र एवं प्रशस्तिपत्र**
6. **शीघ्रातिशीघ्र प्रशिक्षार्थियों की सभी शंकाओं का समाधान**
7. **कक्षा के बाद WhatsApp ग्रुप में प्रशिक्षार्थियों द्वारा भेजी गयी ऑडियो का ट्रेनर द्वारा भूलसुधार**
8. **Learngeeta.com पर पंजीकरण व अन्य साहित्य की उपलब्धता**
9. **निःशुल्क ऑडियो/वीडियो/पीडीएफ आदि अनुस्वार, विसर्ग, आघात आदि के नियमों के साथ शुद्ध साहित्य की उपलब्धता**
10. **हिंदी व अंग्रेजी भाषा में गीता समझने हेतु साप्ताहिक अर्थ विवेचन सत्र**
11. **समस्याओं हेतु त्वरित टोलफ्री हेल्पलाइन, सेल्फ हेल्प पोर्टल, ऑनलाइन चैट व ईमेल सपोर्ट आदि की उपलब्धता**

शुभारम्भ



निराशा या अवसाद से उबारने का कार्य करती है गीता!
-परमपूज्य स्वामी जी

एक ऐसा समय जब पूरे विश्व में त्राहि त्राहि मची थी, सभी लोग अपने अपने घरों में बैठे थे, कितने ही लोग डिप्रेशन, स्ट्रेस आदि से ग्रसित हो रहे थे। उस समय अंधकारमय विश्व को प्रकाश प्रदान करने "तमसो मा ज्योतिर्गमय" इस सिद्धांत को लेकर गीता परिवार द्वारा वर्षों से चल रही श्रीमद्भगवद्गीता की ऑफलाइन कक्षाओं के अनुभव से शुभारम्भ हुआ "ऑनलाइन गीता संथा वर्ग" का अनौपचारिक रूप से प्रयोग रूप में 2-3 ऑनलाइन कक्षायें मार्च 2020 में की गयीं। प्रयोग कक्षाओं की सफल संचलन प्रणाली एवं इसकी सार्थकता का विचारकर गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. डॉ. संजय जी मालपाणी ने आशू भैया को इसे विश्व स्तर पर कार्यान्वित करने हेतु एक विशाल योजना बनाने का निर्देश दिया।

किसी भी कार्य के शुभारंभ की उत्सुकता होना स्वाभाविक है। गीता संथा वर्ग के शुभारंभ के ऐतिहासिक क्षण भी ऐसे ही थे। आषाढ़ शुक्ल द्वितीया, मंगलवार 23 जून 2020 को पहला आधिकारिक अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन गीता संथा वर्ग गीता परिवार द्वारा विश्वस्तर पर आरम्भ करने का निश्चय हुआ। प्रवेश फॉर्म प्रकाशित करने के 24 घंटे के भीतर ही 7 देशों से 2000 से भी अधिक गीता प्रेमियों द्वारा फॉर्म भर दिये गये जिनमें भारत के सभी 29 राज्यों एवं 8 केंद्र शासित प्रदेशों से लोग सम्मिलित थे। इतनी शीघ्रता से इतनी संख्या में फॉर्म भर जाने से फॉर्म बंद करना पड़ा। गीता सीखने का इतना अधिक उत्साह देख सभी हतप्रभ थे, सम्भवत: अब समय आ गया था जब लोग पुनः अपने मूल को जानने की ओर लौटना चाहते थे। गीता के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर पाठ सीखना है, वह भी घर बैठे, वह भी पूर्णत: निशुल्क ! यह विचार नि:संदेह सबको उत्सुक करने वाला था। पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं इसी को चरितार्थ करते हुए गीता परिवार के व्हाट्सएप ग्रुप में 19 जून 2020 को आ. आशू भैया ने लिखा – "मुझे तो यह गीता परिवार के अगले पड़ाव का आरम्भ यहाँ से दिखायी दे रहा है जिसमें पूज्य स्वामीजी की भविष्यवाणी कि 50वें वर्ष में गीता परिवार 'पूरे विश्व में एक गीता का कार्य करने वाला सर्वाधिक प्रमाणिक व मान्य संगठन होगा' सत्य होती दिख रही है।"
इन कक्षाओं को अधिक से अधिक प्रभावशाली ढंग से सम्पादित करने के लिये एक बड़ी अनुभवी व विद्वत टीम पूरे मनोयोग से कार्य में लग गयी। हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में 50-50 प्रशिक्षार्थियों की संख्या में 45 बैच बनाये गये जिसमें एक मुख्य प्रशिक्षक, एक सहायक प्रशिक्षक और एक टेक्निकल असिस्टेंट, साथ ही 10 बैच के लिये एक एक ग्रूप कोऑर्डिनेटर होंगे ऐसा निश्चित हुआ।

अब विषय था इतने कार्यकर्ताओं का चयन होगा किस प्रकार से, किन्तु इस महायज्ञ में आहुति डालने हेतु गीता परिवार के सभी केन्द्रों से कार्यकर्ता उत्साहपूर्वक दायित्व सँभालने हेतु आगे आयें। जिसमें उपाध्यक्ष श्री श्रीहरिनारायण व्यास जी, आ. प्रमिला जी महेश्वरी, आ. श्रीमती निर्मला जी मारू, आ. श्रीनिवास वर्णेकर जी, आ. श्री अविनाश जी संगमनेरकर, आ. श्रीमती सरिता रानी जी, आ. श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता जी सहित गीता परिवार के सभी मुख्य कार्यकारिणी सदस्यों का प्रमुख योगदान रहा। इस प्रकार सभी बैच पूर्णत: गीता परिवार की पद्धति से चलें इसके लिए प्रशिक्षण वर्ग गीता साधिका प्रमुख प्रशिक्षिका आदरणीया सुवर्णा मालपाणी जी के मार्गदर्शन में हुआ।

23 जून सायं 7 बजे वह समय आ चुका था जिसकी तैयारियों में कई आँखें कई दिनों से सोई नहीं थीं। उद्घाटन समारोह में सम्मिलित होने हेतु 7 देशों से लगभग 2000 प्रशिक्षार्थी अपने फोन, लैपटॉप के माध्यम से, ज़ूम एवं फेसबुक पर इन ऐतिहासिक क्षणों के, विश्व में आज तक के सबसे बड़े ऑनलाइन गीता संथा वर्ग के साक्षी हो रहे थे - https://www.facebook.com/geetaparivar/videos/573431133370934 कार्यक्रम योगेश्वर श्रीकृष्ण की प्रार्थना से आरंभ हुआ। गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशू जी गोयल ने सभी का स्वागत, अभिनंदन किया एवं गीता परिवार के दक्षिणांचल प्रमुख एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरि नारायण जी व्यास ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया।

सर्वप्रथम आ. आशू भैया ने इस कार्य हेतु पूर्व व पूर्ण नियोजन की संक्षिप्त जानकारी देते हुए शुद्ध उच्चारण का गहन महत्व बताया। Learngeeta में प्रथम स्तर (L-1) पर इस पर विशेष ध्यान देते हुए इसका अभ्यास कराया जायेगा व आगे के स्तरों में अध्याय सीखने के साथ कंठस्थ करने के प्रकल्प भी होंगे। विभिन्न स्तरों पर विशिष्ट कंठस्थीकरण परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने पर अंकपत्र एवं प्रमाणपत्र प्रदान किये जाने की भी जानकारी दी। यह सब कुछ बहुत ही सहज व सरल रूप में होगा जो सभी आयु वर्गों के सभी आम से आम जनमानस को पूर्णत: नि:शुल्क उपलब्ध होगा। गीता संस्कृत में है, हम कभी पढ़ सकेंगे क्या? ऐसा सोचने वाले भी इसे कंठस्थ कर सकेंगे, सभी में ऐसे विश्वास का संचार उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी से किया। आशू भैया ने कहा कि इस कार्य में प्रत्येक कार्यकर्ता सेवाभाव के साथ ही "साधनाभाव" से भी जुड़ें हैं; यहाँ "अर्थभाव" तो है ही नहीं, कीर्ति आदि की भी कामना नहीं है। तत्पश्चात् इस कार्य की इसी विशिष्टता को रेखांकित करते हुए आगे के मार्गदर्शन के लिए उन्होंने गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. डॉ. संजय मालपाणी को आमंत्रित कर अपना उद्बोधन पूर्ण किया।

तत्पश्चात् गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व अनेक दिव्य संस्थाओं के गरिमामयी पद पर विभूषित आ. डॉ. संजय जी मालपाणी ने सभी का अभिवादन कर अपने उद्बोधन के पहले आ.सुवर्णा काकी जी से आग्रह किया कि वे बारहवें अध्याय के प्रथम दो श्लोक पढ़ें। आ. सुवर्णा काकी जी जिन्होंने अपने पूरे जीवन में लाखों बालक/युवा/वृद्धों को को गीता की संथा देकर शुद्ध उच्चारण सिखाया है, उनके मधुर स्वर, शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण के साथ श्लोकों को सुनाकर सभी शिक्षार्थी आनंदित व उत्साहित हुए और आश्वस्त हुए कि अब हम ऐसा सीखेंगे और बोलेंगे भी।

तत्पश्चात् गीताव्रती-गीता विशारद आ.संजय भैया ने प.पू.स्वामीजी श्री गोविन्द देव गिरि जी महाराज के सान्निध्य में अपने बाल्यकाल के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि जैसे श्रीकृष्ण अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर देते थे, वैसे ही स्वामीजी मेरे कभी न समाप्त होने वाले प्रश्नो का सहज ही उत्तर देकर मुझे बचपन में शांत करते थे। स्वामीजी योगी व ज्ञानी हैं और जैसे योगी ज्ञान को अपने में ही समेटकर नहीं रखते वरन् उसे बाँटते हैं, स्वामीजी सदा वैसा ही करते हैं। उनकी ही प्रेरणा व छत्रछाया में 50 वर्ष की आयु में उन्होंने सम्पूर्ण गीता कंठस्थ की उसके प्रेरक अनुभव बताते हुए उन्होंने सबको सन्देश दिया कि "अपने द्वारा लिया हुआ संकल्प अपने इष्ट मित्रों को अवश्य बतायें"। ऐसा करने से हम दूसरों का उत्साहवर्धन करते हैं, उन्हें प्रेरणा देते हैं और हमारा संकल्प और दृढ़ होता हो जाता है, हम उसे पूरा करने की ठान लेते हैं। इसीलिये इस संथा वर्ग में सब साथ-साथ एक दूसरे को प्रोत्साहित करेंगे। अध्ययन तो अकेले कर सकते हैं, पर निश्चित समय में सीखना, कंठस्थ करना और अगले स्तर पर जाना यह सब के साथ ही सहज होगा। गीता को अपना मित्र बनाएं, वह सबका भला चाहती है, भलाई का मार्ग दिखाती है। इसके उच्चारण के साथ हमें अपने आचरण को भी ठीक करना होगा। स्वयं भगवान ने ऐसा कहा है कि "मनुष्य आप ही स्वयं अपना बंधु है और आप ही अपना शत्रु" अतः आप अपने मित्र बन कर गीता की सीख को अपनाये। अंत में इस पुण्य कार्य हेतु उन्होंने सभी का अभिनंदन कर शुभेच्छा व्यक्त की। अब समय था प.पू.स्वामीजी के आशीर्वचनों का। विशेष बात यह थी कि स्वामी जी ने यह आशीर्वचन अपने अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रम में समय निकालकर एयरपोर्ट से भेजे! क्यूंकि पूज्य स्वामीजी उस समय श्रीराममंदिर निर्माण की एक महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने हेतु प्रवास पर थे।प.पू. स्वामीजी ने सभी का अभिनंदन कर कहा, "यह तो ऐसा है कि भगवान जगन्नाथ स्वयं सब के हृदय में विराजमान होकर अपनी रथयात्रा पर निकले हैं। आप भगवद्गीता के अर्जुन के साथ बैठकर, श्रीकृष्ण को अपना सारथि बनाकर अपनी विजय यात्रा का आरंभ करने जा रहे हैं।



यह अद्भुत ग्रंथ है। 5000 वर्ष पूर्व एक महान योद्धा द्वारा दूसरे योद्धा को दिया यह उपदेश आज भी और सर्वकाल समयोचित रहेगा। यह हमारे जीवन की छोटी "गाइड" है, जिसमें हमें जीवन को सफल बनाने के सूत्र मिलेंगे। केवल 700 श्लोकों की गागर में भगवान ने सारे उपदेशों का सागर भर दिया है। गीता आपके जीवन का पथ-प्रदर्शन करेगी। भगवद्गीता ने भारत के ही नहीं, विदेश की अनेक महान हस्तियों का भी मार्गदर्शन किया है। जीवन को आलोकित करने वाला दिव्य प्रकाश है यह ग्रन्थ।

आप अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहें, न केवल आगे बढ़ें अपितु सफल हों। किंतु अकेले नहीं, अनेक लोगों को साथ लेकर चलें। सभी को जीवन की धन्यता का अनुभव करा सकें। यह सारे सूत्र लेकर गीता परिवार ने यह अनुपम कार्य आरम्भ किया है। भगवद्गीता कैसे बोली जाये, यह ऑनलाइन पढ़ाने की व्यवस्था करने का महती कार्य गीता परिवार ने किया है। आम लोगों के कल्याण के लिये, गीता परिवार के कार्यकर्ता दिन-रात अथक परिश्रम कर रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि इसका लाभ उत्साह के साथ लें। भगवद्गीता को अपने चिंतन का अंग बनायें। जहाँ कहीं आपके मन में कोई शंका होगी, आप जब किंकर्तव्यविमूढ़ हों, निराशा की गर्त में डूबे हों या अवसाद से घिरे हों, ऐसे में गीता संजीवनी का काम करती है।

अन्य देशों में सुदूर बैठे गीताप्रेमी भक्त इस कार्यक्रम का लाभ ले सकें, इसीलिए गीता परिवार यह दिव्य गीता सीखने के कार्यक्रम का शुभारम्भ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उच्चतम मानकों के साथ कर रहा है। यह स्वर्णिम ऐतिहासिक क्षण है, जिस प्रकार भगवान जगन्नाथ का रथ 5000 वर्षों से अनवरत चलता आ रहा है, उसी प्रकार हमारे जीवन का रथ निर्बाध रूप से निरंतर आगे बढ़े। विश्व में भारतीय संस्कृति का डिमडिम अधिकाधिक निनादित हो और भारत माता सभी के लिये आदरणीय बने, यही इस कार्य की सार्थकता है। आपका जीवन सफल हो, परिवार मंगलमयता का अनुभव करे और आप एक उत्तम नागरिक और सार्थक जीवन जीने वाले योग्य व्यक्ति बनकर लोगों की दृष्टि में महानतम बनें यह बल व विवेक आपको प्राप्त हो, ऐसी प्रार्थना भगवान से करता हूँ।"

प.पू.स्वामीजी का अनमोल मार्गदर्शन व शुभेच्छापूर्ण आशीर्वाद गीता परिवार की इस उड़ान को अनंत उंचाई पर ले जायेगा, उन्नत शिखर पर ले जायेगा, यह तो होगा ही—यह विश्वास और दृढ़ हुआ। स्वामीजी का विमानतल से आशीर्वाद प्रदानकर गंतव्य के लिये उड़ान भरना इसी बात का प्रतीक लगा।

अंत में गीता परिवार के उपाध्यक्ष व पश्चिमांचल प्रभारी आ. श्री गोविंदजी माहेश्वरी ने सहृदय सभी सहयोगियों, प्रतिभागियों, कार्यकर्ताओं व गीता परिवार के पदाधिकारियों को कृतज्ञता ज्ञापित कर सभी का अभिनन्दन किया।

योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की कृपा, भगवद्गीता से मैत्री और प.पू स्वामी जी के आशीर्वाद इस प्रस्थानत्रयी के साथ गीता परिवार की अखंड यात्रा में यह संकल्प एक अद्भुत उदाहरण बन सभी का जीवन सार्थक करेगा, इस विश्वास के साथ सभी ने इस शुभारम्भ कार्यक्रम प्रवास में सहयात्री बनकर गौरव का अनुभव किया।

गीता संथा वर्ग – चारधाम यात्रा

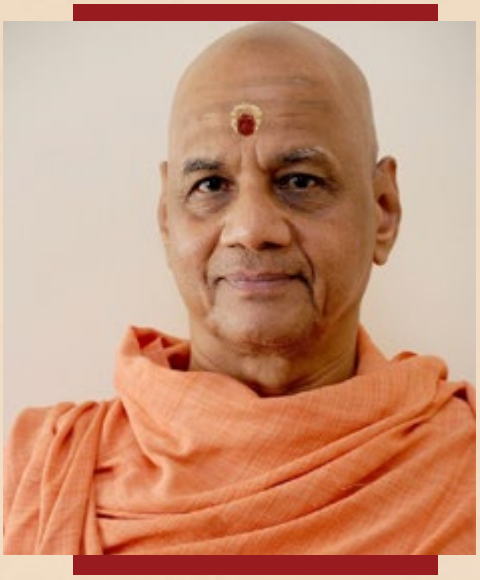
गीता संथा वर्ग स्तर – 1 के विभिन्न वर्गों के उद्घाटन समारोह

ऑनलाइन गीता संथा के इस मकरंद ने न केवल भारत किन्तु पूरे विश्व के गीता साधक रूप भंवरों को अपनी ओर आकर्षित कर एक बिंदु पर लाकर खड़ा कर दिया। प्रत्येक वर्ष इन साधकों की संख्या शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की भांति बढ़ रही है, जुलाई 2021 तक हमारे 11 स्तर-1(Level-1) के बैच आरंभ हुए हैं जिनमे लगभग 2 लाख साधक जुड़ चुके हैं। इन सत्रों में प. पू. स्वामीजी के साथ देश के एक बड़ें संत भी उपस्थित रहते हैं जिनके आशीर्वचनों से ही गीता साधक अपनी यात्रा आरंभ करते हैं एवं क्रमश: स्तर(Level)-1, 2, 3, 4 में पहुँचकर जीवन को गीतामय बनाने के मार्ग पर प्रवृत्त होते हैं।

- **प्रथम वर्ग** (1st batch) - 23 जून, 2020 -
https://fb.watch/9qoI-ZAxnP
वर्ग साधक संख्या - 2000

- **द्वितीय वर्ग** (2nd batch) - 21 जुलाई, 2020 -
https://fb.watch/9qoNfYqpW2
वर्ग साधक संख्या - 4000

- **तृतीय वर्ग** (3rd batch)- 1 सितंबर, 2020 -
https://fb.watch/9qoSg2vcl5
पावन उपस्थिति - प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज
वर्ग साधक संख्या – 5000



- **चतुर्थ वर्ग** (4th batch)- 4 अक्टूबर, 2020 -
https://youtu.be/aTLM5JGhL_s
पावन उपस्थिति - प.पू. स्वामी श्री रामदेवजी महाराज
वर्ग साधक संख्या - 10,000



- **पंचम वर्ग** (5th batch)- 3 नवंबर, 2020 -
https://youtu.be/IGHm0UGaEX8
पावन उपस्थिति - कार्ष्णि पीठाधीश्वर प.पू. श्री गुरुशरणानंद जी महाराज
वर्ग साधक संख्या – 13,000



- **षष्ठम वर्ग** (6th batch)- 15 दिसंबर, 2020 -
https://youtu.be/5hp53XIpiO0
पावन उपस्थिति - प.पू. भाई श्री रमेश भाई ओझा
वर्ग साधक संख्या – 20,000



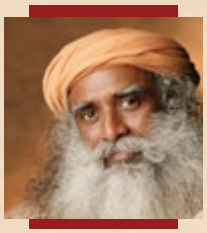
- **सप्तम वर्ग** (7th batch)- 18 जनवरी, 2021 -
https://youtu.be/ntIRcrbgzSw
पावन उपस्थिति - प.पू. जगद्गुरु श्री राजेन्द्र देवाचार्यजी महाराज
वर्ग साधक संख्या – 20,000



- **अष्टम वर्ग** (8th batch)- 1 मार्च, 2021 -
https://youtu.be/uRFfJ6JePUY
पावन उपस्थिति - प.पू. ब्रह्म विहारी स्वामीजी महाराज
वर्ग साधक संख्या - 21500



- **नवम वर्ग** (9th batch) - 12 अप्रैल 2021 -
https://youtu.be/_oJo0DfOdaE
पावन उपस्थिति - प.पू. श्री सद्गुरु जी महाराज
वर्ग साधक संख्या – 22,500



- **दशम वर्ग** (10th batch)- 24 मई, 2021 -
https://youtu.be/l0LQq1LEMfk
पावन उपस्थिति - प.पू. श्री श्री रविशंकरजी महाराज
वर्ग साधक संख्या – 30,000



- **एकादश वर्ग** (11th batch) - 5 जुलाई, 2021 -
https://youtu.be/FwOSPB3AvTs
पावन उपस्थिति – गोवत्स प.पू. श्रीराधाकृष्ण जी महाराज
वर्ग साधक संख्या – 43,000



- **द्वादश वर्ग** (12th batch) - 16 अगस्त, 2021 -
https://youtu.be/AQWXcR6-8n8
पावन उपस्थिति – योगाचार्य श्री एच.आर. नागेन्द्र गुरूजी
वर्ग साधक संख्या – 40,000



- **त्रयोदश वर्ग** (13th batch) - 4 अक्टूबर, 2021 -
https://youtu.be/R1ro0WQWEik
पावन उपस्थिति – प.पू. श्री श्री सुगणेन्द्रतीर्थ स्वामीजी महाराज
वर्ग साधक संख्या – 35,000



गीता संथा वर्ग - स्तर 1 (L1) - नवम वर्ग

“शुभ संकल्प पूर्ति समारोह”

धर्मध्वज धर चल पड़े
लिए शुभ संकल्प
अनन्य पुरुषार्थ
कर सेवा निस्वार्थ
मिला पुण्य फल
1,11,111 पाकर
लक्ष्य निश्चित
पाया अत्यंत हर्ष
हुए आह्लादित

गीता परिवार के संस्थापक परम पूज्य स्वामी गोविंददेवगिरि जी महाराज की अनुमति लेकर आदरणीय डॉ संजय मालपाणी जी (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीतापरिवार) ने 1,11,111 प्रतिभागियों के रजिस्ट्रेशन के संकल्पित लक्ष्य प्राप्ति के आनंद की अपार अनुभूति का उल्लेख करते हुए उद्घाटन कार्यक्रम का शुभारंभ किया।
संजय भैया जी ने तत्पश्चात् गीतापरिवार का संक्षिप्त परिचय देते हुए कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का प्रेमपूर्वक स्वागत किया।

-कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथिगण-

• **सद्गुरू जग्गी वासुदेव जी महाराज** (संस्थापक ईशा फाउंडेशन एवं लेखक) जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व के युवाओं के मध्य भारतीय संस्कृति व सनातन मान्यताओं को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया है। सद्गुरु जी विश्व के अरबों-खरबों युवाओं के न केवल प्रेरणा स्रोत हैं वरन धरा पर उनको, उनके स्वयं के अस्तित्व व उद्देश्य से जोड़ा है।

• **महामंडलेश्वर अखिलेश्वरानन्द गिरी जी महाराज** वैदिक धर्म व संस्कृति के ज्ञान का प्रकाश लिए, प्रमुख प्रचारकों में अपना विशिष्ट नाम रखते हैं। साथ ही अनेक वैदिक धर्म ग्रन्थों जैसे गीता, शंकराचार्य भाष्य, महाभारत, रामायण इत्यादि के परमज्ञाता विद्वान संत हैं।

• **स्वामी गोविंददेवगिरि जी महाराज** जिन्होंने गीता परिवार की सन 1986 में स्थापना की। भारतीय संस्कृति के अभ्युदय एवं युवा पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण हेतु निरंतर अथक क्रियाशील हैं। स्वामीजी, वर्तमान में राम जन्मभूमि भूमि ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष भी हैं।

स्वामी स्वामी गोविंददेवगिरि जी एवं सद्गुरु जग्गी जी के मध्य हुयी मधुर ज्ञानवर्धक वार्ता के कुछ स्वर्णिम अंश
ऐसा अद्भुत सहयोग सद्भाग्य से मिलता है। जब उच्च कोटि के ज्ञानी सन्त एक जगह पर सत चर्चा करते हुए मिलते हैं। उक्त वार्ता से स्वर्णिम वातावरण निर्मित हो गया, मानो स्वयं शिव जी एवं पार्वती जी, कृष्ण लीला देखने वृंदावन पधारे हों।

स्वामी गोविंददेवगिरि जी ने सद्गुरु जग्गी जी के समक्ष गीता परिवार के ऑनलाइन गीता कक्षाओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी देते हुए बताया कि भगवान श्री कृष्ण के कमल मुख से निकली वाणी स्वयं मंत्र है। अतः गीता उच्चारण करते समय हमारी ऑनलाइन कक्षाओं में इस बात का विशेष महत्व दिया जा रहा है कि सभी प्रतिभागी शुद्ध संस्कृत उच्चारण करते हुए गीता पाठ कर सकें।

इस संदर्भ में स्वामी जी ने अति विनम्रता से करबद्ध निवेदन करते हुए सद्गुरू जी से प्रश्न किया कि शुद्ध संस्कृत उच्चारण पर अत्यधिक ध्यान दिया जाना क्या उचित है? हालांकि गीता विवेचन के माध्यम गीता ज्ञान दो भाषाओं में जन जन तक पहुंचाया जा रहा है।

कोरोना महामारी काल मे गीता परिवार द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए सद्गुरु जी ने कहा कि गीता द्वारा आपने बाह्य महामारी के साथ साथ आंतरिक मानसिक महामारी से सभी की रक्षा की है। जापान का उदाहरण देते हुए बताया कि वर्ष 2020 में करोना महामारी से भी ज्यादा जाने आत्महत्या के कारण चली गयी हैं।

आंतरिक कलह व विषाद के इस युग में गीता विश्व के प्रत्येक मानव तक पहुंचनी चाहिए। भाषा की मर्यादा या सीमा में गीता ज्ञान व इसमें निहित शक्ति को बांधना मेरी व्यक्तिगत राय में उचित नहीं है।

निसंदेह ही संस्कृत अत्यंत ही वैज्ञानिक भाषा है तथा हमें हमारी संस्कृति व भाषा पर अत्यंत गर्व है। मंत्रोच्चार लोगों को अपनी संस्कृति के प्रति आकर्षित एवं प्रेरित करने का सशक्त माध्यम है। जो संस्कृत सीखना चाहते हैं उन्हें अवश्य ही इस हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए, किन्तु आज के युग में मानव को मंत्रोच्चार से कहीं अधिक गीता ज्ञान की आवश्यकता है। आगे सद्गुरु जी कहते हैं कि विश्वरूप दर्शन भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया वह आशीर्वाद है जो गीता का अत्यंत ही महत्वपूर्ण भाग है।

कृष्ण कितनी ही ज्ञान की बातें कितने ही प्रकार से समझाने का प्रयास करते हैं किन्तु हमारे भीतर का अर्जुन सदैव ही असंतुष्ट रहता है, और बार बार नए प्रश्न खड़े करता है।

परन्तु जब भगवान श्री कृष्ण उसे अपने विश्वरूप का दर्शन देकर अर्जुन के माध्यम से प्रत्येक मानव को समझाते हैं कि तुममें भी वही क्षमता है कि तुम स्वयं ईश्वर स्वरूप हो सकते हो। यदि अपने अस्तित्व अपनी चेतना के आयामों का विस्तार कर पाओगे तो स्वयं ईश्वरत्व का अनुभव कर सकते हो।

योग का अर्थ है जोड़ना व योग का परम दिव्य स्वरूप है स्वयं भगवान श्री कृष्ण क्योंकि वह अपने शरणागत अर्जुन को चेतना के उच्चतम स्वरूप का दिव्य दर्शन कराकर गीता ज्ञान के महत्वपूर्ण भाग का प्रत्यक्ष प्रतिपादन करने में सक्षम हैं। चेतना के उच्चतम स्तर तक विकास मानवमात्र के लिए अति आवश्यक है। जीवन की अनुकूलताओं में नैतिकता साथ तो देती है किन्तु परिस्थितियां बदलने पर जब जीवन-मृत्यु का प्रश्न खड़ा हो जाता है तब हमारी चैतन्यता ही हमारी रक्षा करती है।

जब आप online माध्यम से 10 की जगह 1000 लोगों तक पहुंच पा रहे हैं तब तो मैं चाहूँगा कि गीता संदेश के प्रचार प्रसार में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करके विश्व की अन्य भाषाओं में अनुवाद कर के, गीता जी के सन्देश व चेतना के सार्वभौमिक सर्वोच्च पहलुओं को विश्व के अरबों लोगों तक पहुंचाया जाना चाहिए।
स्वामी जी के प्रश्न का उत्तर देते हुए सद्गुरुजी कहते हैं कि भगवान श्री कृष्ण का जीवन ही आज विश्व के सभी युवाओं हेतु गीता का महत्वपूर्ण संदेश है।

महाभारत में हम पाते हैं कि, जहां सभी पात्र अपने घोर कर्मों का फल पाते हैं, वहीं अनेक कल्पनातीत कठिनाईयों का सामना करते हुए भी तथा सूक्ष्म से विशाल कार्यों तक सभी मे संलिप्त रहने के पश्चात भी, कृष्ण सदा मुस्कुराते हुए निर्लिप्त रहते हैं।जीवन की नश्वरता को ध्यान रखते हुए बड़े से बड़े कठिन कार्यों को सरलतापूर्वक करना चाहिए। बस सभी कर्मों को करते हुए कर्मबन्धनों से मुक्त रहना व मुस्कुराते रहना ही जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण सन्देश हमे कृष्ण जीवन से सीखना चाहिए।

“Involved but not Entangled”

सद्गुरु जी के जीवन दर्शन की प्रशंसा करते हुए स्वामी जी कहते हैं कि सद्गुरुजी का जीवन ही उनके द्वारा कहे गए शब्दों का सटीक उदाहरण है। तमिलनाडु में प्राचीन हिन्दू मंदिरों के स्वतंत्रता व संरक्षण हेतु कार्यों की प्रशंसा करते हुए स्वामी जी ने सहयोग का पूर्ण आश्वासन देते हुए आग्रह किया कि यह अभियान पूरे भारतवर्ष में चलाया जाना चाहिए।
भारतीय संस्कृति की मुख्य आधार शिला मंदिरों की चर्चा करते हुए सद्गुरुजी बताते हैं कि हमें मंदिर केवल पूजा, प्रार्थना या याचना हेतु नहीं जाना चाहिए। हमें ईश्वरमूर्ति का दर्शन करते हुए, उसकी दिव्यता को हृदय में आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। यही हमारी सनातन संस्कृति भी कहती है।

इतिहास के कई पन्नों में हम पढ़ पाते हैं कि किस तरह से हमारी सनातन संस्कृति को नुकसान पहुंचा है। आजादी के 75 वर्षों बाद अब समय आ चुका है कि हम सभी को आपसी मतभेद को मान्यता व आदर देते हुए एक लक्ष्य, एकरूपता के साथ एक मंच पर आना चाहिए। अनेकता में एकता ही हमारी पहचान है और यही गीता भी हमें सिखाती है।

भारतीय संस्कृति ही विश्व की एकमात्र संस्कृति है जो हमें पूर्णता व स्वतंत्रता प्रदान करती है। सत्य व अनुभव को किताबी ज्ञान से भी अधिक महत्व दिया गया है। तभी तो हम अर्जुन की तरह ईश्वर से भी अनेक प्रश्न पूछ सकते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता परिवार द्वारा किया जा रहा कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण कदम व सराहनीय है। यह कार्य यहीं नहीं रुकना चाहिए बल्कि गीता का संदेश एकरूपता व समदर्शिता के साथ हमारे युवा पीढ़ी तक संचरित किया जाना चाहिए।

अब यह हमारी यह विशेष जिम्मेदारी बन जाती है कि आने वाले 25 वर्षों में हमे अपनी सनातन संस्कृति के विस्तार व संरक्षण हेतु बहुत कार्य करना है। अन्यथा हमारी युवा पीढ़ी का बहुत बड़ा नुकसान होगा व पुनरुत्थान हेतु बहुत विलंब हो जाएगा।

“Geeta is not a song, who someone sings.
But it’s a song which our soul sings.”
“My Body and your body may sing a different song
My Mind and your Mind may sing a different song
But my Soul and your soul will sing a same song.”

इस प्रकार कृष्ण को परम योगी बताते हुए सद्गुरुजी ने अपनी वार्ता को समाप्त किया। स्वामी गोविंददेवगिरि जी ने उनके मार्गदर्शन व आशीर्वाद की भविष्य में भी आवश्यकता बताते हुए सद्गुरुजी के चरणों मे प्रणाम अर्पित करते हुए उनकी गरिमामयी उपस्थिति हेतु बहुत बहुत धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वामी गोविंददेवगिरि जी के आशीर्वचन - आज का बड़ा कार्य कालान्तर में छोटा लगने लगता है। निरंतर प्रगतिशीलता बनी रहनी चाहिए।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर।।

भगवान में श्रद्धा रखकर निःस्वार्थ भाव से किया गया जन कल्याण का प्रत्येक कर्म यज्ञ है।गीतापरिवार का कार्य भी ऐसा ही एक यज्ञ है। इससे बड़ा सत्कर्म हो भी नहीं सकता कि “ गीता पढ़ें, पढ़ायें व जीवन में लाएं।” हम गीता पढ़ते रहेंगे, पढ़ाते रहेंगे। साथ ही साथ यह भी देखते रहेंगे की गीता जीवन में कितनी उतरी। नित्य आत्मावलोकन करके देखना चाहिए कि दिन में आज मैंने कौन सा कार्य सत्पुरुषों जैसा किया है? और कौन सा कर्म गलत हो गया है। अपने जीवन का संशोधन करते रहना अधिकाधिक शुद्धि करण करते रहना। यह भी एक साधना है। यही अपने जीवन में गीता उतारने का प्रयास है।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

किसी विशेष कार्य की प्राथमिकता को ध्यान में रखकर, अन्य सारे कर्मो का त्याग कर तीव्र गति से कार्य मे लगना पड़ता है। किंतु यह बात जीवन में आदत नहीं बननी चाहिए। जीवन में संतुलन व आत्मानुशासन लाना अति आवश्यक है। यज्ञ का अर्थ भी यही है सभी बातें उचित मात्रा में नाप तोल कर रखी जाए, न कम न ज्यादा। सत्कर्म करते हुए हमारा जीवन भी नपा-तुला होना चाहिए, यह बात भगवान की भी अपेक्षित है।

गीता गान है, गीता गाने का ग्रन्थ है, गीता गुनगुनाने का ग्रन्थ है। प्रसन्न होकर चलते रहें यही मार्ग है। जहां तक शक्ति है चलते रहें, जब कभी थक कर रुक जाएंगे तब कृष्ण आकर गले लगा लेंगे, ऐसा विश्वास रखना चाहिए, यही गीता मार्ग है।

नव संवत्सर की शुभकामनाएं व कोरोना महामारी का जल्दी शमन हो एवं गीता सेवा में मुक्त होकर भ्रमण कर सकें।

नूतन वर्षाभिनंदन धन्यवाद
जय श्री कृष्ण
भारत माता की जय



आओ गीता प्रचारक बनें।

reg.learngeeta.com

सहज व सरल ढंग से भगवान की वाणी में गायी गयी भगवद्गीता
का शुद्ध उच्चारण सीखें व अन्यों को प्रेरित कर
भगवान का प्रिय कार्य करने वाला बनें।

स्तर २ (L2) के विभिन्न उद्घाटन समारोह

फूलों की कोमल पंखुड़ियाँ, बिखरें जिनके अभिनंदन में,
मकरन्द मिलाती हों अपना, स्वागत के कुंकुम चंदन में।
फिर से आया स्तर दो है, पुन: इतिहास दोहराने को,
गीता-प्रेमियों को पुन: उत्साहित करने, पुन: जयघोष लगाने को।।

स्तर-2 (Level-2), गीता यात्रा का दूसरा पड़ाव है। स्तर-1(Level-1) में गीता के प्रशिक्षार्थी, गीता के दो अध्यायों, 12वें और 15वें का शुद्ध उच्चारण सीख कर, स्तर-2(Level-2) में प्रवेश कर पाते हैं। स्तर-2(Level-2) अथवा अन्य किसी भी स्तर (Level) में, परीक्षा उत्तीर्ण करने की अनिवार्यता नहीं है। स्तर-2(Level-2) में चार अध्याय सिखाये जाते हैं(16,9,14,17)। स्तर-2 (Level-2) को प्ले स्कूल से जूनियर स्कूल कि ओर जाना कहा जा सकता है। स्तर-1(level-1) में "गीता गुंजन" की परीक्षा, गीता के दो अध्याय, शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ कर उत्तीर्ण की जा सकती है।स्तर-2 (Level-2) में आने पर "गीता जिज्ञासु" की परीक्षा दी जा सकती है जहां 12वें,15वें और 16वें अध्याय को कंठस्थ करना होता है।अब तक स्तर-2(Level-2) के 10 बैच प्रारंभ किये जा चुके हैं। हर बैच में प्रशिक्षार्थियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है।

हर समारोह का शुभारंभ प्रार्थना, श्लोक और दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया जाता है। गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष और गीता विशारद डॉ संजय जी मालपाणी के अनुसार गीता के चार स्तरों की यात्रा चार धामों की यात्रा के समान है। दूसरा स्तर(Level) इस यात्रा का दूसरा पड़ाव है। आगे के धामों के दृश्य भी बहुत मनोहर हैं। उन्होंने अपने विविध व्याख्यानों में भी 'गीता रूपी अलौकिक ग्रंथ का मानव जीवन में महत्व' पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवद्गीता मन को सुदृढ़ बनाने वाली व्यायामशाला और मन को सुंदर बनाने वाला ब्यूटी पार्लर है।गीता, विश्व के व्यवस्थापन और समत्व का सबसे बड़ा ग्रंथ है।उन्होंने गीता के प्रसिद्ध श्लोक **'प्राणापानौ समौ कृत्वा'** एवं **'उद्धरेदात्मनात्मानम्'** श्लोकों को उद्धृत करते हुए मन के आत्मिक उद्धार की बात कही।

गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और उत्तर भारत के प्रभारी व गीता विशारद डॉ.आशू जी गोयल, जो गीता परिवार में ऑनलाइन गीता कक्षाओं के प्रोग्राम डायरेक्टर भी हैं, उन्होंने विभिन्न बैच के शुभारंभ समारोहों में प्रशिक्षार्थियों का स्वागताभिनन्दन किया तथा कोरोना महामारी के समय शुरु की गई ऑनलाइन गीता कक्षाओं के बारे में बतलाया कि, इन कक्षाओं की आशातीत सफलता के बारे में उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। उन्होंने सभी प्रशिक्षार्थियों से आत्म कल्याण के लिए गीता कक्षाओं के चारों स्तर (Level) को चार धाम रूपी यात्रा मान, पूर्ण करने का आह्वान किया। किसी भी विघ्न-बाधा से गीता की कक्षा छूटनी नहीं चाहिए।

ये उथल पुथल उत्ताल लहर, पथ से ना डिगाने पायेगी।
पतवार चलाते जाएँगे, मंजिल आयेगी आयेगी।।

उन्होंने गीता के सोलहवें (16) अध्याय का विवेचन करते हुए इस अध्याय में प्रथम तीन श्लोकों में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बताये गये 26 दैवी गुणों के विषय में भी बतलाया कि कैसे हम इन दैवी गुणों को आत्मसात् कर अपना कल्याण कर सकते हैं।आशूभैया और संजय भैया दोनों ने, गीता परिवार में निःस्वार्थ भाव से सेवा दे रहे सभी प्रशिक्षकों, तकनीकी सहायकों, विभिन्न विभागों के कार्यकर्ताओं, एडमिशन, आई.टी.,परीक्षा विभाग, गीता प्रचार विभाग आदि सबका अभिनन्दन और धन्यवाद ज्ञापन किया।

गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और दक्षिणांचल के प्रभारी श्री हरिनारायण व्यास जी ने भी विभिन्न समारोहों में गीता के नये प्रशिक्षार्थियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने बताया कि वे स्वयं गीता कक्षा में स्तर-4 (Level-4) के विद्यार्थी हैं। संस्कृत का पूर्व ज्ञान न होने पर भी, अत्यंत सरलता से गीता जी के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पा रहे हैं। स्तर-2 (Level-2) के विभिन्न समारोहों में प्रशिक्षार्थियों से संवाद का सत्र रखा गया। सभी ने गीता कक्षा में प्रवेश लेने के बाद, जीवन में आये परिवर्तन और अपने चित्त में उत्पन्न शांति के बारे में बतलाया तथा गीता परिवार, इसके प्रशिक्षकों और अन्य सभी सहयोगियों के प्रति आभार व धन्यवाद व्यक्त किया।

स्तर 3 (L3) के विभिन्न उद्घाटन समारोह

साधकों को स्तर-1(Level-1) एवं स्तर-2(Level-2) पूर्ण होने के पश्चात स्तर-3(level-3) में प्रवेश मिलता है। स्तर-3(Level-3) में 60 कक्षाओं का मॉड्यूल बना हुआ है, जिसमें (1,3,4,5,6,7) छः अध्यायों का शुद्ध उच्चारण सिखाया जाता है। स्तर-3(Level-3) में आते-आते प्रायः ऐसा देखा गया है कि, साधक, गीता एवं गीता परिवार से आत्मिक सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। उनके हृदय में गीता-गङ्गा निःसृत होने लगती है।

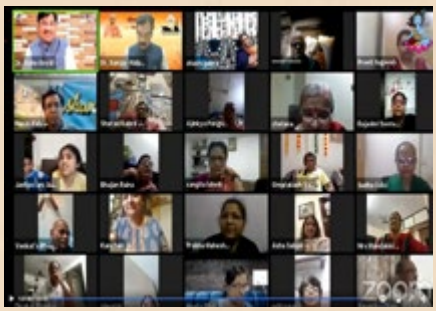
अब तक स्तर-3(Level-3) के पांच बैच पूर्ण हो चुके हैं जिसमें हजारों की संख्या में साधकों ने गीता जी का शुद्ध उच्चारण सीखा। स्तर-3 (Level-3) का प्रथम बैच अत्यंत उत्साह के साथ 12 अक्टूबर 2020 को आरंभ हुआ। इसमें विशेष सत्र, 'परिवार संवाद' रखा गया। इस सत्र के अंतर्गत, स्तर-3 (Level-3) में प्रवेश करने वाले सभी प्रशिक्षार्थियों एवं प्रशिक्षकों ने अपने हृदय के उद्गार, सुझाव एवं खट्टे मीठे अनुभव साझा किये। कोरोना महामारी के दौरान गीता का सान्निध्य मिलना, संजीवनी से कम न था। साधकों द्वारा अत्यंत भावुक कर देने वाले अनुभव साझा किये गए।

5 जनवरी 2021 से स्तर-3(Level-3) का द्वितीय बैच आरंभ हुआ। आदरणीय संजय भैया ने गीता संथा वर्गों के चार स्तरों की उपमा पवित्र चार धामों से की। उन्होंने कहा कि ये चार स्तर (Level) चार धाम की तरह हैं। हमें चार-धाम यात्री की भांति, श्रद्धा, समर्पण एवं भक्तिभाव के साथ अपनी गीता-पठन यात्रा को पूर्ण करना चाहिए।

26 जनवरी को स्तर-2 (Level-2) का एक बैच, स्तर-3 (Level-3) में विलय किया गया। समय अपनी गति से आगे बढ़ता रहा। 23 फरवरी, 2021 से स्तर-3 (Level-3) का तृतीय बैच आरंभ हुआ, इसमें 2500 नवीन साधक गीता परिवार से जुड़े। स्तर-3(Level-3) का चतुर्थ बैच मई में आरंभ हुआ एवं 7 जून को स्तर-2(Level-2) का एक और बैच, विलय होकर, स्तर-3(Level-3) में परिवर्तित हो गया। जिसमें पुनः बड़ी संख्या में साधक, परिवार से जुड़ गये।
इस स्तर में गीता जिज्ञासु एवं गीता पाठक, गीता पथिक की परीक्षाएं होती हैं जिसमें सभी बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं।













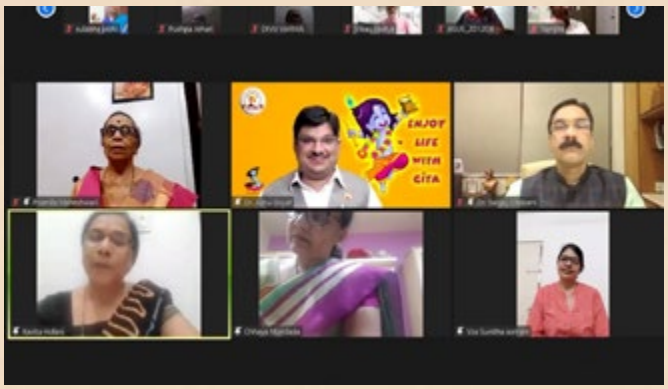
स्तर 4 (L4) के विभिन्न उद्घाटन समारोह

आधुनिक युग में समस्याओं से घिरे मानव को, उसके मन को, उसकी आत्मा को अगर कोई शांत, स्थिर और प्रसन्नचित्त रख सकता है तो वो एकमात्र गीता है। अर्जुन को प्रश्नवाचक चिन्हों के भँवर से गीता उपदेश देकर श्रीकृष्ण ने चक्रव्यूह से बाहर निकाला था। गीता संथा वर्ग के द्वारा भी गीता प्रेम जगा कर गीता ज्ञानरूपी महासागर की इन बूंदों को ग्रहण कराने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। इस लक्ष्य को सरल बनाने हेतु गीता के अट्ठारह अध्यायों को सरलता से सीखने की दृष्टि से चार स्तरों पर विभाजित किया गया है। लेवल 1 से लेवल 4 तक चार आयाम स्थापित किये गये हैं। इस लंबी सुंदर यात्रा में तीसरे चरण तक प्रशिक्षार्थी गीता के अट्ठारह अध्याय में से बारह अध्यायों का पठन कर चुके होते हैं । चौथे चरण में शेष छह अध्यायों के शुद्ध उच्चारण का प्रशिक्षण दिया जाता है।

चौथे चरण, लेवल 4 में ज़ूम कक्षाओं के माध्यम से अध्याय दो, आठ, दस, ग्यारह, तेरह एवं अट्ठारह का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। ये सभी अध्याय विस्तृत व अर्थ की दृष्टि से गूढ़ अध्याय हैं, इसीलिये पूज्य स्वामीजी ने इनको क्रम दृष्टि से अंत में रखा। गीता पढ़ाने वाले सभी गीतासेवी प्रशिक्षक अत्यन्त धैर्य व सहनशीलता के साथ प्रत्येक विद्यार्थी को शुद्ध उच्चारण के साथ अनुपठन करवाते हैं। प्रशिक्षार्थियों को अध्यायों को कंठस्थ करने की प्रेरणा भी दी जाती है ताकि वह गीता को मुखस्थ व हृदयस्थ कर उससे एकाकार हो जायें। शुद्ध उच्चारण के साथ कंठस्थ होने पर विभिन्न स्तर की परीक्षाओं में अर्थात 'गीता जिज्ञासु', 'गीता पाठक', 'गीता पथिक' की परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकते हैं। सभी अठारह अध्याय शुद्ध उच्चारण के साथ कंठस्थ होने पर 'गीताव्रती' की परीक्षा भी दे सकते हैं। 'गीताव्रती' उत्तीर्ण होने पर उन्हें प. पू. स्वामी जी के करकमलों द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त करने









का गौरव और सौभाग्य मिल सकता है। यह सभी परीक्षायें ऐच्छिक, नि:शुल्क व दीर्घकाल तक उपलब्ध हैं यानि कंठस्थ करने में अधिक समय लगे तो भी कोई दिक्कत नहीं, प्रत्येक माह आयोजित होने वाली इन परीक्षाओं में exam.learngeeta.com के माध्यम से कोई भी सम्मिलित हो सकता है।

भगवद्गीता जीवन की हर दशा में दिशा देने का कार्य करेगी। गुरु के सान्निध्य में, साधक भाव, भक्ति भाव व सहज भाव अपने अंतर्मन में लाएं, इन भावों के साथ, हम सबके प्रिय आशू भैया ने मार्च 2021 में लेवल 4 के प्रथम बैच के आरंभ होने की घोषणा की। इस बैच प्रवेश प्राप्त करने वाले 5000 साधकों का अभिनन्दन और स्वागत किया। उन्होंने बताया कि प्रसन्नता से एक-एक चरण पार हुए हम आगे बढ़े हैं।

पहला बैच कुछ माह पूर्व ही तो आरम्भ हुआ था, और देखिये अब वे प्रशिक्षार्थी अपनी यात्रा को बढ़ाते हुए प्रथम L-4 बैच में पहुँच गये हैं, यह बहुत उल्लास की बात है। उन्होंने श्रद्धेय अटल जी की यह पंक्तियाँ दोहराई "कुछ लोग चलते हैं पथ पर, कुछ लोग पथ बनाते हैं"
प्रथम L4 के प्रशिक्षार्थियों ने एक नवीन पथ का निर्माण कर दिया है जिस पर आने वाले समय में लाखों गीताप्रेमी अग्रसर होंगे। आरम्भ में अनुभव भी कम थे, साधन जुटाते हुए सिस्टम बनाते हुए यह नवीन पथ बनाया गया। भगवान साथ थे, उनकी कृपा और स्वामी जी की कृपा से कार्यकर्ता, प्रशिक्षार्थी जुड़ते गये और कारवाँ बनता गया। उन्होंने बताया आज मार्च 2020 में वर्गों की संख्या बढ़ते बढ़ते इतनी आगे पँहुच गयी है कि लगभग 550 प्रशिक्षण वर्ग नित्य आयोजित हो रहे हैं जिसमे नित्य लगभग 40000 साधक लाभ ले रहे हैं। जब कोई यात्रा आरंभ होती है तो उसकी सफलता को लेकर संशय रहता है, लेकिन जब यात्रा का काफी भाग बीत जाता है तो यात्रा पूरी करने की अभिलाषा से पुनः ऊर्जा संचरित हो जाती है।

गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय जी मालपाणी ने कहा हम सब इस गीता यात्रा में आरूढ़ हों, ये अति सुन्दर यात्रा है, चौथे चरण में चलने के लिये लगाम उसके हाथ में देनी होगी, निरहंकार होना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि गीता के सभी श्लोक सबके लिए नहीं हैं। जैसे केमिस्ट की दुकान में रोगी के लिए कौन सी दवा उपयोगी है, यह डॉक्टर बताता है। ऐसे ही गुरु की कृपा से ही गीता के गूढ़ रहस्यों को जान पाना सम्भव होता है। उन्होंने गीता में अर्जुन द्वारा कहे गये पहले और अंतिम श्लोक की भी चर्चा की। प्रथम श्लोक में अर्जुन ने कृष्ण से कहा रथ चलाओ, मेरी बागडोर संभालो, सही जगह ले चलो, यहां अर्जुन निरहंकार हो गए। अंतिम श्लोक में अर्जुन ने कहा मेरे सारे सन्देह मिट चुके हैं। ये सब आपके कृपा प्रसाद से संभव हुआ। गीता ज्ञान पाकर सब लोग उस प्रसाद के अधिकारी बन रहे हैं। भगवान ने हाथ थामा है तो अब चिंता किस बात की।

अत्यन्त ऊर्जावान गीता परिवार की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा व मध्यांचल प्रमुख आ. प्रमिला माहेश्वरी दीदी ने L4 बैच का उद्घाटन किया। श्री संजय भैया ने प्रमिला दीदी का परिचय देते हुए कहा कि वे स्वयं पूरी तरह से समर्पित हैं, अनेकों उपक्रम सहज भाव से करती हैं, हज़ारों बच्चों के साथ योग महोत्सव, गीता महोत्सव करती हैं, प्राणायाम, योगासन के माध्यम से रोग हरती हैं। प्रमिला दीदी ने कहा हम सब को गीता को आचरण में लाना है। उन्होंने कहा अनेक विधाओं को लेकर परिवार काम कर रहा है। बालकों में संस्कारों को जगाना है, नई पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाना है। उन्होंने





समाज से अंधकार को हटाने के संकल्प के लिए कहा-

अनगिनत दीप जलेंगे ऐसे, तमस एक दिन भागेगा
पौरुष की आहुति से, भाग्य देश का जागेगा

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए आ. आशू भैया ने अतिथियों का स्वागत व परिचय कराया। प्रशिक्षार्थियों व प्रशिक्षकों ने अपने अनुभव साझा किये, मंतव्य सुने गयें। यहाँ अत्यन्त विलक्षण कार्यकर्ता सुश्री श्रद्धा रावदेव दीदी का परिचय कराया गया। उन्होंने बताया दीदी नित्य नई योजनाओं एवं उनके समाधान के साथ उपस्थित होती हैं, अनेक संस्थाओं की जिम्मेदारी के साथ उत्कृष्ट कार्य करती हैं।

श्रद्धा दीदी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन प्रेषित किया। सर्वप्रथम उन्होंने गीता परिवार के संस्थापक अध्यक्ष प. पू. स्वामी जी को कोटिशः नमन किया। उन्होंने सभी सहयोगियों, ट्रेनर, टेक असिस्टेंट, जी. सी., लर्न गीता टीम, विवेचकों, पीडीएफ निर्माता, क्लास मॉनिटरिंग टीम, एल.एम.एस टीम, कार्यक्रम नियोजक टीम, शेयरिंग टीम, मैसेज ट्रांसलेटर, एडमिशन, विवेचन राइटिंग टीम एवं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े साधकों का हृदय से आभार प्रकट किया।



साप्ताहिक गीता विवेचन सत्र

गीता परिवार का सूत्र वाक्य है "गीता पढ़ें, पढ़ायें जीवन में लाएं"। इसके पहले दो चरण तो किसी भी गीता साधक की स्वयं की मेहनत एवं लगन के साथ पूरे किए जा सकते हैं किन्तु जब बात आती है "गीता को जीवन में लाएं", ऐसे में समझ नहीं आता कि यह कैसे संभव हो पाएगा? क्योंकि हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में ढेरों समस्याएं और रुकावटें, हर एक साधक के समक्ष पैदा होती रहती हैं जो कि एक साधक के मार्ग में अवरोध का कार्य करती है।

गीता परिवार के सदस्यों ने इस पर गहनता पूर्वक चर्चा की और परम पूज्य गुरु जी के निर्देशों के आधार पर यह निश्चित किया गया कि क्यों न श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का अर्थ के साथ-साथ पौराणिक विषयों एवं कहानियां का सार भी उनमें शामिल किया जाए और ऐसे सत्रों का आयोजन किया जाए जिनमें श्लोकों के अर्थ एवं पौराणिक गाथाओं के साथ-साथ, हम सभी के जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं सामाजिक विषयों को शामिल किया जाए।

इन विशेषज्ञों की शुरुआत बहुत ही छोटे स्तर पर की गई लेकिन जैसे ऐसे गीता साधकों एवं आम जन का रुझान बढ़ता गया और लगा कि यह एक ऐसा माध्यम बन सकता है जिसमें कि अर्थ के विवेचन के साथ-साथ, साधक अपनी जिज्ञासाओं एवं पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं के उत्तर भी पा सके।

इसी उद्देश्य को लेकर गीता के सार को गीता साधकों तक पहुंचाने हेतु ऑनलाइन गीता संथा वर्गों के अंतर्गत सप्ताह में 2 दिन शनिवार एवं रविवार को ऐसे विशेष सत्रों का आयोजन जून 2020 से शुरू किया गया ताकि आवश्यक एवं सम्पूर्ण जानकारी को रोचक तरीके से गीता साधक तक पहुंचाई जा सके और उसके बताने में एकरूपता भी बनी रहे।

आज इन विशेषज्ञों को देखने और सुनने के लिए हजारों की संख्या में साधक जूम मीटिंग के माध्यम से जुड़ते हैं जब देखा गया की सभी साधकों को इसमें शामिल होने का अवसर नहीं मिल पा रहा है तो इसे यूट्यूब एवं फेसबुक के माध्यम से भी प्रसारित किया जाना शरू किया गया और वर्तमान में हज़ारों साधक इस के माध्यम से विशेष सत्रों का लाभ ले पा रहे हैं।

गीता परिवार वर्तमान में 4 स्तरों पर गीता अनुपठन की कक्षाएं आयोजित की जाती हैं जो कि वर्तमान में 10 से अधिक भाषाओं में चल रहीं हैं जिसमे हजारों की संख्या में प्रतिदिन साधक गीता पढ़ना सीखते हैं। 4000 से अधिक गीता सेवी इसमें दिन रात अपनी सेवाएं देते हैं और 2,50,000 से अधिक साधक इस से लाभान्वित हो चुके हैं।

इन विशेषज्ञों में साधकों की बढ़ती हुई उपस्थिति उनके रुझान को देखते हुए यह विचार किया गया कि इन विशेष सत्रों की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता को बढ़ाने के लिए इन्हें अध्याय पर आधारित कर दिया जाए ताकि सिर्फ उस स्तर के जिज्ञासु साधक उस विशेष सत्र में शामिल हों। ऐसे में ध्यान रखा गया कि जो अध्याय पढ़ाए जा रहे हैं उन्हें अध्ययन पर आधारित विशेष सत्र का आयोजन किया जाए ताकि लोगों का रुझान उसमें सतत बना रहे।

वर्तमान में हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं इन विशेषताओं का आयोजन किया जा रहा है। पूज्य स्वामीजी द्वारा अनुग्रहीत उनकी आज्ञा से बहुत ही ज्ञानी, अनुभवी,गीताव्रती, गीता प्रवीण एवं गीता विशारद विवेचनकर्ता प्रत्येक सप्ताह हजारों गीताप्रेमियों की ज्ञान पिपासा मिटाने हेतु अलग अलग अध्यायों पर विवेचन कहते हैं।

गीता विशारद डॉ. श्री संजय मालपाणी
गीता विशारद श्री श्रीनिवास वर्णेकर
गीता विशारद डॉ. श्री आशू गोयल
गीता विदुषी सौ. वन्दना वर्णेकर
गीता प्रवीण कु. रूपल शुक्ला
गीता प्रवीण कु.कविता वर्मा

विवेचन सत्रों की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि यहाँ विवेचनकर्ता उन्ही श्रोताओं के सदृश ही समान्यरूप से जीवन का निर्वाह कर करते हुए गीता को जीवन में लाने का प्रयास कर रहे हैं। स्वामीजी द्वारा लिए गए इस निर्णय का ऐसा आकर्षण हुआ कि लगभग 30 हजार लोग प्रतिसप्ताह ज़ूम, यूट्यूब, फेसबुक आदि के माध्यम से विवेचन का श्रवण कर रहें है। कभी कभी तो ऐसा भी होता है कि 1000 पार्टिसिपेंट्स की कैपेसिटी वाला ज़ूम पाँच मिनट में भर जाता है एवं विवेचक को भी जॉइन करना मुश्किल हो जाता है।

जैसा कि ऐसे किसी भी कार्यक्रम को अकेले और अचानक से आयोजित नहीं किया जा सकता वैसे ही इस कार्यक्रम को सफल बनाने में भी कई टीम अपनी महती भूमिका निभा रहीं है, यह सभी टीम्स अपने अथक प्रयासों एवं समर्पण भाव से सेवा करते हुए अपना सहयोग देते हैं जिसके कारण ऐसे आयोजन को सफल बनाया जा पाना संभव हो पाता है। जून 2020 से लेकर अभी तक 450 से अधिक सप्ताहिक विशेष विवेचन सत्रों का आयोजन किया गया है। पर्दे के पीछे रहकर कार्य करने वाली कई टीमें हैं, जिनमें से कुछ निम्न प्रकार है।

- **विवेचन कर्ता**
- **कंटेंट संकलनकर्ता टीम**
- **सूत्रसंचालन टीम**
- **कंटेंट शेयरिंग टीम**
- **तकनीकी सहायक टीम**
- **अनुवादक टीम एवं अन्य**

इन सभी टीम का भाग हमारे ही गीता साधक होते हैं। अन्यान्य प्रकार से अपनी योग्यताओं का उपयोग कर वे इसमे अपनी आहुति देते हैं। इन सभी टीम्स में जुड़ने हेतु एक ट्रेनिंग होती है एवं उससे होकर ही साधक इसमे अपनी सेवा दे सकते हैं। इन कार्यक्रमों की लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि हमारे गीता साधक, विशेष सत्र प्रारंभ होने के निर्धारित समय से 39 मिनट पूर्व ही ज़ूम मीटिंग पर जुड़ जाते हैं और कार्यक्रम के शुरू होने के मात्र 5 से 10 मिनट में हीहमारे जूम मीटिंग फुल हो जाते हैं।

कार्यक्रम के अंत में रखे जाने वाले प्रश्न उत्तर काल की लोकप्रियता का अंदाजा सिर्फ इस बात से लगाया जाता है कि विवेचनकर्ता के द्वारा सभी के प्रश्नों को लेकर उनका उत्तर देने का प्रयास किया जाता है लेकिन कई बार समय सीमा की बाध्यता के चलते, कई साधक अपने प्रश्नों के उत्तर पाने में प्रतीक्षा सूची में शेष रहते हैं, ऐसे में उन साधकों से अनुरोध करना होता है कि आपके प्रश्न का उत्तर अगले सत्र में दिया जायेगा। और यह गीता साधकों का बहुत ही बड़प्पन है कि वह बड़े धैर्य के साथ अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करते हैं। इसी से इस कार्यक्रम की सार्थकता और उपयोगिता सिद्ध होती है।

आयोजकों की टीम हमेशा इसी प्रयास में सदैव रत रहती है कि वह गीता साधकों से फीडबैक लेते रहें कि इस कार्यक्रम को और कैसे अधिक सुंदर और उपयोगी बनाया जा सकता है और समय-समय पर प्राप्त होने वाले सभी सकारात्मक सुझावों को लागू करने का प्रयास भी किया जाता है।

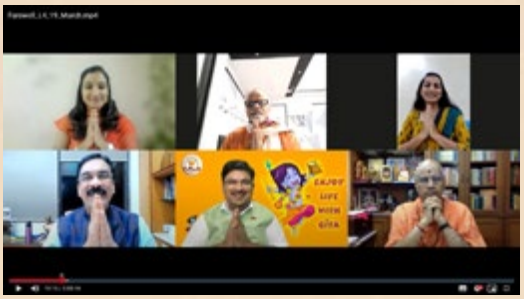
यह कहने में हमें बहुत ही हर्ष महसूस होता है कि गीता परिवार का यह प्रयोग बहुत ही सफल रहा है। यह कार्यक्रम सुचारू रूप से चलते हुए हजारों की संख्या में लोगों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम रहा है हर एक विवेचनकर्ता यही प्रयास करते हैं कि सभी साधकों का जीवन सरल और सुखमय हो सके।

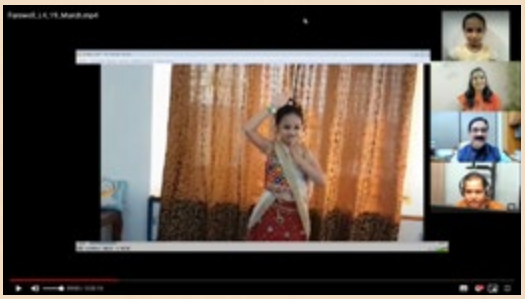
हमारे गीता परिवार का सूत्र वाक्य गीता को जीवन में अपनाएं इसमें यह विवेचन सत्र बहुत उपयोगी होता है। हम हमारे सभी गीता साधकों से यह अनुरोध करना चाहेंगे कि इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में शामिल हो और आपके निजी एवं दैनिक जीवन में काम आने वाले प्रश्नों, शंकाओं के बारे में विवेचनकर्ताओं से अपना समाधान पाएं और गीता के प्रति आप की लगन एवं भाव में सर्वदा बढ़ोत्तरी होती रहे साथ ही आप जीवन में गीता सीखें भी सिखाएं भी और जीवन में उसका उपयोग भी करते रहें।











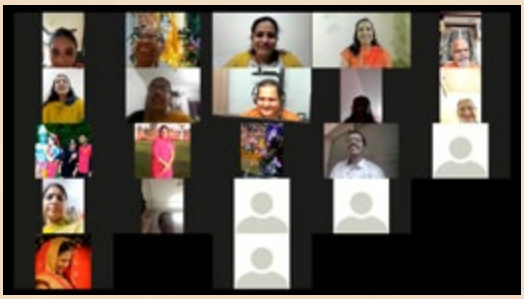


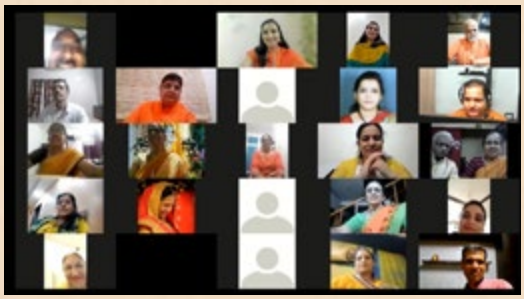


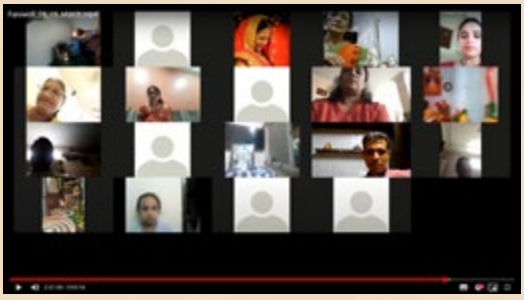


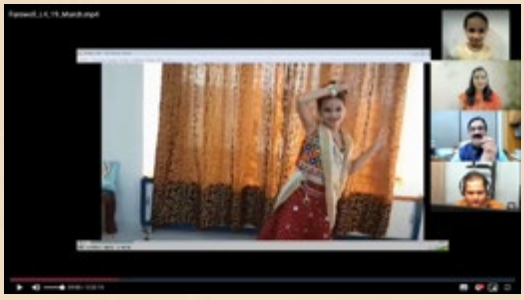






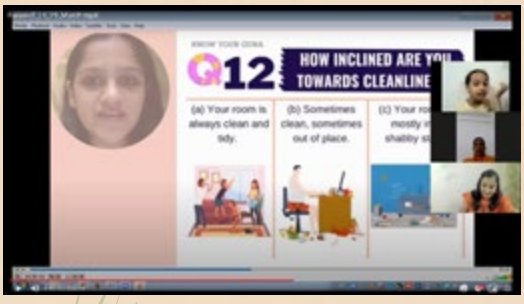











Q12
HOW INCLINED ARE YOU
TOWARDS CLEANLINE
(a) Your room is always clean and tidy.
(b) Sometimes clean, sometimes out of place.





कण्ठस्थीकरण परीक्षाएं

परीक्षा से न लगे हमें डर।
हम तो हैं गीता परिवार के पर।
प्रसिद्धि की ऐसी उड़ान भरेंगे।
हर घर में गीता पहुँचायेंगे।

गीता पढ़ें, पढ़ाएं और जीवन में लाएं यह उद्देश्य लेकर हम गीता परिवार के साथ जुड़ चुके हैं। आगे बढ़ने की प्रेरणा हमें गीता परिवार से मिली कि हम सब मिलकर गीतारूपी भवसागर में डूब जाएं और हमारा हाथ श्री कृष्ण थाम लेवें। गीता जी सीखने के लिए हमें learngeeta कार्यक्रम के अन्तर्गत स्तर एक (L-1) में पंजीकरण करना होता है। इसके पश्चात् हम गीता कक्षा के व्हाट्सएप समूह में जुड़ जाते हैं। उस ज़ूम लिंक के द्वारा हम स्तर एक की कक्षा में सम्मिलित होते हैं।

गीता कक्षाओं के चार स्तर हैं । गीता कक्षाओं में पंजीकरण करने की न्यूनतम आयु 6 वर्ष है। अपने माता- पिता, भाई - बहन, दादा - दादी, नाना - नानी को गीता कक्षाओं में सीखते देख छोटे बच्चों का भी रूझान गीता अध्ययन में होने लगा है। कहीं कहीं तो माता – पिता के साथ ही सीखते-सीखते 3 - 4 साल के बच्चे भी बहुत ही अच्छे से गीता के अध्यायों को कंठस्थ कर के बोलने लगते हैं।

जिस प्रकार मनुष्य जीवन की चार अवस्थाएं होती है उसी तरह गीता स्तर को हम जीवन की अवस्थाओं के साथ जोड़ सकते हैं। जैसे प्रथम "बाल्यावस्था", अच्छे संस्कार करने का समय। गीता परिवार द्वारा यह कार्य प्रशंसनीय है। 'संस्कार' स्तर एक से ही शुरू होता है। अर्थात इस स्तर में 12वां व 15वां अध्याय सिखाया जाता है। इसमें पुरुषोत्तमयोग और भक्तियोग मार्ग बताया गया है। बालक रूपी साधक को गीता परिवार उंगली पकड़ कर जीवन का एक लक्ष्य दिखाते हैं और हम उस राह पर हँसते-हँसते चलने लगते हैं। मन लगाकर गीता पढ़ने का हमारा साहस और भी बढ़ जाती है। हमें जो कुछ प्राप्त करने की इच्छा है वह यहाँ ही मिलेगी और कहीं भी नहीं। इस दृढ़ संकल्प के साथ हम उभरते हैं। यह अनुभव गीता परिवार के साथ जुड़े हुए प्रत्येक साधक को होता है। स्तर-दो अर्थात् हमारे मानवीय जीवन की षोडशावस्था, इस स्तर पर, सूक्ष्म से सूक्ष्म व्याकरण सहित उच्चारण ह्रस्व, दीर्घ,आघात, विसर्ग, अनुस्वार उपयोग पर बल दिया जाता है। स्तर-तीन यानि तरुणावस्था इसमें हमें गीता के 6 अध्यायों का पठन सिखाया जाता है। हम और भी प्रगल्भ हो जाते हैं और स्तर-चार यानि प्रौढ़ावस्था। इसमें हमें गीता के 6 अध्यायों का पठन और कंठस्थीकरण करना होता है। हमें जो कुछ प्राप्त करने की इच्छा है वह यहां ही मिलेगी और कहीं भी नहीं, इसी दृढ़ संकल्प के साथ हम उभरते हैं। यह अनुभव गीता परिवार के साथ जुड़े प्रत्येक साधक को होता है।

गीता कक्षाओं में प्रत्येक स्तर पर परीक्षा होती है। परीक्षाओं के कई लाभ हैं और परीक्षा लेने के उद्देश्य भी हैं।
गीता कक्षा में गीता परीक्षा लेने का उद्देश्य यह है कि आप इस महान ग्रंथ को कण्ठस्थ करें और अपने इस ज्ञान पर ध्यान एवं मनन करके जीवन में आने वाली मुसीबतों और बाधाओं से चिंता मुक्त होकर कर्म की राह पर चल सकते हैं। जिस तरह जब युद्ध में अर्जुन जी अपना कर्म भूल गए थे तब कुरुक्षेत्र की रणभूमि पर श्रीकृष्ण ने उनके सारथी बनकर उन्हें गीता उपदेश देकर सही राह दिखाई थी और सिखाया था कि कर्म पर ध्यान रखें फल की इच्छा ना करें।
गीता कक्षाओं में गीता परीक्षा लेने का एक और उद्देश्य यह भी है कि साधकों को गीता परीक्षाओं के माध्यम से अधिकतम अध्याय कण्ठस्थ हो जाए जिससे वह हमारे मस्तिष्क में दीर्घकाल तक रहें। हमें आत्मसात हो जाएं और जब हम उन श्लोकों के अर्थों का चिंतन करते हैं तो वे हमें शीघ्रता से समझ में आ जाएं। गीता अध्याय कण्ठस्थ करने के बाद, उनके अर्थ समझने का करोड़ों गुना लाभ मिलता है, जैसे हम व्यापार को समझने के लिए एम.बी. ए. की डिग्री लेते हैं। उसी तरह इस भवसागर को पार करने के लिए हमें गीता जी का ज्ञान होना बहुत जरूरी है। गीता जी को जीवन में लाने से हमारी बुद्ध ,आचार-विचार , चित्त की एकाग्रता में बड़ा ही परिवर्तन आता है। संसार को देखने की दृष्टि ही बदल जाती है। हमारा बाह्य और अंर्तमन बदल जाता है, हम अंर्तमुखी हो जाते हैं । एक समय ऐसा आता है कि हम गीताजी में तल्लीन हो जाते हैं।

प्रत्येक स्तर पर परीक्षा देना आवश्यक नहीं है, किन्तु परीक्षा देने से साधकों का मनोबल बढ़ जाता है। गीता कक्षाओं में परीक्षा देने के लिए कोई आयु नहीं है। 4 साल के बालक से लेकर किसी भी उम्र तक आप परीक्षा दे सकते हैं। आइए विभिन्न परीक्षाओं के बारे में जानते हैं। गीता कक्षाओं में कुल 5 परीक्षाएं होती है:-

1. गीता गुञ्जन
2. गीता जिज्ञासु
3. गीता पाठक
4. गीता पथिक
5. गीताव्रती

अब जानते हैं कि, गीता परिवार की परीक्षाएं किस तरह से होती हैं। 4 गीता परीक्षाओं का तरीका एक समान है। गीता गुञ्जन परीक्षा देने का तरीका कुछ अलग है।

• **गीता गुञ्जन :-** इस परीक्षा में साधक को 12वें और 15 वें अध्याय के, शुद्व उच्चारण के साथ, अपना ऑडियो वीडियो बनाकर व्हाट्सएप ग्रुप में भेजना होता है। प्रशिक्षक के द्वारा उसे चेक किया जाता है, सही होने पर प्रशिक्षणर्थी को उत्तीर्ण घोषित किया जाता है और गीता गुञ्जन प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। यह परीक्षा बिल्कुल सहज और सरल है।

• **गीता जिज्ञासु:-** जब हम स्तर दो में प्रवेश लेते हैं तो उसके बाद जो परीक्षा होती है उसे गीता जिज्ञासु कहते हैं। इस परीक्षा के लिए 3 अध्याय (12, 15, 16वाँ) कण्ठस्थ होने चाहिए। सही उच्चारण के साथ इस बात पर ध्यान रखना होता है कि श्लोक में कहाँ आघात, अनुस्वार, हलंत, ह्रस्व और दीर्घ का उपयोग करना है और जब प्रशिक्षक हमारी परीक्षा लेते हैं तो प्रशिक्षक जो भी श्लोक पूछते हैं प्रशिक्षणर्थी को आंखें बंद करके उसको बोलना होता है। अध्याय 12, 15 , 16वें अध्याय के शुद्ध कण्ठस्थ परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले साधकों को गीता जिज्ञासु उपाधि से विभूषित किया जाता है एवं प्रशस्ति पत्र ई-मेल या पोस्ट के द्वारा प्रदान किया जाता है।

• **गीता पाठक: -** गीता पाठक परीक्षा में कुल 6 अध्याय कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीता साधक को गीता पाठक की उपाधि से विभूषित किया जाता है।

• **गीता पथिक :-** गीता पथिक परीक्षा, स्तर 3 पर ली जाती है । इसमें कुल 12 अध्यायों को शुद्ध कण्ठस्थ करना होता है। परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले साधकों को गीता पथिक की उपाधि से विभूषित किया जाता है।

• **गीताव्रती :-** जब प्रशिक्षार्थी स्तर-4 में आते हैं और परीक्षा देते हैं उसे गीताव्रती कहते हैं। गीताव्रती परीक्षा देने के लिए संपूर्ण श्रीमद्भगवद्गीता जी अर्थात् 18 अध्यायों के 700 श्लोकों को कण्ठस्थ कर परीक्षा देनी होती है। परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले साधकों को गीताव्रती उपाधि से विभूषित किया जाता है।

प्रत्येक स्तर पर परीक्षा में यही आकलन किया जाता है कि प्रशिक्षर्थी का उच्चारण सही है या नहीं और आघात, दीर्घ ह्रस्व, अनुस्वार, अनुनासिक, हलंत का ध्यान रख रहे हैं या नहीं और श्लोक आपको कण्ठस्थ हैं या नहीं। गीता गुंजन के बाद होने वाली परीक्षाओं में, जो भी अध्याय परीक्षा के लिए निर्धारित हैं उन सबकी पुनरावृत्ति के लिए, परीक्षा से पहले, एक्स्ट्रा क्लास होती हैं। इनमें वह अध्याय फिर से सही उच्चारण के साथ सिखाया जाता है और कहाँ गलती हो सकती है, बताया जाता है।

गीता श्लोक कण्ठस्थ करने के बहुत से लाभ हैं, पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरी जी महाराज हमेशा कहते हैं कि गीता के अध्याय कण्ठस्थ करने से वाणी शुद्ध होती है। जिह्वा का व्यायाम होता है। कंठ की नस नाड़ियों का शुद्धिकरण होता है। कंठ की सुमधुरता बढ़ती है । हमारी थायराइड ग्रंथि कार्यान्वित होकर उसका शरीर पर बहुत अच्छा प्रभाव होता है। इसके नियमित पाठन मानव को आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों लाभ होते हैं।

एक-एक परीक्षा पार करते हुए साधक गीता पथ पर आगे बढ़ते जाते हैं और लंबे समय तक गीता परिवार से जुड़ जाते हैं। इससे सबका उद्धार हो जाता है। साधक के साथ-साथ उनके परिवार, मित्रों, समाज और अंत में पूरे विश्व का उद्धार होता है।

ऐसा लगता है और विश्वास है कि साक्षात् श्री कृष्ण भगवान स्वयं ही अपने साधकों से गीता का अनुष्ठान करवाते हैं। यह अद्भुत अनुभव साधक लेते हैं । गीता पठन से साधक का शरीर भगवद् स्वरूप की आभा से प्रकाशमान हो जाता है। जीवन के उद्देश्यों को राह मिल जाती है। आत्म रंग का आनंद ले सकते हैं। गीतामय जीवन ही हम सबके लिए पथ प्रदर्शक है।













विशेष गीता व्याकरण वर्ग

Level-1 (हिंदी) https://youtu.be/bTinWtG2hjc

Level-1 (English) https://youtu.be/KFjzMgDO7xQ

Level-2 (हिंदी) https://youtu.be/xsdu5VcwGrI

भगवान श्री कृष्ण की असीम कृपा से हम सब श्रीमद्भगवद्गीता सीख ही रहे हैं। गीता परिवार प्रयास कर रहा है कि सभी प्रशिक्षार्थी संस्कृत में गीता का शुद्ध उच्चारण सीख सकें। किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसके व्याकरण के नियमों का ज्ञान आवश्यक है अतः संस्कृत व्याकरण का भी सूक्ष्म ज्ञान देने का विचार किया गया।

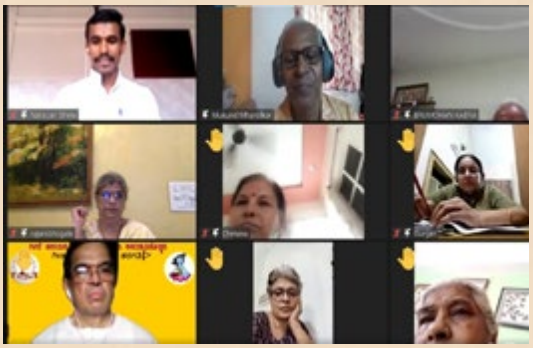
व्याकरण के वर्गों में नियमित भाग लेकर साधक, गीता जी का संस्कृत भाषा में उच्चारण, सहजता से सीख सकते हैं। व्याकरण वर्गों को समय-समय पर संचालित करके, गीता परिवार ने 'घर-घर गीता, हर घर गीता' का संकल्प लिया है। इसी उद्देश्य से गीता संथा वर्गों का सुचारू रूप से संचालन किया जा रहा है। गीता सीखने हेतु संस्कृत भाषा एवं संस्कृत व्याकरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है। यह वैज्ञानिक भाषा है। यह देव भाषा है, जैसे लिखी जाती है वैसे ही बोली जाती है।

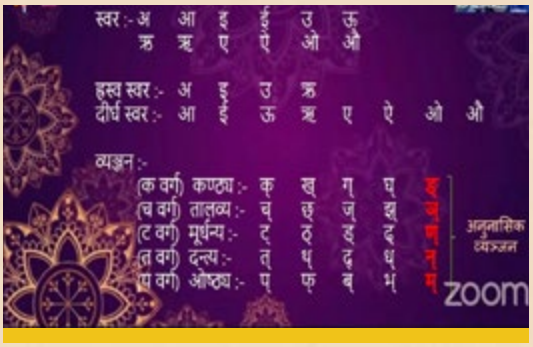
गीता परिवार द्वारा स्तर अनुसार संस्कृत व्याकरण के विशेष सत्रों का आयोजन प्रत्येक वर्ग हेतु नियमित किया जा रहा है। जिस तरह से गीता संथा वर्ग दिनों- दिन बढ़ता जा रहा है उसी अनुपात में व्याकरण वर्गों की संख्या भी बढ़ाई गयीं हैं।

वैदिक गुरुकुल में जिस प्रकार वेदों उच्चारण किया जाता है उसी पद्धति से संस्कृत व्याकरण के कई नियमों का पालन गीता परिवार में किया जाता है। इसी के अनुरूप हम गीता सिखाते हैं। इसके पीछे हमारी भावना यह है कि भगवान के मुखारविंद से निकले शब्दों को हम पूर्ण रूप से तो नहीं परंतु मिलत-जुलता तो बोल ही सकें। संस्कृत भाषा वृहद भाषा है जिसे सीखने में समय लगता है। संस्कृत भाषा का शुद्ध उच्चारण सिखाने के उद्देश्य से गीता संथा वर्गों में विशेष व्याकरण वर्गों का संचालन किया जाता है।

आचार्य नारायण शेट्टे जी के मार्गदर्शन में इन व्याकरण वर्गों का आरम्भ किया गया जिसमे एक विशिष्ट ज़ूम कक्षा में स्तर 1 के प्रशिक्षार्थियों हेतु एक 'स्तर 1 - श्रीमद्भगवद्गीता शुद्ध उच्चारण मार्गदर्शिका' का निर्माण किया गया जिसे बाद में स्तर 2 व 3 के लिए भी बनाया गया। स्तर 4 की मार्गदर्शिका अभी निर्माणाधीन है।













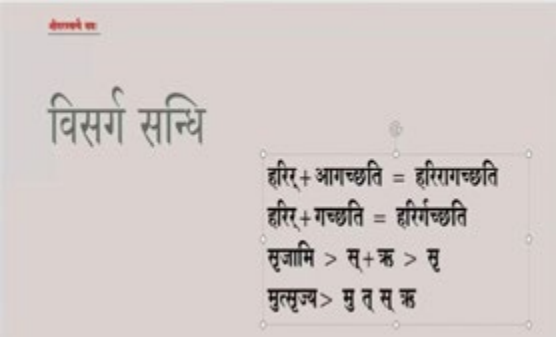
हिंदी व अंग्रेजी भाषा में में आचार्य नारायण जी शेट्टे एवं गीता प्रवीण रूपल जी शुक्ला द्वारा अभी तक अनेक स्तर 1 व 2 हेतु ज़ूम वर्गों का आयोजन कर व्याकरण प्रशिक्षण व शंका समाधान सत्र आयोजित किये गए हैं। प्रत्येक वर्ग में एक साथ 5000 से भी अधिक साधकों की उपस्थिति साधकों की संस्कृत के प्रति अगाध प्रेम व श्रद्धा को प्रदर्शित करती है। यह मागदर्शिका सभी प्रशिक्षार्थियों को नि:शुल्क प्रदान की जाती है एवं ज़ूम पर होने वाले सत्र बाद में भी देखने हेतू गीता परिवार के यूट्यूब चैनल व learngeeta.com पर उपलब्ध रहती है।

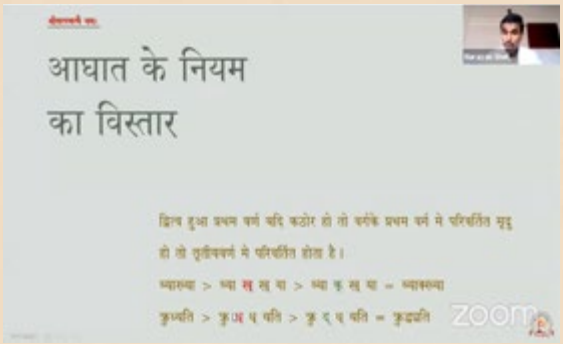
संस्कृत भाषा के व्याकरण में स्वर तथा व्यंजन, ह्रस्व व दीर्घ स्वर सभी बातों को समझाया एवं बताया गया। व्यंजन 5 वर्गों में विभाजित हैं। अनुनासिक व्यंजन(ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) के प्रयोग को स्पष्ट किया गया। बताया गया कि क वर्ग का उच्चारण कंठ के प्रयोग से किया जाता है, ट वर्ग का उच्चारण मूर्धन्य होता है, त वर्ग का उच्चारण दांतो से होता है, च का उच्चारण तालू से होता एवं प वर्ग का उच्चारण होठों से होता है।

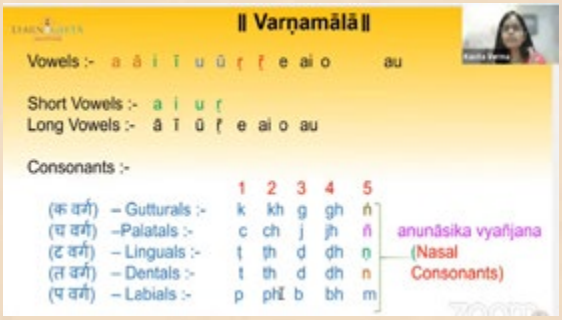
व्याकरण वर्ग में तालव्य वर्ण, मूर्धन्य वर्ण, ओष्ठय, दन्त्य वर्ण, अनुनासिक प्रयोग, स्वरों की मात्राएं, अनुस्वार: (•), विसर्ग (:), आघात (||) सभी आवश्यक नियमों को व्याकरण वर्ग में संपूर्ण पद्धति से सिखाया गया। संस्कृत में 13 स्वर होते हैं। स्वर का उच्चारण स्वतंत्र होता है। व्यंजन का उच्चारण स्वर के साथ मिलाकर किया जाता है। संस्कृत में ह्रस्व व दीर्घ का

उच्चारण ध्यानपूर्वक एवं सही प्रकार से करना चाहिए। महर्षि पतंजलि, पाणीनि, कात्यायनी के शिक्षा शास्त्र के महत्वपूर्ण नियमों के आधार पर इस नियमावली की रचना की गई है, जो श्रीमद्भगवद्गीता सीखने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है। इससे हमारा उच्चारण शुद्ध होता है एवं संस्कृत भाषा का उत्तम ज्ञान प्राप्त होता है।

इसी तरह सभी आदरणीय गुरुजनों के निर्देशानुसार हर महीने गीता परिवार में विशेष व्याकरण सत्र का आयोजन किया जाता है। कई प्रतिभागी इसका लाभ उठाकर संस्कृत भाषा संपूर्ण रूप से सीखते हैं तथा विश्व में इस प्राचीन भाषा का प्रचार और प्रसार करते हैं।











आओ गीतासेवी बनें

भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं 18/68 वें अध्याय मे कहा

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशय: ।।

जो भक्त ये मेरा परमगुह्य गीता शास्त्र, मेरे भक्तों को बताएगा वह मेरा प्रिय होगा।

'आओ गीतासेवी बनें' कार्यक्रम में गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. डॉ. संजय जी मालपाणी ने सबको वंदन करते हुए बोला परम पूज्य स्वामी श्रीगोविंददेव गिरिजी महाराज के नेतृत्व में तथा उनके मार्गदर्शन और आशीर्वाद एवं प्रेरणा से यह उपक्रम चल रहा है।

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

आ. संजय भैया ने पू. स्वामीजी का स्मरण कर कहा कई प्रकार की सेवाएं देकर इस महायज्ञ में साधक अपनी-अपनी समिधाएं अर्पित कर सकते हैं। इस प्रकार के यज्ञ जब-जब होते है तब-तब एक विशेष प्रकार की उर्जा प्रवाहित होने लगती है।

नेवले (Mongoose) की कहानी सुनाकर संजय भैया ने राजसी और सात्विक यज्ञ का अंतर समझाया। किसी विशिष्ट विषय की प्राप्ति के लिए होने वाले यज्ञ को राजसी तथा बिना किसी इच्छा, कामना के होने वाला सात्विक यज्ञ कहलाता है।

गीता संथा के इस यज्ञ में ना किसी से कुछ लिया जाता है, ना किसी को कुछ दिया जाता है, प्रतिपल साधना के पथ पर एक-एक कदम हम आगे बढ़ाते हुए आगे चलते जाते हैं । केवल सिखाना नहीं बल्की अनन्य भूमिका निभाना ये भी भक्ति है, परा भक्ति है ।

ऐसी अद्भुत सेवा देने के लिए गीता परिवार आमंत्रण लिए आपके सन्मुख खड़ा है। गीता सिर्फ पढ़िए नही पढ़ाइये, लोगों तक पहुचायें। इस कार्यक्रम की शुरुआत गीता परिवार के शीर्षक गीत से हुई।

शशि त्रिपाठी दीदी ने कार्यक्रम के आरंभ में कहा कि नि:स्वार्थ भाव से सेवा प्रदान करना अर्थात् भगवान से जुड़ना होता है। किसी तरह से हम नि:स्वार्थ भाव से गीता परिवार से जुड़े।

कौन-कौन से क्षेत्र हैं, जहां हम सेवा प्रदान कर सकते हैं। इसमें धनदान की अपेक्षा नहीं, इसमें सेवादान की अपेक्षा है। सेवादान, समय दान में मन को जोड़े, वही दान सात्विक दान होता है जो किसी अपेक्षा से परे होता है।











दान ऐसा हो, "देशे काले च पात्रे च", अर्थात् देशहित में हो, काल सुसंगत हो और सत्पात्री व्यक्ति के लिए हो, ऐसा जो दान है, वह सात्विक दान कहलाता है। इस सात्विक दान देने के लिए कृतसंकल्प हो जाएं, अतिरिक्त उर्जा, अतिरिक्त समय इस महान कार्य के लिये दें। यह भगवद्कार्य है, यह अपनी-अपनी साधना है।

संजय भैया ने सभी को आवाह्न किया कि आइए इस पवित्र कार्य में जुड़ जाएं।
गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशू गोयल भैया, स्वामीजी की इच्छा पर गीता परिवार के लिए अपना तन , मन, धन सब न्यौछावर कर रहे हैं, उन्होंने सबको गीता सेवी बनने के लिए आवाह्न किया एवं फॉर्म ठीक से भरने का निर्देश देते हुए कहा कि हम लोग 950 से भी अधिक वर्ग चलाते हैं।

IT Dept. के प्रमुख प्रदीप भैया जो पुणे से हैं, वे गीता परिवार को सक्षम बनाने में दिन-रात कार्य कर रहे हैं, उन्होंने अलग-अलग समूह की जानकारी दी।
उन्होंने कहा कि सब मिलकर 28 समूह है जो back end में कार्य करते हैं ।

कुछ महत्वपूर्ण 10 समूह है, उनके जानकार ने बताया कि प्रत्येक समूह का क्या काम होगा और उसे किस तरह किया जा सकता है ।

1. गगन भैया - Software Development
2. सुधा दीदी - रचनात्मक लेखन - Creative Content Writing
3. अमित भैया - तकनीकी सहायक - Tech Assistant
4. गीत भैया - समूह संचालक - Group Coordinator
5. नीलेश भैया - Graphic Designing
6. रागिनी दीदी - शैक्षणिक साहित्य- Academic Literature
7. कल्याणी दीदी - प्रशिक्षक - Trainer
8 प्रसाद भैया - पंजीकरण समूह - Admission Team
9. अनीश भैया - अन्य विशेष योग्यताएँ- Other Special Talent
10. सुरेश भैया - गीता प्रचारक बने - Be a Geeta Pracharak

यह फॉर्म sewa.learngeeta.com पर उपलब्ध रहता है, यदि कोई एक से अधिक सेवाओं में सम्मिलित होना चाहें तो वह प्रत्येक सेवा के लिये दोबारा फार्म भर सकते हैं। आवश्यकता होने पर आपकी भरी हुई सेवा हेतु सम्बंधित विभाग के कार्यकर्ता आपसे संपर्क करते हैं।

अंत में प्रश्नोत्तर का सत्र हुआ एवं प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

एक्स्ट्रा क्लासेस

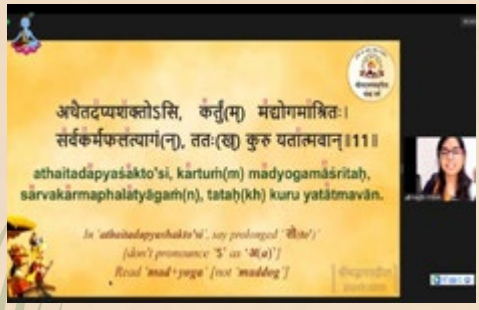
जैसा कि हम सबको विदित है, गीता परिवार गीता को सरलता व शुद्धता से सिखाने हेतु सतत प्रयत्नशील है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन का साथ कभी नहीं छोड़ा। हम सब जानते हैं कि युद्ध के आरंभ में ही अर्जुन विषादग्रस्त हो गए थे। उन्होंने, गुण और सामर्थ्य होते हुए भी उन्होंने अपने गुण और सामर्थ्य का स्मरण नहीं किया और वो निराशा और भय से पीड़ित हो गये।

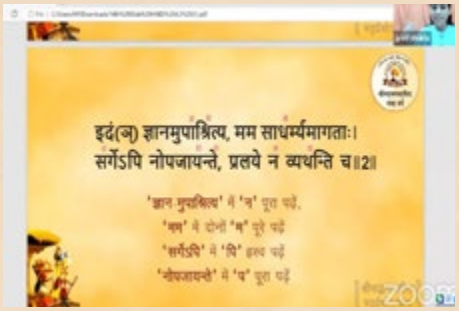
श्री कृष्ण, हर प्रकार से अर्जुन को समझने और संभलने का अवसर देते रहे। उन्हें कर्म करते रहने के लिये प्रेरित करते रहे। अंतत: अर्जुन अपने धर्म के रास्ते पर चलने के लिये तैयार हुए। इसी प्रकार का अनुभव हमें गीता परिवार से जुड़ने पर होता है। गीता परिवार साधकों का हाथ कभी नही छोड़ता। हर साधक अपने (भगवद्गीता सीखने के) मार्ग पर चल पाए और अपने निश्चित गंतव्य तक (जैसे कि L-1, L-2, गीता गुंजन आदि) पहुँच पाये, इसका पूरा ध्यान रखते हैं। साधक को प्रयास करने का अधिक समय मिल सके,गीता परिवार इसके लिये प्रयास कर रहा है।

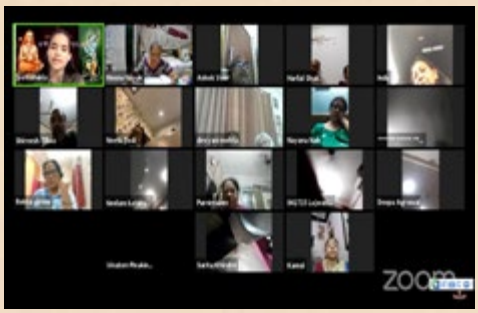
यही कारण है कि गीता परिवार द्वारा आयोजित सभी परीक्षाओं के लिये अतिरिक्त कक्षाओं की सुविधा दी जाती है। प्रथम पड़ाव है 'गीता गुंजन'। इसमे दों अध्याय होते हैं -अध्याय 12 और 15वाँ। प्रत्येक अध्याय की समाप्ति के पश्चात एक अतिरिक्त कक्षा होती है। यह कक्षा अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में होती है।

दूसरा पड़ाव है 'गीता जिज्ञासु'। यह तीन अध्यायों पर आधारित है। अध्याय 12,15,16 के लिये दो अतिरिक्त कक्षाओं के संचालन होता है, एक पुनरावृत्ति के लिये और दूसरी व्याकरण के लिए। इसमें नियम, आघात और उच्चारण के तरीके को दोहराया जाता है, जिससे परीक्षार्थियों को परीक्षा का अभ्यास करने में मदद हो। साधकों के प्रश्नों को समझ कर उन्हें मार्गदर्शन दिया जाता है।

उसके बाद के पड़ाव हैं - गीता पाठक, गीता पथिक और गीताव्रती। इन महत्वपूर्ण पड़ाओं को पार करने हेतु तथा साधक के संशय निवारण हेतु कक्षाओं की श्रृंखला बनायी जाती है, जो 3 या 4 दिन की होती है। एक पूर्व नियोजित समय पर उस कक्षा में प्रतिदिन एक अध्याय का शंका-समाधान होता है।







गीता चिन्तनिका सत्र

चिन्तनिका 1 - https://youtu.be/HdFo4SjRRhw
चिन्तनिका 2 - https://youtu.be/a1F1BJW57WM
चिन्तनिका 3 - https://youtu.be/EHdJEV8QKuw
चिन्तनिका 4 - https://youtu.be/5yI1nuqwW5o

पूज्य स्वामीजी के अनुग्रह से एक नये उपक्रम का आरम्भ रात्रि नौ से दस बजे के बीच में आयोजित किया जा रहा है। प्रत्येक एकादशी को कुल 3 अध्यायों का क्रमशः पारायण एवं उसका चिंतन प्रत्येक बार चुने हुए विभिन्न गीताव्रती साधकों के श्रीमुख से होना निश्चित किया गया है।

इस शृंखला का मुख्य उद्देश्य भावी कुशल वक्ता खोजना है जो कि गीता का सरल शब्दों में व्याख्यान कर सकें।

अजा एकादशी 3 सितम्बर को श्रिया करवा जी (आठ वर्षीया), पहला अध्याय; सुनीता सोमानी जी (उनचास वर्षीया) दूसरा अध्याय और रीमा दातार जी (इक्यावन वर्षीया) तीसरा अध्याय का शुद्ध उच्चारण किया। तत्पश्चात् गीता चिंतन आरंभ हुआ।

गीता चिंतन के प्रथम वक्ता श्री अशोक शर्मा जी ने ऋषिकेश से बताया कि केवल अर्जुन का विषाद ही भगवान् की सन्मुखता होने के कारण योग अर्थात् भगवान् से नित्य सम्बंध कराने वाला हुआ इसलिये पहले अध्याय का नाम अर्जुनविषाद योग रखा गया। भगवान् ने अर्जुन को युद्ध करने के लिए प्रेरित किया क्यूंकि वह उनका क्षत्रिय धर्म हैं।

द्वितीय वक्ता श्रीमती सुनंदा सोमानी जी ने कहा कि भगवान् कृष्ण ने हमे सिखाया कि कोई भी व्यक्ति उदास हो तो पहले उसको सुनना जरूरी है ना कि उपदेश देना। भगवान् ने पहले अध्याय में अर्जुन की बात पूरी सुनी फिर अपनी बात आरम्भ की।

तृतीय वक्ता श्री श्रीकृष्ण नवाडे जी ने कहा कि भगवान् ने अर्जुन को संसार की नश्वरता का विचार कर शरीर को लेकर ज्यादा विषाद नहीं करने का उपदेश दिया।

तत्पश्चात् प्रथम चिन्तनिका को दैदीप्यमान करने हेतु पूज्य स्वामीजी का आगमन हुआ। पू. स्वामीजी ने गीता को मंत्रमय ग्रन्थ बताया और कहा कि पुनः-पुनः गीता की आवृत्ति और मनन ही हमारे जीवन का सम्पूर्ण उद्धार कर देती है। उद्देश्यपूर्ण रीडिंग से चिंतन में गहराई आती है और जब विचारों को किसी के सामने प्रस्तुत करना होता हैं तो वह कब अपने बन जाते हैं पता हीं नहीं चलता इसी को चिंतनिका कहते हैं। आवृत्ति से उत्थान होता रहता है। उन्होंने कहा हम अधिकाधिक परमांनद पूर्ण जीवन के यात्री बन जायें, यही हमारी दृष्टि हो जानी चाहिये।



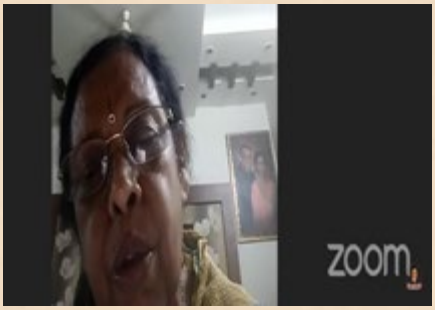









परिवार
कक्षा
zoom

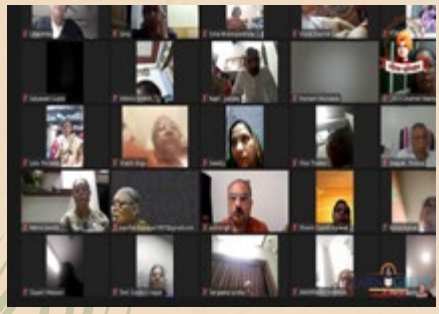

zoom



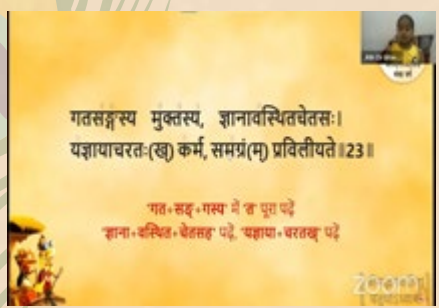

तेषामहं(म्) समुद्धर्ता,
मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि न चिरात्पार्थ,
मय्यावेशितचेतसाम्॥७॥


रागद्वेषवियुक्तैस्तु, विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा, प्रसादमधिगच्छति॥64॥
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥64॥








गतसङ्गस्य मुक्तस्य, ज्ञानावस्थितचेतसः।
यज्ञायाचरतः(ख्) कर्म, समग्रं(म्) प्रविलीयते॥23॥



द्वितीय सत्र 17 सितम्बर में परिवर्तिनी एकादशी को जिगीषा जी (आठ वर्षीया) चौथा अध्याय; अनिकेत जी (उन्नीस वर्षीय) पांचवा अध्याय और प्रेरणा जी (नौ वर्षीया) छठा अध्याय बड़े भक्ति भाव से पढ़ा।

ललिता मालू जी ने चौथे अध्याय के चिंतन में बारह यज्ञ –श्रवण, मनन, स्वाध्याय, पाँचो इन्द्रियों का अनुशासन, आत्मसंयम, दैवपूजा, प्राणायाम और नियमित आधार की महिमा गायी। ज्योति जोशी जी ने कर्मयोग की श्रेष्ठता बताई। शिल्पा राठी जी ने ज्ञान बिखेरा कि हम ही अपने मित्र और शत्रु हैं।

स्वामीजी के प्रिय शिष्य गीता विशारद आ. श्री श्रीनिवास जी वर्णेकर इस अवसर पर विशेष वक्ता के रूप में पधारे और उन्होंने कहा पू. स्वामीजी ने हमारे अंदर के भगवान् को गीता परिवार के रूप में जागृत किया। आग्रह किया कि सभी के कल्याण के लिए ही हम अपना जीवन बनायें। आ. श्रीमती निर्मला जी मारू जी के धन्यवाद ज्ञापन से सत्र समाप्त हुआ। प्रति एकादशी इन चिन्तनिका सत्रों में हजारों की संख्या में गीताप्रेमी उपस्थित होकर आनंद की अनुभूति कर रहें हैं।









गीता संध्या वर्गों के अंतर्गत विभिन्न उत्सव

आनन्दोत्सव

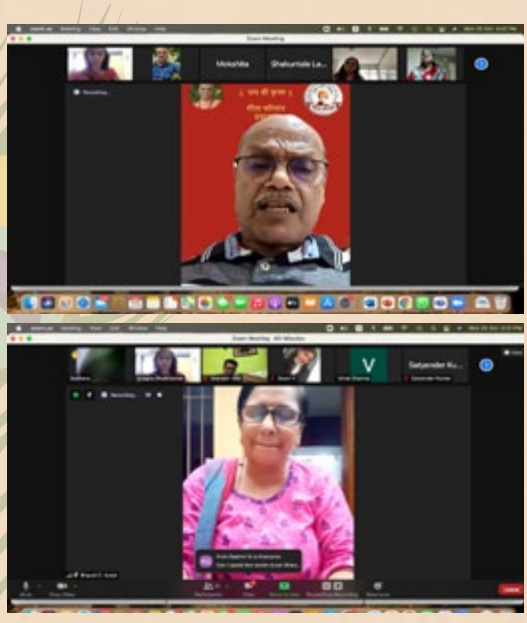
भगवान् श्रीकृष्ण की साक्षात् कृपा एवं परमपूज्य स्वामी जी के आशीर्वाद से गीता परिवार द्वारा ऑनलाइन गीता कक्षाओं में हम गीता के 18 अध्यायों का शुद्ध उच्चारण करना चार स्तरों एवं 200 सत्रों में सीखते हैं।

प्रत्येक स्तर के प्रत्येक वर्ग में समापन समारोह के रूप में आनंदोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस ऑनलाइन समारोह में अपने वर्ग के सभी गीता साधक व कार्यकर्ता किसी विशिष्ट मुख्य अतिथि समक्ष एकत्रित हो अपने वर्ग में आये हुए अनुभवों को कविता, संवाद, वीडियो या अन्य रचनात्मक माध्यमों से साझा करते हैं।

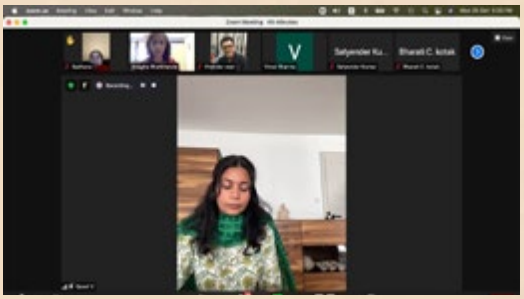
सर्वप्रथम समूह संचालक एक आमंत्रण पत्र इमेज या वीडियो बनाते हैं, जिसे अपने प्रशिक्षार्थी समूह एवं फैकल्टी ग्रुप के साथ-साथ माननीय अतिथियों को भी भेजते हैं। वर्ग के सभी गीता साधक ज़ूम मीट में एकत्र होते हैं जहां साधक प्रार्थना, दीप प्रज्ज्वलन, भजन, नृत्य, संगीत, बाँसुरी, योगनृत्य, कवितायें आदि प्रस्तुत करते हैं। गीता को उन्होंने जीवन में कैसे अनुभव किया? क्या उनके जीवन में परिवर्तन हुआ? ऐसा अपना मनोगत व्यक्त करते हैं।

सबसे अधिक प्रसन्नता सभी को तब होती है जब गीता परिवार के अन्य वर्गों से वरिष्ठ कार्यकर्ता माननीय अतिथि बन समारोह में पधारकर अपना मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। एक दूसरे के साथ एक नये परिवार की तरह जुड़ जाना सभी के लिए अविस्मरणीय अनुभव हो जाता है। ऐसे कार्यक्रम से हमें पता चलता है कि गीता जी के माध्यम से अपने जीवन में कितना परिवर्तन लाया जा सकता है। ऐसे ही एक संस्मरण में किसी साधक ने कहा कि उनके गले में इतनी प्रॉब्लम थी वह यदि दो दिन भी बात कर लेते तो उनका गला बंद हो जाता था किन्तु अब गीता जी पढ़ते रहते हैं। उनके गले में सुधार है डॉक्टर ने उनको चुप रहने के लिए कह दिया था किन्तु अब वह बहुत अच्छे से गा सकते हैं । एक गीता साधक को जिन के चर्म समस्या थी और उनकी चमड़ी जलती रहती थी उन्होंने बताया जब क्लास करती थी उनको याद ही नहीं रहता था कि ऐसी कुछ बीमारी है वह बहुत रिलैक्स अनुभव करती हैं। एक साधक ने इस कोरोना काल मे अपने किसी प्रियजन को खो दिया था, उस दु:ख से निकलने के लिए गीता जी का सहारा उन्हें बहुत शांति प्रदान करता रहा।

जब छोटे-छोटे बच्चे श्लोक कंठस्थ करके बोलते हैं तो सचमुच कृष्ण रुपी लगते हैं। यह आनंदोत्सव लेवल 2 लेवल 3 लेवल 4 में भी मनाते हैं। इसमें हम एक दूसरे की प्रसन्नताओं के कारण व दुःखों को भी साझा करते हैं, एक दूसरे के बारे में जानकर परिवार की तरह मिलते हैं इसलिए यह मिलन समारोह "आनन्दोत्सव" है।


















"हार्दिक अभिनंदन"
"आनंदोत्सव "
5211407545
PC-1
सत्र: L-3 मई (414)
सोमवार
25-10-2021
1:15PM
समूह प्रशिक्षिक - हरीश माहेश्वरी जी।
तकनीकी सहायिका - निवेदिता शर्मा जी।
समूह संचालक - विशाल जी।
समूह समन्वयक - अंजलि जोशी जी।


REC
Sudha Shukla
Dr. Ashu Goyal
indira mohta Daga
Nirmal's iPhone

गीता संध्या दीपोत्सव

15 नवम्बर 2020, https://fb.watch/v/12b9nJDK2/

गीता परिवार द्वारा दीपावली का पर्व प.पू. गुरुदेव के सान्निध्य में ऑनलाइन आयोजित किया गया। दीपोत्सव पर्व का आरंभ श्रीकृष्णाष्टकम् के मधुर संगीत पर एक नाट्य प्रस्तुति के साथ हुआ। अप्रतिम नृत्य विधा कथकली के प्रदर्शन ने सम्पूर्ण वातावरण को भक्तिमय बना दिया ।

तत्पश्चात् गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशू जी गोयल ने सभी को सम्बोधित किया, साथ ही प.पू स्वामी जी के सान्निध्य में पूजन करने का आवाह्न किया।

गीता परिवार के सभी विशिष्ट एवं वरिष्ठ गणमान्य सदस्यों, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. संजय जी मालपाणी, प्रशिक्षकगण, तकनीकी बंधुगण, कार्यकर्ता बंधुओं, गीता जी की सेवा में लगे संयोजक बंधुओं एवं सभी गीता सेवियों से आग्रह किया गया कि सभी परम पूज्य स्वामी जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ ही अपने अपने घरों के मंदिर, छतों, बाल्कनी आदि पर एक-एक दीप जलाएं।

गीता परिवार के तकनीकी संचालकों से निवेदन किया गया कि इस पावन पर्व दीपोत्सव से जितने भी लोग जुड़े हैं उनकी रिकार्डिंग करें। तत्पश्चात् प. पू. स्वामी जी ने दीप प्रज्ज्वलित किया।

आदरणीया विजया ताई गोडबोले द्वारा अपने मधुर कंठ से दीप प्रज्ज्वलन प्रार्थना प्रस्तुत की गयी, जिसने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। इस गीत के साथ ही विजया ताई ने सभी को दीपोत्सव पर्व की शुभकामनायें प्रेषित की । आ.आशू भैया ने विजया ताई जी को आभार व्यक्त किया और कहा कि आज आपके मधुर संगीत ने इस पर्व को अविस्मरणीय बना दिया है ।
तत्पश्चात् प.पू. स्वामी जी से निवेदन किया गया कि वे अपने आशीर्वचन से सभी भक्तों को कृतार्थ करें। पूज्य स्वामीजी के आशीष वचनों से सभी के हृदय में मंगलमय ज्ञानदीप प्रज्ज्वलित हो उठे। उनके हस्तकमलों से इसी कार्यक्रम में गीता परिवार पुणे द्वारा जीवन विद्या 1/2 भाग का प्रकाशन हुआ, जिसे पू. स्वामीजी द्वारा सराहा गया। पू. स्वामी जी ने इस प्रार्थना के साथ अपने आशीष वचनों का आरंभ किया "जीवन प्रबन्धन के बारे में मैंने पूरे लॉकडाउन के समय में 135 दिनों तक Life management according to Vedic Vidya बोलता रहा इन प्रवचनों को कलम बद्ध किया गया उनमें से केवल 20 प्रवचन ही आए हैं इन दो पुस्तकों में। इसमें जीवन प्रबंधन के सभी नियम और परम्पराएं जो हमारे ऋषियों द्वारा बताई गई है उनको समाहित किया गया है। जीवन प्रबंधन की इस पुस्तक के लेखन, संकलन और प्रकाशन का कार्य, गीता परिवार के उत्साही सदस्य आ. सत्यनारायण जी मुदड़ा जो लगातार सेवा में रहते हैं, द्वारा संचालित किया गया है। इसका मुद्रण अत्यंत सुंदर व आकर्षक ढंग से हुआ। आज मैं उसके प्रकाशन की विधिवत् घोषणा करता हूं। "भारत माता की जय।"

इसके पश्चात् भगवत् धाम को सिधारे, उनके अत्यंत प्रिय एवं कृपापात्र शिष्य, धुलिया के पूर्व नगर प्रमुख स्व. केळे काका जी को विनम्र श्रद्धांजलि दी गई। कठिन समय से गुजर रहे उनके परिजनो को सांत्वना देते हुए उनके द्वारा बताया गया कि भगवद्गीता में कहा गया है कि जीवन और मृत्यु का खेल तो अनवरत चलता ही रहता है। परिजनों में शोक भी सदा रहता है। उसको विराम किस तरह दिया जाए यह सीखने की बात है। दुःख को, विषाद को सहन कर, पचा कर पुनः नव उत्साह और ऊर्जा से कर्म में प्रवृत्त हो जाना ही गीता को जीवन में समाहित करने का प्रयास है। इस बात से हम यह बताना चाहते हैं कि हमें अपने दुःख पर विजय पाकर अपने कर्तव्य को करना चाहिए। इसका उदाहरण हमारे समक्ष केळे काका का परिवार है।

इसके बाद सामने पधारे हजारों साधकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने गीता परिवार के कार्य के बारे में कहना आरंभ किया। 'विद्या धर्मेण शोभते' यही गीता परिवार का मूल उद्देश्य है। विद्या धर्म से सुशोभित होती है, धर्म का मूल है अपना

बढ़ाते जाएं। हम अपने कर्तव्य मार्ग पर सरलता से चलते जाएं यही हमारा पुरुषार्थ है। हम सब मिलकर इस गीता के मार्ग पर चलते रहें।

दीपोत्सव पर्व पर यह उत्तम संदेश प. पू.स्वामी जी द्वारा दिया गया। तत्पश्चात् गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. संजय जी मालपाणी से आशीर्वचनों का एवं परिवार को शुभकामनायें देने का निवेदन किया ।

संजय भैया जी ने प. पू. स्वामी जी के श्री चरणों में प्रणाम निवेदित कर अपनी मधुर वाणी और संयत संयोजित शब्दों में अपना संभाषण आरंभ किया। उन्होंने कहा कि गत 6 माह में ही साठ देशों के 35 हजार से अधिक साधकों को गीता सीखने का अत्यन्त सरल सुलभ प्रकल्प गीता परिवार ने नि:शुल्क उपलब्ध करवा दिया है। धन्यवाद के सैकड़ों सन्देश जब हमारे पास देश-विदेशों से आते हैं तो भगवान् की कृपा से चल रहे इस मंगलकार्य से जनमानस को हुए प्रत्यक्ष लाभ को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। हम सबने जो ज्ञान दीप जलाया है वो अब अनवरत सदा सदा प्रकाशित रहे। इस सन्देश के माध्यम से उन्होंने सभी को दीपावली पर्व की शुभकामनायें अर्पित की।

तत्पश्चात् आ. प्रशिक्षक श्री विकास वैद्य जी ने अपना मनोगत व्यक्त किया और कहा कि में एक दिन में होने वाली सभी कक्षाओं में प्रशिक्षक रूप में सम्मिलित हो सकूं यही भगवान से प्रार्थना है।

गीता विशारद आ. श्री श्रीनिवास वर्णेकर जी ने सभी को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं दी। तत्पश्चात् यू.एस.ए.से श्रीमती रश्मि काकानी जी ने अपने सुखद अनुभवों को मनोगत रूप में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जब मैंने गीता परिवारके learngeeta को ज्वाइन किया था तब मैं एक दुरूह जीवन जी रही थी, दु.:खी थी, मार्ग नहीं सूझ रहा था, तभी मुझे मेरी एक मित्र ने इन कक्षाओं से जोड़ दिया बस तबसे हमारा तो जीवन ही बदल गया।

यू.एस.ए से ही श्रीसोमेश जी व श्रीमती चंचल जी ने भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपने भाग्योदय को सराहा। तकनीकी विभाग प्रमुख पुणे से आ. प्रदीप राठी जी ने बताया कि हम अगली दीपावली को एक लाख लोगों के साथ होंगे। किन्तु किसे पता था की लगभग 2 लाख 50 हजार संख्या तो अगस्त 2021 में ही हो गयी और पता भी न चला। यह कार्य तो स्वयं भगवान की विभूति है और उसका वर्णन तो मात्र भगवान ही करने में सक्षम हैं।

इसी कार्यक्रम में सोमेश भैया व अन्य कार्यकर्ताओं के आग्रह पर कविता वर्मा दीदी, रुपल शुक्ला दीदी, ज्योति शुक्ला दीदी और अंजली जी के परिचय और उनके प्रेरणा स्रोत के बारे में जो जानकारी मिली जिसे सुनकर सभी आनंदित हो उठे । अंत की प्रार्थना एवं ईश्वर के स्मरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।













गीता जयन्ती महोत्सव

25 दिसंबर 2020, https://youtu.be/TvIpMwwdcjE

गीता परिवार द्वारा गीता जयंती महोत्सव मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी, संवत् 2077 तदनुसार 25 दिसंबर 2020 को शाम 7 से 8 बजे तक ऑनलाइन पद्धति से मनाया गया।

यह महोत्सव परम पूज्य श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज जो गीता परिवार के सर्वेसर्वा हैं, के सान्निध्य में तथा पूज्य आचार्य श्री बालकृष्ण जी की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

महोत्सव का आरंभ श्रीमती नीता जी मूंदड़ा के द्वारा प्रार्थना से की गई। आदरणीय श्री संजय भैया मालपाणी जी ने महोत्सव तथा गीता परिवार की संक्षिप्त प्रस्तावना एवं अन्य उपक्रमों के बारे में बताया।

पूज्य श्रीगोविंददेव गिरी जी महाराज और पू. आचार्य श्री बालकृष्ण जी की प्रशंसा कर उन्हें वंदन किया। तत्पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ। तत्पश्चात् अनेक बालक बालिकाओं ने अपने नृत्य द्वारा श्रीकृष्ण का विराट रूप दर्शाया ।

गीता परिवार के उपाध्यक्ष आदरणीय श्री आशू भैया ने ऑनलाईन गीता संथा वर्ग को बहुत ही कम समय में कहाँ से कहाँ पहुंचा दिया तथा गीता माँ का प्रचार - प्रसार कितनी तीव्र गति से हुआ है, यह बताकर उनके प्रयासों की सराहना की।

आ. आशू भैया ने पूज्य श्रीगोविंददेव गिरि जी महाराज और आचार्य बालकृष्ण जी महाराज को वंदन करते हुए उनका स्वागत किया। श्री संजय जी मालपाणी भैया ने बताया कि आज इस महोत्सव में 70 देशों से 50,000 गीताप्रेमियों द्वारा बारहवें एवं पंद्रहवें अध्याय का ऑनलाइन सस्वर पाठ करेंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पू. आचार्य बालकृष्ण जी ने अत्यंत हर्षपूर्ण अंत:करण से कहा- भगवद्गीता में कर्म की निवृत्ति बतायी है, लेकिन निवृत्ति का अर्थ कर्म को छोड़ना नहीं है। कर्म से विमुख नहीं होना है। निवृत्ति का अर्थ निर्लिप्तता है। निर्लिप्त हो जाए तो सुख में, दु:ख में, राग में, द्वेष में, अनुकूलता में, प्रतिकूलता में, संसार में उलझाने वाले जो तत्व हैं उनसे हम निवृत्त हों।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो भगवद्गीता में नहीं है। गीता का एक-एक शब्द सफल मानव जीवन के लिए पर्याप्त है। एक श्लोक भी अगर हम अपने जीवन में उतार लें तो हमारा जीवन सफल हो जाये।













पू. आचार्य बालकृष्ण जी ने गीता परिवार, प. पू. स्वामीजी, श्री संजय मालपाणी, श्री आशू भैया तथा उनकी टीम की सराहना करते हुए कहा कि, भगवान हम सबको भक्तिभाव से और अनासक्त भाव से भर दें। भगवद्गीता कहती है प्रयास मत छोड़ो। महर्षि पतंजलि कहते हैं निरंतरता, दृढ़ता होनी चाहिए। आज की स्थिति पर आचार्य बालकृष्ण बोले, आज हम सबकी अवस्था अर्जुन जैसी है।

आगे उन्होंने बताया, हम उस परंपरा के सहभागी हैं कि, यहाँ स्वयं भगवान ने उपदेश किया है, आज संसार में लोग कर्म तो करते नहीं पर फल की इच्छा रखते हैं, कर्म करना हमारा कर्तव्य है लेकिन फल देना परमेश्वर की व्यवस्था है। इसी क्रम में आदरणीया श्रीमती सुवर्णा काकी मालपाणी जो गत 34 वर्षों से गीता पढ़ा रही हैं, उन्होंने कोरोना काल में प्रशिक्षक तैयार करने का काम बखूबी निभाया है, उन्होंनें और उनके समूह में शामिल आ. सौ. सुनिता अटल जी, मंजू मणियार जी, मंजू सोमाणी जी, जयश्री मणियार जी, जयश्री अटल जी, रचना मालपाणी जी, छाया अग्रवाल जी, प्रज्ञा डांगे जी और नीलांबरी जी ने हारमोनियम पर संगत देते हुए, 12वें अध्याय का (जिसका नाम भक्तियोग है) और 15 वें अध्याय (जो पुरुषोत्तम योग नामसे जाना जाता है) का एक स्वर में सुमधुर पाठ किया।

फिर संजय भैया ने प. पू. स्वामीजी महाराज को वंदन किया और अनुरोध किया कि वे हमें मार्गदर्शन करें व आशीर्वचन प्रदान करें।

अत्यंत आनंद से भरे अंत:करण से स्वामी जी ने बोलना आरंभ किया, उन्होंने कहा दीप प्रज्ज्वलन के समय मैं पूज्य बालकृष्ण जी की तथा आप सबकी, जिन्होंने गीता जयंती महोत्सव के लिए परिश्रम उड़ेल दिये हैं आरती उतार रहा था। वे सारे लोग जिन्होंने आज पाठ किया वो सारे मेरे लिए अभिनंदनीय है। भगवान उनसे प्रेम करते हैं जो भगवान का कार्य करते हैं, भगवान सक्रिय, क्रियाशील भक्ति चाहते हैं, भगवान के प्रति प्रेम हमारी क्रियाओं में दिखना चाहिए। उन्होंने कहा कि "आचार्य बालकृष्ण के बारे में सोचता हूँ तो मेरा अंत:करण भर आता है, उन्होंने स्वयं आयुर्वेद को माध्यम बनाकर भारत की गरिमा को सारे संसार में स्थापित कर दिया है। उन्होंने आयुर्वेद की यह चुनौती स्वीकार की फिर भी अपना जीवन सादगी में रखा। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य जी का और मेरा प्रेम पुरातन है क्योंकि हम लोग एक ही कार्य अलग अलग आयामों में कर रहे हैं, भारत माता की सेवा कर रहे हैं। स्वधर्म, अपना कर्तव्य करना बड़ा ही प्रशंसनीय है। सभी को सोचना चाहिए कि मैं केवल अपने लिए न रहते हुए, सारे सृष्टि के लिए बन जाऊँ, अर्थात सर्व भूतहिते रता:, हमें बालकों को संस्कार देने चाहिये, अगली पीढ़ी को तैयार करना चाहिए। कार्यक्रम के प्रति आश्चर्य प्रदर्शित करते हुए उन्हें गदगद मन से बोला - "यह कारवाँ इतना बढ़ गया है कि मैंने भी कभी कल्पना नहीं की थी, यह सारा मेरे साथियों का पुरुषार्थ है, यह पुरुषार्थ यह प्रेम निरंतर बढ़ता जाए। Universal Brotherhood हमारे भीतर जागृत रहे । विश्व बंधुता का भाव गीता परिवार द्वारा जागृत किया गया। Sky is the limit, हम निरंतन आगे बढ़ते जाएँ ऐसी प्रार्थना मैं करता हूँ" यह कहते हुए प. पू. स्वामी जी ने अपने शब्दों को पूर्ण विराम दिया।

इसके पश्चात् ध्रुव ग्लोबल एकेडमी के बालकों द्वारा प्रस्तुत गीता जी की आरती ने सभी के मन को गीता भक्ति की भावना से भर दिया। सभी मानों उसमें रम गए । अंत में गीता परिवार दक्षिणांचल प्रमुख एवं पू. स्वामीजी के प्रिय शिष्य आ. श्री हरि नारायण व्यास जी ने आभार प्रदर्शन किया। पूरे कार्यक्रम को सुन्दरता से समाप्त करते हुए सुलेखा सोनी जी ने समापन प्रार्थना की और इसी के साथ गीता जयंती महोत्सव का समापन हुआ ।

प्रचलित नववर्ष उत्सव

31 दिसम्बर 2020, https://youtu.be/_3ExUaxTX_Y

21वाँ प्रचलित नववर्ष उत्सव 2020, का आयोजन गीता परिवार ने वर्ष के अंतिम दिन अर्थात् 31 दिसंबर 2020 को अति उत्साह से किया। तय किया गया कि, नववर्ष का स्वागत प्रथा के अनुरूप हनुमान चालीसा गायन के द्वारा करेंगे। परन्तु हनुमान चालीसा ही क्यों?

कुरुक्षेत्र के रणांगण में जब गीताशास्त्र का उपदेश भगवान ने अर्जुन को दिया, तब उसके श्रोता अर्जुन ही नहीं अपितु हनुमान जी भी थे, यही कारण है कि जब भी गीता कक्षाओं का शुभारंभ होता है तब वहां हनुमान जी का स्मरण अवश्यंभावी होता है। हनुमान चालीसा में एक पंक्ति है कि- "राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे"

अर्थात् हनुमान जी, प्रभु श्रीरामजी के द्वार पर खड़े पहरा दे रहे हैं, उनका भजन किए बिना या उनकी आज्ञा लिये बिना किसी का प्रभु तक पहुँचना संभव नहीं है। अत: उनका शुभ स्मरण करके अपने प्रभु तक पहुँचने के लिये हनुमान जी से आज्ञा लेते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

इस कार्यक्रम का आरम्भ आ. आशू भैया ने सभी का स्वागत करते हुए किया एवं नववर्ष के आगमन पर हनुमान चालीसा का पाठ करने की प्रथा के बारे में बताया, यह प्रथा 1997 से गीता परिवार में चली आ रही है। लोगों को नववर्ष आरंभ करने में विकल्प मिले एवं उस दिन की राजसिक चकाचौंध से बचें इस हेतु से इसका आरंभ किया।

तत्पश्चात् श्री अभिनव भैया और श्री गिरिराज भैया ने बड़े सुर ताल में हनुमान चालीसा का भक्तिपूर्ण गायन किया। जूम एप पर 1000 लोग मीटिंग में कनेक्ट हुए थे, बाकी लोगों ने यूट्यूब पर लाभ उठाया।

आ. आशू भैया ने नववर्ष पर लिये जाने वाले संकल्पों पर सबको प्रोत्साहित करते हुए, स्वयं की बुराईयों को छोड़ने के लिये दृढ़संकल्प लेने के लिए कहा। रूपल दीदी ने एक वीडियो के द्वारा "अर्जुन भव" नाटिका के कुछ दृश्य दिखाये। आदरणीय आशू भैया ने सबको नववर्ष की मंगलमय शुभकामना देकर कार्यक्रम का समापन किया ।







गीता भक्ति दिवस

7 फरवरी 2021, https://youtu.be/7JRlofRYJlw

योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की मधुर वंदना और गीता परिवार के उत्तम गान से कार्यक्रम का आरंभ हुआ ।
भक्ति दिवस के अवसर पर भक्ति के रंग में रंग गया वातावरण। इस समारोह में गीता परिवार की सभी शाखाओं ने भाग लिया और उत्तम कार्यक्रमों से अनुपम छटा बिखेर दी ...

आज के इस उत्तम दिवस पर गीता परिवार की सभी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शाखाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया । सभी ने परम पूज्य स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरि जी महाराज के जन्मदिवस को "भक्ति दिवस" के रुप में मनाने की तैयारी की थी । कार्यक्रम की उद्घोषणा एवं संचालन राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री संजय जी मालपाणी के द्वारा किया गया। उन्होंने सभी उपस्थित लोगों का स्वागत किया ।

आज सारा विश्व इस कार्यक्रम को देखने के लिए उमड़ पड़ा है आज हम प. पू. स्वामी जी का 72वां जन्मदिवस गीता भक्ति दिवस के रूप में मना रहे हैं। 72 देशों से 72हजार लोग जुड़ेंगे, 72दीपों का प्रज्ज्वलन होगा और 72 हजार गीता जी के दो अध्यायों के पाठ होंगे, ऐसी परिकल्पना की गई थी जो परिकल्पना साकार हो सकी है आज जर्मनी से हमारे साथ जुड़े हैं यशराज पारीख जी वे प्रार्थना करते हैं और कार्यक्रम का आरंभ करते हैं, आज इस कार्यक्रम में जूनापीठाधीश्वर अवधेशानंद गिरि महाराज जी भी जुड़े हैं जिस कारण हम सबका सौभाग्य जागृत हुआ ।

राजस्थान की कोटा शाखा द्वारा 72 दीप प्रज्ज्वलित किये गये ।

ततपश्चात् दक्षिणांचल के उपाध्यक्ष आ. हरिनारायण व्यास जी द्वारा स्वागत संबोधन किया गया ...
उन्होंने बताया "आज हमारे प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी गोविन्द देव जी महाराज का 72वां जन्मदिवस का पावन दिन आया है । इस अवसर पर उनके छोटे भ्राता श्री जूनापीठाधीश्वर महामंडलेश्वर श्री अवधेशानंद गिरि जी महाराज स्वामी जी भी उपस्थित हुए हैं यह हम सबका सौभाग्य है।

तत्पश्चात् हम सबके मध्य उनका परिचय प्रस्तुत किया उन्होंने बताया कि स्वामी जी सबसे पुराने जूनापीठ के पीठाधीश्वर है और भारत माता मंदिर हरिद्वार, और समन्वय परिवार के अध्यक्ष हैं एवं समस्त विश्व में आपकी ओजस्वी वाणी से प्रस्तुत प्रेरणादायक प्रवचनों की श्रृंखला गंगा का प्रवाह होता है, इससे करोड़ों जनमानस लाभान्वित हुए हैं, होते रहते हैं, हम सभी गीतासेवी आपको प्रणाम करते हैं ।

मित्रों पारस पत्थर के बारे में सबने सुना होगा हमारे स्वामी गोविन्द देव गिरि महाराज जी ऐसे ही पारस है जिन्होंने अपने श्री कमलहस्तों से ऐसे कई कार्य किए जो स्वर्णाक्षरों में लिखे जाएंगे। गीता और वेद के पथ पर समाज को अग्रसर करने का कार्य किया जिसके कारण जन - जीवन स्वर्णमय हो गया है, जिस कारण हम सभी स्वयं को सौभाग्यशाली समझते हैं ।

हमारे गुरुदेव अपने जन्मदिन को विशेष रुप से मनाने के लिए सहमत नहीं होते तो हमारे राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री संजय मालपाणी जी ने विचार रखा कि आज के इस पावन दिवस को हम सब गीता भक्ति दिवस के रुप में आयोजित करेंगे और 35 वर्षों से जो कार्य हो रहे हैं उनको स्वामी जी को समर्पित करते हुए उनका सम्मान करें और जन्मदिन को मनाने का विचार किया। इसप्रकार हम सभी को स्वामी जी के दर्शन और इस पावन दिवस को स्मरणीय बनाने का अवसर भी मिल गया ।









आज से 35वर्ष पूर्व स्वामीजी ने जनमानस को संस्कारों का सृजन हो वे शक्तिशाली युवा बन सकें, इस हेतु स्वामी जी ने महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की नींव रखी। श्रद्धेय स्वामी जी ने आज से तीन दशक पूर्व ही यह अनुमान लगा लिया कि आने वाले समय में बालकों में संस्कार और वैदिक परंपराओं का ज्ञान समाप्तप्राय सा हो जाएगा तो हमें आज ही सजग होना होगा और आपने घर घर गीता जीवन में गीता के संकल्प का बेड़ा उठा लिया। प. पू. स्वामी जी की यह संकल्पना आज सत्य हो रही है। आज समाज में अपने पवित्र ग्रंथों की जानकारी उनका अध्ययन अध्यापन नगण्य सा होता जा रहा है। तब स्वामी जी के द्वारा प्रसारित गीता ज्ञान यज्ञ अंधेरे में प्रकाश पुंज सूर्य के समान अपना स्थान बना रहा है। 35 वेद विद्यालयों के माध्यम से वेदों की सेवा की जा रही है वैदिक मंत्रोच्चार, कर्मकांड, दैनिक पूजन शुद्ध पठन पाठन चल रहा है।

इसप्रकार की उत्तम जानकारी विश्वभर से जुड़े साधकों तक आ. हरिनारायण व्यास जी ने पहुंचाकर अपने दायित्व का निर्वहन किया। तत्पश्चात् गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. संजय भैया जी ने अतिप्रशंसनीय शब्दों से आभार व्यक्त किया । और कहा कि "स्वामी जी का परिचय देना शब्दों के द्वारा असंभव है उनके दैवीकार्य स्वयं ही उनका परिचय देते हैं । पूज्य स्वामी जी ने पूरे विश्व को गीता पाठ और वेद पठन के माध्यम से कोरोना काल में जिस प्रकार गति प्रदान की है वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

आइये उनके परिचय को एक सुन्दर गीत के द्वारा जानते हैं गीत शब्दों की यह मालिका प.पू. स्वामीजी के ही प्रिय शिष्य श्री प्रणव पटवारी जी ने तैयार की है, जिसे आ.विजया गोडबोले जी ने उत्तम संगीत में संयोजित कर गाया है और संगमनेर ध्रुव ग्लोबल स्कूल के बच्चों ने उसको नृत्य में प्रस्तुत किया है।

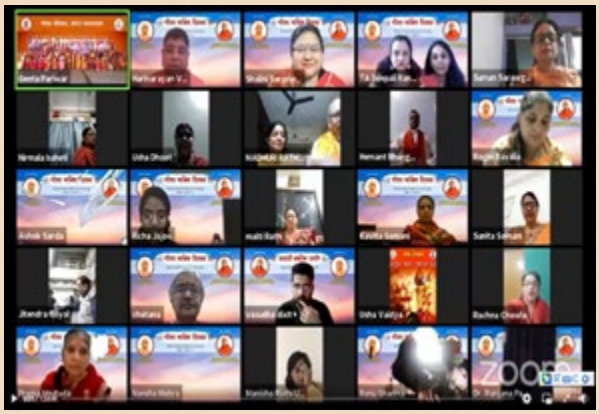
हे गुरु वर से संतप्रवर हे..भारत के गौरव साकार
चरणों में नित अवनत अवनी
गगन करे तव जय-जयकार...(3).....
मुख मंडल पर आभा अरुणिम, लोचन में विधु शीतलता
वाणी में गंगा मैया की अविरल सुंदर निर्मलता
कथा सुनें जो व्यथा हरे सब
कर दे सबको कृष्णाकार

करदे मनको कृष्णाकार
गगन करे तब जय जय कार.....
श्रीज्ञानेश्वर कृपा सरोवर
तुम अरविंद सुगंध निधान
रस लोलुप हम भ्रमर निरंतर
करते हैं गुंजारव गान
गीतामृत मकरंद प्राप्त हो श्रुतियों का जो है रस सार
गगन करे तव जय-जयकार जय-जयकार....
वेदकोश आसेतु हिमाचल
चले महाभारत के साथ
रामकथा से मूल सीखकर सेवा में जुट जाएं हाथ
भारत का हर बालक पाए
भारतीयता का संस्कार
गगन करे तव जय-जयकार...
रामलला निजधाम विराजे
त्रिभुवन गूंजे मंगलगान सदियों से थे आस लगाए
कितने- कितने कर बलिदान
क्षण- क्षण कण -कण राम समर्पण
भरे भाग्य के कोश अपार
गगन करे तव जय-जयकार
क्लेश बचे मन में न कोई
लवलेश तमोगुण काया में
आस कौन सी रहे अधूरी
कल्पतरु की छाया में
पूर्ण चंद्र गोविंद कृपा कर
चकोर व्याकुल सुना सुना
गगन करे .....









इतनी मोहक भक्तिमय गुरु स्तुति मधुर गायन के साथ सबके हृदय भक्तिमय हो उठे। जिसका गायन लखनऊ से आ. विजया गोडबोले जी ने किया। नृत्य संयोजन सोनाली महापात्र जी ने एवं इसकी वीडियो एडिटिंग की विजय महापात्र जी ने अविस्मरणीय प्रस्तुति हो गई है।

आज विशेष दिन पर पू. स्वामी जी तो हमारे हैं ही परंतु श्रद्धेय जूनापीठाधीश्वर अवधेशानंद गिरि महाराज महामंडलेश्वर जी हमारे साथ हैं इससे आज का दिन और भी विशेष हो उठा है (स्वामी जी ने अपनी सुसंस्कृत मधुर वचनों से प्राकृतिक सौंदर्य का बखान करते हुए आधुनिकता की विशेषता और आवश्यकता को बताते हुए अपने आशीष वचन कहे) "परमपूज्य श्रीगोविन्ददेव जी महाराज जो विश्व वंदनीय सत्पुरुष जिन्हें पाकर हम धन्य हैं। पूरी धरा धन्य है, उनकी विद्या, विभूति, विचार, वैराग्य, विरति उनका विलक्षण व्यक्तित्व, विशेष चिंतन, आचरण आदि सब विलक्षणता लिए हुए है।

वह चारित्र्य की पारदर्शिता रखने वाले हैं जो आज के दिन धरा पर आविर्भूत हुए। संन्यासियों का कोई जन्म मरण होता नहीं फिर भी उनका जन्म राम कार्य हेतु हुआ जान पड़ता है भगवान् ने उन्हें चुना है ऐसा लगता है।

पाँच सौ वर्षों का संघर्ष हमारे हिन्दू समाज ने देखा, घोर अपमान सहन किया, एकलाख चौहत्तर हजार बलिदान हुए राम लला के लिए एक सुयोग आया कि हमारे भ्राता राम लला के कोषाध्यक्ष चुने गए यह केवल सरकार का काम नहीं है यह चयन श्रीराम द्वारा स्वयं किया गया जान पड़ता है जब हम ऐसा सोचते हैं तो एक विराटता की अनुभूति होती है।"मैं उन्हें पाकर अभिभूत हूं विद्या में वे ज्येष्ठ है। महाराज जी आपका यह जन्म दिन मंगलमय हो । आपके साथ इस पास देश-विदेश के साधक ज्ञान पिपासु भिक्षु सभी है उनके मध्य मुझ अकिंचन के भी शब्दों को पहुंच सके इस आशा से आपको जन्मदिन की मंगलकामना प्रेषित करता हूं।

सुदिनं सुदिनं जन्मदिनम्,
तव भवतु मंगलं जन्मदिनम्।
तव विजयी भव सर्वत्र सदा,
भवतु मंगलं जन्मदिनं तव।।
Happy Birthday to you swami ji
(मैं आंग्ल भाषा का भी प्रयोग यहां करुंगा।)

आप जियें हजारों साल, जब तक धरा में उर्वरा है, सूर्य में प्रकाश है, चांद में शीतलता है तब तक आपकी कीर्ति अक्षुण्ण रहे । कहते हुए अपनी वाणी को विराम देते हैं ।

इसके पश्चात संजय भैया जी ने अत्यन्त सुन्दर शब्दमालिका द्वारा पूज्य स्वामी जी का आभार व्यक्त किया और बताया कि किस प्रकार कोरोना काल में उत्तर भारत के अध्यक्ष आशू जी गोयल ने गीता जी का प्रचार प्रसार कर इसे 72 देशों तक पहुंचाया है ।

आशु भैया ने अपनी संयमित स्पष्ट मधुर वाणी में सबको प्रणाम निवेदित किया और गीता परिवार के प्रचार प्रसार अभियान की जानकारी दी । "मुद मंगलमय संत समाजू जो जग जंगम तीरथ राजू" के साथ अपना संभाषण आरंभ किया।"यह अवसर मंगलमय है ।आज हम 35 वर्षों से बाल संस्कार केन्द्र के माध्यम से गीता पढ़ने-पढ़ाने और बालकों में संस्कार सृजन के कार्य करते आ रहे थे परंतु करोना काल आते ही सब ठप हो गया तो स्वामीजी की प्रेरणा से विचार आया और जून माह की एकादशी तिथि से आरंभ की गई आनलाइन कक्षाएं। भय था कि लोग आएंगे अथवा नहीं परंतु पहली बार में ही 500 गीता साधकों के साथ ये कक्षाएं आरंभ करने हेतु परिकल्पना मन में की गयी किन्तु मात्र दो दिनों में ही 2000 साधकों ने फॉर्म भर दिया। आ.संजय भैया जी के निर्देशन में आरंभ किया पहली बार में 2000 एडमिशन हुए अभी जनवरी तक 72,000 एडमिशन होंगे हैं ये सब प. पू. स्वामी जी की कृपा और संजय भैया जी के निर्देशन में संभव हो सका।

10 भाषाओं में गीता शिक्षण कार्य चल रहा है जिसमें 1500 से अधिक सेवाभावी कार्यकर्ता बंधु है जो दिन रात कार्यरत है जो सीख रहे, वहीं प्रशिक्षक बन रहे, तकनीकी ज्ञान, व्याकरण ज्ञान तक प्राप्त कर रहे हैं ये सब स्वामी जी की कृपा से ही संभव हुआ है और हम सबको आप सभी महान संतों का आशीर्वाद बराबर मिल रहा है इतना बड़ा यज्ञ, जिसमें सभी बड़े-बड़े संत, स्वामी, योगाचार्य, चिंतक, विचारक आ रहे हैं और निरंतर आशीष वर्षा हो रही है तो वहां हमारी जय तो निश्चित ही लगती है। यहाँ लगता है भगवान ने 18वें अध्याय के 68वें श्लोक में जो कहा है वह नित्य साकार हो रहा है -

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।।18.68।।"

इसके पश्चात् 72 हजार पाठ किए गए, आदरणीया विजया दीदी और पूजा दीदी के साथ रुपल दीदी, ज्योति दीदी, कविता दीदी, ख्याति दीदी, अंजली दीदी जो सभी गीता प्रवीण बन चुकी है उनकी भक्तिमय प्रस्तुति हुई। ततपश्चात् जयसिंहपुर के छात्रों की ऊर्जावान प्रस्तुति हुई जिसे मध्यांचल की प्रभारी आ. प्रमिला ताई जी द्वारा चलाए जा रहे अर्जुन मंच द्वारा प्रस्तुत किया गया। अतिउत्साह प्रदान करने वाली शक्ति आराधना ताण्डव स्तोत्र के माध्यम से प्रस्तुत हुई।

इन सभी प्रस्तुतियों के पश्चात् प.पू. स्वामीजी ने अत्यंत प्रफुल्लित हृदय से बोलना आरंभ किया तो सभी के मन एक डोर में बंध गये। भगवद्गीता वीरता का ग्रंथ है, गीता के श्रोता, वक्ता, दूसरे श्रोता रथ स्तंभ पर विराजमान हनुमान जी पराक्रम के साकार विग्रह हैं। सत्य यह है कि जब मन में पराक्रम बढ़ता जाएगा तब गीता जीवन में आएगी। स्वामी विवेकानंद जी का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं एक बालक स्वामी जी के पास आया उसने स्वामीजी से गीता सीखने का निवेदन किया उन्होंने उसकी शारीरिक स्थिति (जो अत्यंत दुर्बल थी) देखकर कहा कि तुम पहले छह माह तक फुटबॉल रोज खेलों तब मेरे पास आओ तभी तुम गीता सीखने योग्य हो सकोगे, ६ माह फुटबॉल खेलने का अर्थ न समझने पर समझाया कि यदि तुम जैसे दुर्बल लोग गीता सीख भी लें तो उसे जीवन में उतारने से तो वंचित रह जाएंगे। जीवन में गीता शक्ति के साथ समाहित होती है।'

इसके पश्चात् साधकों के हृदय में गीता के प्रति भक्ति प्रवाहित करते हुए प. पू. स्वामीजी अपनी बात को आगे बढ़ाते हैं - "यें भगवद्गीता जिसकी समझ में आ जाए उसका तो जीवन सुधर जाए, यह ग्रंथ मानव कल्याण हेतु है । यह भगवान की वाणी है । संसार के कितने ही ग्रंथ पढ़ लीजिए और एक भगवद्गीता पढ़ ली जाए तो अन्य की आवश्यकता नहीं । ज्ञानेश्वर महाराज ने कहा समस्त ग्रंथों का सार महाभारत में आया और भगवद्गीता वेदो का सार है वेदों के अध्ययन के साथ पढ़ने पर गीता पूर्णतः समझ में आ जाती है। आज पवित्र दिवस पर यह संकल्प करें कि गीता सदा पढ़ते रहेंगे और पढ़ाएंगे। उसे छोड़ना नहीं । आप गीता पढ़ते रहें आपके पास तो कृष्ण और विजय स्वयं ही चले आएंगे।"

पूणा का गीता परिवार वेद की ऋचाओं के साथ वैदिक आरती उतारता है ।

गीता भक्ति दिवस जैसा नामकरण आपने आज के दिन का रखा तो इसमें गीता और भक्ति जैसे दो महत्वपूर्ण शब्द समाहित हैं। ये आए तो ये भगवद्गीता से ही है उन्होंने कहा मैं नित्य पढ़ता हूं और ज़्यादा पढ़ने का प्रयास करता हूं।
इस उत्तम दिवस पर गीता परिवार की इन सभी शाखाओं ने अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए- **आस्ट्रेलिया, यूएसए, जर्मनी, कुवैत, बहरीन, ओमान, स्वीडन, यूके, यूएई,** लखनऊ, हैदराबाद, जयसिंहपुर, पुणे, पानीपत, कोलकाता, पूज्य भूमि धूलिया, मानवत, नागपुर, यवतमाल, औरंगाबाद, दिल्ली, इचलकरंजी, कुलबर्गी, खामगाँव, लातूर, सोलापुर, परभणी, अहमदनगर, शेवगाव, पाथरी सांगली कोल्हापुर, नांदेड़ आर्वी, अकोळे, श्रीरामपुर, दक्षिणकोल्हापुर, येवला, राहुरी, बल्लारी, जालना, जिंतूर, कुरुंदवाड, नासिक, पिंपरी-चिंचवाड़, पिपरिया, आग्रह, देवभूमि आळंदी, मोशी आळंदी, अलीगढ़ अंबड, बेलगाम, भुसावल, अकोळा, विदर्भ, धारूर, कोपरगांव, एरंडोल, गोकाक, इंदौर, , कुरुक्षेत्र, जलगांव, सिल्लोड, सेलू, गाडरवारा, लोहर्दा, लोणावळा, पंजाब, महू, नांदगांव, परतवाड़ा, राहटनी पुणे, रत्नागिरी, रिसोड, सादिया, असम, शहाबाद, उज्जैन, सिवनी वालुज, वर्धा, लासूर, औरंगाबाद, विश्वनाथ चारिआली, सोनीपत,परली, सिहोर, आमगांव, गोलियां, माजुली, अनंगपुर,गंगापुर, नसरूल्लागंज, सिहोर, कार्बु, श्री सद्गुरू निरानंद महाराज वेद विद्यालय आळंदी, श्रीसंतनामदेव महाराज वेद विद्यालय औंध ,श्री समर्थ विद्यालय ढालेगाव, महाराज प्रताप सिंह विद्यालय जम्मू श्री कृष्ण वेद विद्यालय पानीपत,वेद विद्यालय सावरगांव, श्रुति स्मृति विद्यापीठ त्र्यंबकेश्वर, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान पुणे, श्रीमती शांति देवी जालान इंटरनेशनल वैदिक सेंटर कोलकाता, स्वामी स्वरूपानंद वेद विद्यालय पुणे, वेद विद्यापीठ मणिपुर वेद विद्यालय पालघर, वेद विद्यालय नोखागाव, बीकानेर, संत ज्ञानेश्वर वेद विद्यालय वृंदावन उम्र प्रदेश , श्री गौरांग वेद विद्यालय कोलकाता,वेद विद्यालय अंजेर गुजरात, श्रीराम वेद विद्यालय धुळे,श्री जगदंबा वेद विद्यालय पाटपुरी पुणे, देवी अहिल्या वेद विद्यालय इंदौर, श्री संत गुलाबराम





प्रथम वार्षिकोत्सव

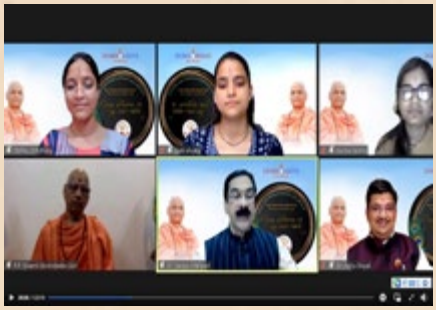
23 जून 2021, https://youtu.be/ohcYyowHpT8

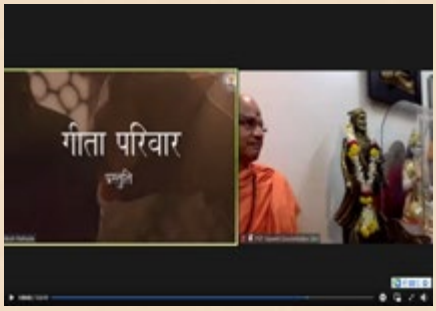
गीता परिवार ने अपना प्रथम वार्षिकोत्सव 23 जून 2021 को हर्षोल्लास से मनाया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन गीता विशारद डॉ. आशू गोयल जी द्वारा किया गया। परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के सान्निध्य और प्रेरणा से आरंभ की गई, गीता संथा कक्षा के प्रथम वार्षिकोत्सव में कई पहलुओं पर प्रकाश डाला गया, जैसे सामाजिक धार्मिक एवं शिक्षा से संबंधित कार्य, आनंद योग, मंत्र उच्चारण, संतों की वाणी, गीता सार सभी पहलुओं को केंद्र बिंदु बना कर इस कार्यक्रम को आनंद पूर्वक मनाया गया। **"घर-घर गीता, हर-घर गीता"** के उद्देश्य से इन गीता संथा वर्गों की शुरुआत की गई थी। आज की इस शुभ घड़ी जेष्ठ शुक्ल त्रयोदशी एवं छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का दिवस एवं गीता संथा के प्रथम वार्षिकोत्सव का दिवस सभी ने बहुत आनंद के साथ एकत्रित होकर मनाया एवं उस मंच पर सभी साधकों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं का स्वागत किया गया।

एक वर्ष पूर्व 2 जून 2020 गीता परिवार ने गीता संथा का प्रारंभ करने का मानस बनाया एवं अनुमान लगाया था कि लगभग 500 लोग तो जुड़ ही जायेंगे, लेकिन 2500 से अधिक साधक गीता परिवार से जुड़ गए, गीता विशारद डॉ. आशू गोयल जी ने हमारे दक्षिणांचल प्रमुख गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हरि नारायण व्यास जी को आमंत्रित किया। उन्होंने सविस्तार बतलाया कि अक्टूबर माह में 10,000 दिसंबर में 16,000 एवं अप्रैल में 25,000, मई में 30,000, जुलाई में 50,000 से ज्यादा लोग अब तक जुड़ गए हैं, और लगभग 2,00,000 से अधिक लोग इसमें गीता सीख रहे हैं, जो कि10 भाषाओं में एवं 10 समय सारणी के अनुसार चार स्तर पर गीता संथा वर्गों में गीता सिखाई जाती हैं। वीडियो, ऑडियो, श्लोकों की पीडीएफ आदि सभी माध्यमों से गीता का विशेष प्रशिक्षण गीता साधकों को दिया जाता है। अब तक स्तर-1 के ग्यारह, स्तर-2 के आठ, स्तर-3 के चार, स्तर- 4 के दो बैच हो चुके हैं। यह संपूर्ण पावन कार्य भगवान श्रीकृष्ण के संरक्षण में एवं गुरुदेव के आशीर्वाद से संपन्न हो रहा है। गीता परिवार यह महान यज्ञ, 3000 कर्मठ कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम से निरंतर करते जा रहा है। गुरुदेव के श्री चरणों में नमन करते हुए हरिनारायण जी ने अपनी वाणी को विराम दिया।

प्रथम बैच के संस्मरण ने सभी को तरोताजा कर दिया। कार्यक्रम में वीडियो दिखाया गया एवं सभी पहलुओं को संजोकर, पिरोकर सभी के समक्ष रखा गया। गीता परिवार के कार्याध्यक्ष आ. गीता विशारद संजय मालपाणी जी ने स्वामी जी के चरणों में साष्टांग प्रणिपात किया एवं उन सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं का मन:पूर्वक अभिनंदन व स्वागत किया, जिन्होंने इस संथा वर्गों को सुचारु रूप से चलाने में सहयोग दिया है। आदरणीय संजय मालपाणी जी ने सर्वप्रथम आ. सुवर्णा काकी जी







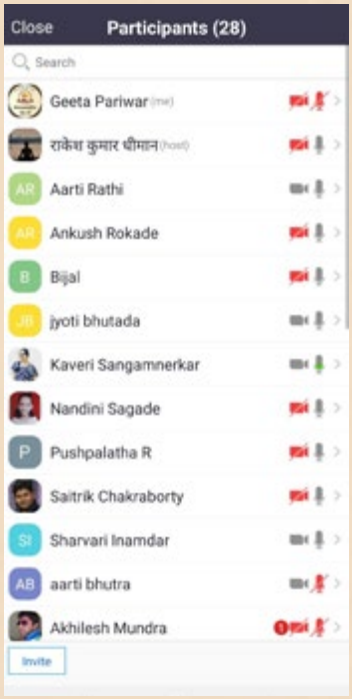




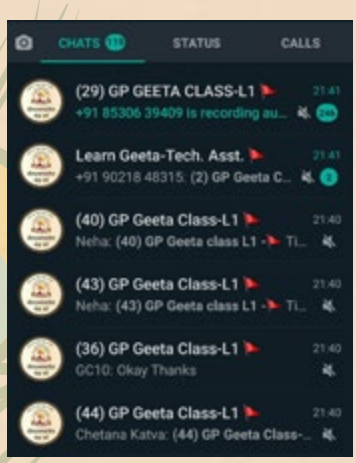
का स्वागत किया एवं उनके कार्य की सराहना करते हुए यह बताया कि आदरणीय सुवर्णा काकी जी गीता परिवार की स्वर कोकिला हैं। गीता विशारद श्रीनिवास वर्णेकर जी एवं श्रीमती वंदना वर्णेकर जी का स्वागत किया गया, इन्होंने गीता के श्लोक उन विद्यार्थियों से पूछे, जिन्होंने अध्याय कंठस्थ किये थे।

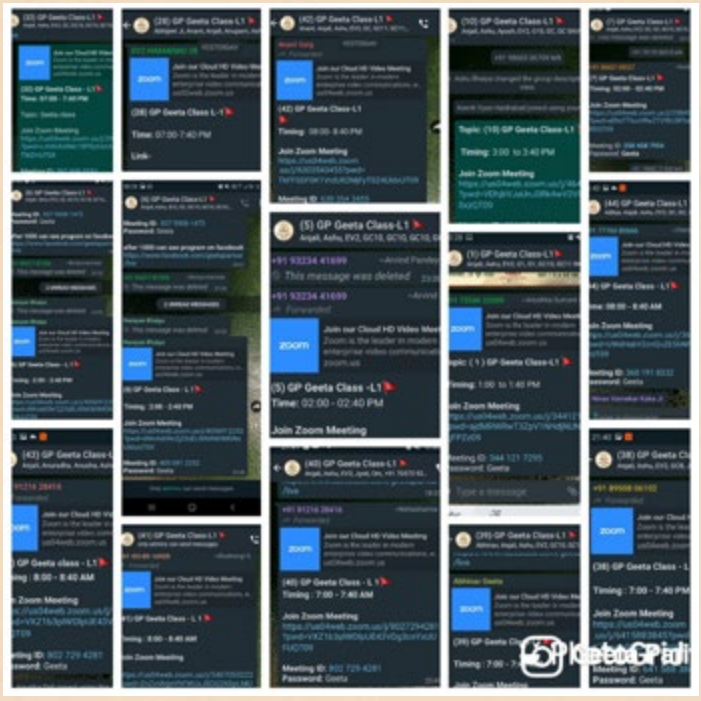
तदुपरांत गीता परिवार के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री महेंद्र भाई काबरा आर. आर. ग्लोबल ग्रुप के मालिक ने बताया भगवान श्रीकृष्ण का सुवाक्य है "ना हार चाहिए ना जीत चाहिए, जीवन में अच्छी सफलता के लिए, परिवार और मित्र का साथ चाहिए।"

उन्होंने गीता परिवार द्वारा आयोजित आर्ट प्रतियोगिता में पुरस्कृत प्रथम 10 विद्यार्थियों का नाम के साथ स्वागत किया एवं उनकी कृतियों को दर्शाया। आदरणीय गीता विशारद आशू भैया गोयल जी ने भी सभी प्रतिभागियों का अभिवादन किया एवं श्री सत्यनारायण जी मूंधड़ा की पुस्तकों का प्रकाशन परम पूज्य श्रीगोविंददेव गिरी जी महाराज द्वारा किया गया। स्वामी जी के समक्ष 13 पुस्तकों का प्रकाशन आज के दिन किया गया। दास बोध जीवन, जीने की कला, प्रबोधना चा स्वधाम, जीवन विद्या भाग 1-5, आत्मविश्वास के प्रभावी सूत्र, ऐसे अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया गया।









संत वाणी

परमपूज्य स्वामी गोविंददेव गिरी जी महाराज ने कहा अवरत दीप जलेंगे ऐसे पौरुष की आहुति से भारत का भाग्य जागेगा। स्वामी जी ने कहा, अत्यंत आनंद का दिन है कि आज गीता परिवार के द्वारा "learngeeta" का आयाम पिछले वर्ष आरंभ किया गया उसे 1 वर्ष पूरा हो गया है। जब कार्यक्रम में सिंहावलोकन किया जा रहा था तब मैं सभी कार्यक्रम का विवरण सुन रहा था। इन सभी कार्यकर्ताओं और गीता परिवार के सदस्यों की मुस्कुराहट को देख रहा था।

सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं का एवं गीता परिवार राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सभी सदस्यों का स्वागत और अभिनंदन किया गया। 5 वर्ष के बालक से लेकर 75 वर्ष तक के लोगों ने भी गीता का कंठस्थीकरण किया है, गीता परिवार के साथ हम लोगों को तो ऐसा लगता है कि आश्चर्य ही घटित हो रहा है, ऐसा विदित होता है कि साक्षात भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है, एवं भगवान श्रीकृष्ण अपने विराट रूप का दर्शन दे रहे हैं। तदुपरांत स्वामी जी ने श्री नारायण जी मुदड़ा का स्वागत किया। सभी को यह संदेश दिया कि आप सभी यह समझे कि मैं आप सभी को भगवान का यह वस्त्र उढ़ा रहा हूं, इसे प्रसाद समझकर ग्रहण करें। भगवान श्री कृष्ण की जय, श्री ज्ञानेश्वर भगवान की जय।

स्वामी जी द्वारा स्वरचित छत्रपति शिवाजी महाराज की आरती को मुद्रित किया गया एवं उसका भी आज प्रकाशन किया गया। छत्रपति शिवाजी महाराज की जय आरती को आदरणीय संजय भैया ने ताल और लय के साथ, सभी गीता साधकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

स्वामी जी ने कहा आज बहुत ही पावन दिवस है छत्रपति महाराज के राज्याभिषेक का दिवस एवं 23 जून का वर्ष पूर्ति का दिन जेष्ठ शुक्ल त्रयोदशी का दिन आया और यह संयोग हैं यह यज्ञ विशाल रूप लेने वाला है। स्वामी जी ने कहा मैं अपने भाषण में जब भी छत्रपति शिवाजी महाराज का भाषण या प्रवचन देता हूं तो, मैंने हमेशा से कहा है छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक का दिन इतिहास का सुवर्ण क्षण है, यह हमारे देश के लिए एक संजीवक अमृत पर्व है, इतिहास में हमारा धर्म संस्कृति, मानवता, सात्विकता इससे सब कुछ बचने की संभावना निर्माण होती है, छत्रपति महाराज के व्यक्तित्व ने एक घने अंधकार को चीर दिया उसी प्रकार गीता परिवार भी घने अंधकार को चीरता जा रहा है। यह 95 देश में पहुंच गया एवं सवा दो लाख गीता साधकों को जोड़ता चला गया, जब भगवान किसी का चयन करके इस प्रकार के कार्य करवाना चाहते हैं, तब इस प्रकार की बातें घटित होती हैं।

भगवान ने अर्जुन से भी यही कहा था कि कार्य तो मैं करने वाला हूं तुम्हें मात्र निमित्त बनना है। हम सभी को यह ध्यान रखना चाहिए कि हम सब निमित्त मात्र हैं, इसके लिए भी कुछ पुण्य और पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। भगवान ने हमारे पूर्वजों के सत्कर्म के कारण हमें इस कार्य को करने के लिए चुना है, और हम पर कृपा की है, यह वास्तव में बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। जिस कार्य को हम लेकर चल रहे हैं वह हमारे समाज के लिए, देश के लिए एवं मानव जीवन के लिए सर्वोच्च कार्य है। स्वामी जी ने कहा गीता पढ़ने, गीता सिखाने एवं जीवन में लाने के अलावा और कोई भी कार्य सर्वोच्च नहीं हो सकता। राष्ट्र पहले, समाज पहले और मैं पीछे, इस प्रकार का कार्य करते जाएंगे तो हमारा देश आने वाले कुछ वर्षों में सारे विश्व का बलवान देश बनकर उभरेगा। प. पू. स्वामीजी के ओजपूर्ण वचनों के पश्चात् छत्रपति शिवाजी महाराज की आरती का वीडियो दिखाया गया। संजय भैया मालपाणी जी ने कार्यक्रम में आरती की प्रस्तावना रखी। हर हर महादेव आरती हिंदू साम्राज्य शुभंकर की।

प. पू. स्वामीजी द्वारा हस्तलिखित पावन आरती से सभी को आनन्द की अनुभूति हो रही थी। अंत में राजस्थान कोटा से कार्यकारिणी सदस्या श्रीमती निर्मला मारू जी ने सभी को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया एवं सुंदर समापन प्रार्थना के साथ इस कार्यक्रम का समापन किया गया एवं सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

30 अगस्त 2021, https://youtu.be/ofkbfQBCqrI

परम पूज्य स्वामी गोविंदगिरि जी महाराज के सान्निध्य में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव आशू भैया के निवास स्थान पर उल्लास के साथ मनाया गया। सभी साधकों को लाइव टेलीकास्ट यूट्यूब और ज़ूम पर दिखाया गया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के समारोह में गीता परिवार की अनेकों गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया तथा भगवान के श्लोकों से मन प्रफुल्लित हो उठा।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह में उन्होंने सभी का स्वागत किया और सभी को भाग्यशाली बताया, स्वामी जी के सान्निध्य में यह कार्यक्रम हो रहा था स्वामी जी स्वयं विद्यमान थे। एक और विशेष बात यह थी कि परम पूज्य स्वामी की गुरु बहन विजया दीदी जो उत्तम संगीतज्ञ है उनके द्वारा अनेकों भजन गाए गयें, सुंदर भजनों का श्रवण करते हुए भक्तिमय वातावरण में सभी गोते लगा रहे थे। 'कृष्णात् परम किमपि तत्वम् अहं न जाने' इस प्रकार भाव उजागर हुए। भगवद्गीता श्रीकृष्ण के द्वारा गाया हुआ गीत है जिसे सभी ने स्वामीजी के साथ नये भाव के साथ गुनगुनाया।

आशू भैया के निवास स्थान पर मंदिर को सुसज्जित किया गया। निर्मल व भक्ति पूर्ण वातावरण में फूलों से सुसज्जित मंदिर ऐसा लग रहा था मानो भगवान स्वयं वहाँ दैदीप्यमान है, विष्णुजी की मूर्ति अन्य देवताओं की मूर्ति सब कुछ निखर रहा था। कार्यक्रम का आरंभ विजया दीदी के सुमधुर भजनो द्वारा किया गया। श्याम सुंदर मदन मोहन बंसी के बजैया, राधिकेश, राजेश्वर, योगेश्वर भूमि भार हरण हरी, भक्ति के धरैया।

उन्होंने सुमधुर वाणी में भजन गाया एवं सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। **'सुनेरी मैंने निर्बल के बलराम'** भक्तिपूर्ण वातावरण था। इसके उपरांत श्रीकृष्ण का कीर्तन हुआ।

'गोविंद जय जय, गोपाल जय जय। राधा रमण हरि, गोविंद जय जय', कृष्ण, कृष्ण ,कृष्ण कृष्ण, कृष्ण जयssss। फिर आशू भैया ने परम पूज्य स्वामी जी को पुष्प माला पहनाई। कृष्णजी का मंदिर देदीप्यमान, प्रकाशमान दिखाई दे रहा था। फिर विजया ताई ने कमल लोचन, कटि पीतांबर अधर मुरली गिरीधरम् मुकुट कुंडल सांवरे राधेवरम् भजन गाया। जैसे ही रात्रि के 12:00 बजे, नंदलाल श्रीकृष्ण के जन्म उत्सव मनाने की तैयारी शुरू हो गई। सभी बहुत ही उत्साहित थे सभी इंतजार का समय पूर्ण हुआ, स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज ने कृष्ण भगवान की मूर्ति का अभिषेक किया पंचामृत से, मूर्ति को दही, दूध, शहद, घी, से स्नान समर्पित किया गया। कृष्ण की मूर्ति को चांदी के छत्र के नीचे सिंहासन पर विराजित किया गया तथा मूर्ति को स्वामी जी ने नमन किया, गुलाब की पंखुड़ियों से पुष्प वर्षा की गई, भजन से वातावरण गूंज रहा था, श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारी हे नाथ नारायण वासुदेव...इसी तरह से कृष्ण भगवान की पूजा की गई । फिर से स्वामीजी ने स्वयं गाना शुरू किया- 'गोपाला गोपाला देवकी नंदन गोपाला। गोपाला गोपाला देवकी नंदन गोपाला।'

ठीक 12 बजे कृष्ण जन्म मनाया गया कृष्ण आरती, पूजा, अर्चना की गई, आनंदमय भक्ति पूर्ण वातावरण था। मंदिर में तालियों की आवाज गूंज रही थी । सभी साधक ऑनलाइन जूम, लाईव यूट्यूब की सहायता से आनंद उठा रहे थे एवं अपने आपको सौभाग्यशाली व कृतज्ञ मान रहे थे। इसके बाद स्वामी जी ने सभी साधकों हेतु संदेश दिया-

स्वामी जी ने कहा पूरे वर्ष में बहुत सारे त्यौहार आते हैं परंतु आज का त्यौहार विलक्षण त्यौहार है क्योंकि आज हम सभी के लाडले भगवान श्रीकृष्ण का जन्म उत्सव है एवं संत सम्राट ज्ञानेश्वर महाराज का भी जन्म दिवस है। भगवान का अवतरण अर्ध रात्रि में हुआ। अष्टमी के दिन एवं अष्टमी के दिन ही अर्धरात्रि में श्री ज्ञानेश्वर महाराज का भी अवतरण हुआ। ऐसा लगता है कि श्रीकृष्ण भगवान भगवद्गीता का प्रतिपादन करने के लिए संत रूप में ज्ञानेश्वर महाराज के रूप में पधारे हैं। भगवान श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व, अलौकिक तत्व, दिव्य मधुर कथाएं सभी विस्तार का विषय है उन्होंने कहा लक्ष्मणपुरी

अर्थात् लखनऊ में बैठे-बैठे उनका ध्यान मथुरा, वृंदावन में जा रहा है आळंदी की ओर जा रहा है, भगवान श्रीकृष्ण का जन्मदिवस सारे विश्व के लिये मंगल दिवस हैं। भगवान श्रीकृष्ण अनेकों रुप में पधारे हैं, धर्म के संस्थापना करने के लिए एवं उन्होंने स्वयं ही कृष्णरूप में तो अपनी सारी कलाओं को प्रकट करके लोगों को आनंद दिया। जिसका वर्णन भगवान सुखदेव जी महाराज ने दसवें स्कंध के पूर्ण एक श्लोक में कर दिया भगवान स्वयं कैसे हैं इसका अद्भुत वर्णन है सबसे पहले वर्णन में भगवान कृष्ण का जब जब स्मरण होता है तब तब उनके मुखाग्र का स्मृतह्रास का वर्णन होता है एवं अत्यंत प्रेम भरा होता है। उनके वाक्य कैसे हैं, उनके वाक्य विस्तृत है। वे सब को एक साथ लेकर चलना चाहते हैं जो मार्ग वेदों ने, उपनिषदों ने, अनेकों ऋषि-मुनियों ने भगवान से मांगा वह यह है -

ओम्(ॐ) असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय।।

तुकाराम महाराज ने कहा - आप जो बोलेंगे कृष्ण उसी का आनंद लेते हैं भगवान स्वयं इस प्रकार का अद्भुत, दिव्य, चरित्र, दर्शन हम लोगों के समक्ष निरंतर रखते रहते हैं और आज ज्ञानेश्वर महाराज का भी जन्मदिन है तो संत श्री गुलाबराव महाराज की वाणी का भी सुंदर अनुकरण करते हुए यही कहा कि यदि जीवन को संपूर्ण बनाना है तो एक ही काम किया जाये, मस्तक में श्री ज्ञानेश्वर महाराज का ध्यान करना एवं हृदय में गोविंद का ध्यान करना। स्वयं भगवान कृष्ण का ध्यान करना, जो अपने आप विवेक एवं प्रेम से परिपूर्ण है। ऐसे ही अपना जीवन भरपूर बन जाता है और पूर्ण हो जाता हैं। हमारे द्वारा किया गया कार्य विश्व के लिए मंगल कार्य करने वाला हो जाता है। आज का यह दिन हम सब लोगों के लिए अविस्मरणीय है और इस उत्सव में आप सब लोगों के साथ मेरा होना सौभाग्य की बात है। इसका पूर्ण श्रेय आशू भैया जी गोयल को जाता हैं। मैं सभी का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, बधाई दी और हम सभी इस प्रकार श्री ज्ञानेश्वर भगवान की गुरु रूप में एवं कृष्ण भगवान की आराध्य रूप में आराधना करते चलेंगे हमारा जीवन आनंद यात्रा बनता चला जाएगा एवं इस आनंद यात्रा में सबको साथ लेकर चलना हैं, फिर संपूर्ण विश्व आनंदमय हो जाएगा। हमें भी श्रीकृष्ण भगवान व ज्ञानेश्वरी महाराज के दर्शन से ही विवेक प्राप्त होता है ज्ञान प्राप्त होता है एवं कार्य करने की शक्ति प्राप्त होती है। इसी भक्ति में जीवन की सार्थकता है। स्वामी जी ने कहा - जय कन्हैया लाल की, जय कन्हैया लाल की । हाथी-घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की। प. पू. स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम देते हुए अपना संदेश पूर्ण किया।
तदुपरांत आशू भैया ने सभी मित्र, शिक्षार्थी, सेवार्थी, सभी गीता प्रेमी जो संपूर्ण विश्व से जन्माष्टमी के कार्यक्रम में जुड़े हुए थे उन्हें श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की बधाई देते हुए सभी को अनुपम भक्ति मिले उनके गीतामयी साधना व गीता सबके जीवन में सार्थक हो इसी बात के साथ कार्यक्रम को पूरा किया गया सभी का धन्यवाद कहा।










प्रथम L4 वर्ग पूर्णाहुति

https://youtu.be/crOtQngNLek

पूर्णाहुति का अर्थ है पूर्णता, जो भी कार्य हमने ठान लिया है उसे पूर्ण करना। जो संकल्प स्वामी गोविंददेव गीरि जी महाराज ने लिया, गीतापरिवार के माध्यम से संजय भैया मालपाणी जी तथा डॉ. आशु भैया गोयलजी के द्वारा आरम्भ किया गया था, उसके पूरे चार स्तरों की पूर्णता हुई। ये बहुत ही आनन्द की बात हैं ।

नीता दीदी मुंदड़ा जी ने आरंभिक प्रार्थना की। अविनाश जी संगमनेरकर जो इस उपक्रम की नीव हैं , इन्होने दीपप्रज्वलन करते हुए महोत्सव की भी नींव रखी। संजय मालपाणी जी ने महोत्सव का आरम्भ परम श्रध्येय स्वामीजी तथा स्वामी परमानंद सरस्वती जी महाराज का स्वागत करते हुए किया।

स्वामी गोविंददेव गीरि जी महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण की पुष्पार्चना की। आशू भैया ने कहा कि यह एक सपना था जो हम सबने देखा था, जो आज पूर्ण होते हुए हम देख रहे हैं। जून 2020 में हमारा पहला बैच 2500 साधकों से आरम्भ हुआ। सारे प्रयास नये से शुरु करने थे, सामान्य लोगों के लिए कोई सहज, सुलभ साहित्य उपलब्ध नही था। गीता पठन का शुद्ध उच्चारण करना महत्त्वपूर्ण था। स्वामीजी के सान्निध्य मे एक विद्वानों की समिती का गठन किया गया और अबतक जो उपलब्ध नही था वैसा साहित्य का निर्माण किया। गीता जैसी पढ़ी जाए वैसी ही छापी जाए। सर्व सामान्यों के लिए साहित्य का निर्माण किया गया। गीताजी के उच्चारण के विषय में इतिहास मे एक क्रांति घट गयी। स्वामीजी ने 18 अध्यायों का क्रम बनाकर दिया, कौनसा अध्याय कब और किस क्रम से पढ़ाया जाए ये बताया।

एक साल में 2500 पार्टिसिपंट्स की संख्या 2.5 लाख तक गयी, 2.5 लाख साधकों ने गीता पढने का ठान लिया । 936 वर्गों में लगभग 50,000 लोग दिन में 10 समयों पर 10 अलग-अलग भाषाओं मे, अलग-अलग स्तरों में, अलग-अलग अध्याय सीखते हैं। शनिवार/रविवार को 9 विवेचन सत्र अलग अलग अध्यायों के हिंदी और अंग्रेजी मे चलते हैं । इसके अतिरिक्त व्याकरण के तथा अतिरिक्त वर्ग और हर 3 माह में परीक्षायें होती हैं ।

ये काम होते होते वटवृक्ष बन गया। जो लोग जून 20 मे गीता सीखने के लिए जुड़े उनके, पूरे 18 अध्याय अगस्त 21 मे पूरे हुए और आज इसके पूर्णाहुति महोत्सव में हम सब एकत्र हुए, अब यह यात्रा छूटेगी नही। ऐसे भी यह यात्रा छूटने वाली नहीं क्योंकि गीताजी का अभ्यास पूरा हुआ ऐसा कौन कह सकता है। निरंतर स्नान कराने वाली ये भागीरथी गंगा है। कोई भी कभी भी अपना स्तर पुन: Repeat कर सकता है। परीक्षा में भी यदि मार्क्स कम आये तो वे उसे पुन: कर सकता है। गीता परिवार के सभी साधक गीता माता से सदा जुडे रहें, उनकी गीता मैय्या से मैत्री बनी रहे, प्रीति, भक्ति बढती रहे, इस दृष्टि से प. पू. स्वामीजी के माध्यम से हम सब करते आ रहे हैं । 4 अक्टूबर मे जो नया L1 का बैच शुरू हो रहा है, उसमें नये 50,000 साधक जुडेंगे ऐसी अपेक्षा हैं ।

जो लोग गीता परिवार से जुड़े हैं, वे सदा के लिए जुड़े रहेंगे यही मंगल कामना गीता परिवार आप सभी के लिये कर रहा है। आज मैं बहुत आनंदित हूँ । जो गीताव्रती बने हैं और जिन्होने L4 मे अपना कोर्स पूरा किया उन सबको मैं प्रणाम करता हूँ और उनका अभिनंदन करता हूँ।

संजय भैया ने आशू भैया को धन्यवाद देते हुए उन्होने उन लोगों को आमंत्रित किया जिन्होने इस गोवर्धन को उठा लिया, वे सारे प्रशिक्षक, तंत्र सेवी, जीसी जिन्होने इस यात्रा मे साथ-साथ चलने वाले गीता साधकों को मार्गदर्शन किया, उनकी चारधाम यात्रा पूर्ण करवाई, उन सबके दर्शन करना भी आज के दिवस पर आवश्यक है। फिर उन सभी का एक छोटा-सा वीडियो दिखाया गया ।

तत्पश्चात् सभी गीताव्रतियों को स्क्रीन पर लाकर प. पू. स्वामीजी द्वारा आशीर्वाद प्रदान करवाया गया। स्वामीजी ने कहा कि मैं अचंभित हूँ । आगे स्वामीजी ने कहा कि समर्थ रामदासस्वामी का जन्म रामनवमी को दोपहर को हुआ जिस समय श्रीराम का जन्म हुआ था, और भगवद्गीता के अलौकिक भाष्यकार स्वयं भगवद्स्वरूप स्वरूप ज्ञानेश्वर महाराज का जन्म जन्माष्टमी के पावन अवसर पर मध्यरात्रि मे हुआ। यह अपूर्व संयोग है और इस संयोग के अवसर पर आज हम लोग अपने एक संकल्प की पूर्ति का आनंद अभिव्यक्त कर रहे हैं, वास्तव मे यह अशक्यप्राय लग रहा था कि हम इतने लोगों तक पहुंच पायेंगे, इतने देशों मे पहुंच पायेंगे और इस प्रकार का भगवद्गीतामय वातावरण सारे संसार में निर्माण कर पायेंगे, ये सब अविश्वसनीय भी हो सकता था, हम इसकी कल्पना भी नही कर सकते थे किन्तु अचिंत्य लीला भगवान की, इस कोविड के काल के अत्यंत आपत्तिजनक समय को अवसर बनाकर के हमारे कार्यकर्ताओं ने परिश्रम की पराकाष्ठा की है। उसका अत्यंत सुमधुर फल हम लोग आज अनुभव कर रहे हैं और यह करते समय हम लोगों को आशीर्वाद देने हेतु हमारे मार्गदर्शक और राष्ट्र के सभी पहलुओं मे सूक्ष्म चिंतन करके देश को नई दिशा देने के लिए आचार्यसभा का निर्माण जिन्होने किया ऐसे ब्रह्मलीन पूज्य स्वामीजी दयानंद सरस्वती महाराज के परम शिष्य और आर्शविद्या गुरूकुलम के राजकोट आश्रम के संस्थापक, संचालक पूज्य स्वामीजी परमानंद सरस्वती के चरणों मे मैं साष्टांग वंदन करता हूं। श्री महाराज जी ने पारंपरिक पद्धति से वेदांत का और प्रस्थानत्रयी का पूरा अध्ययन भी किया, आधुनिक पद्धति से मैनेजमेंट आदि विषयों का उनका गहरा चिंतन है। वे अपने अद्भुत वक्तृत्व से अपने ज्ञान का उपयोग अपने समाज के लिए, राष्ट्र की रक्षाके लिए कैसे strategic चिंतन करना चाहिये, ये सारी शिक्षाएं हम पूज्य स्वामीजी से प्राप्त करते हैं। वे इस समय हिंदू धर्म आचार्य सभा के समन्वयक के रूप में अत्यंत बड़ा कार्य कर रहे हैं । हमारे सभी पीठाधीश आचार्यों को जोड़ कर हम सभी की एक आवाज कैसे बनेगी, इसका वे स्वयं मार्गदर्शन कर रहे हैं, इसके साथ साथ हमारा स्वाध्याय संगम होता आ रहा, इसके भी वे मार्गदर्शक और उसके अभ्यासक्रम के निर्णायक रहे हैं। वेदांत पाठ लेना, वेदांत के प्रवचन करना और नित्य आराधना मे तल्लीन रंगनाथ ये सारे स्वामीजी के विशेष अनुकरणीय हैं। उनका आशीर्वाद हम सबको मिले ऐसी मेरी बहुत तीव्र लालसा थी, पूज्य स्वामीजी महाराज जी ने उसे अनुग्रहपूर्वक स्वीकार किया, हम उनका सप्रणाम स्वागत करते है।

इस समय मैं विशेष अभिनंदन करना चाहता हूं, हमारे जिन भाई बहनों ने इस वर्ष मे गीता के 18 अध्याय निर्दोष कंठस्थ कर लिए हैं और परीक्षा भी दी हैं, उन्होनें गीताव्रती की उपाधि प्राप्त कर ली।

सारे 18 अध्याय कंठस्थ करने के बाद आगे क्या, हमारा मिशन स्टेटमेंट हैं , **'गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन मे लायें'**। गीता पढ़ना, पढ़ाना, जीवन मे लाना ये तो सतत् चलने वाला कार्यक्रम हैं, ये एक सत्र की पूर्णाहुति है, ये इस वर्ष की पूर्णाहुति हैं, अपने कार्य की पूर्णाहुति नही हैं, आपके अध्ययन की पूर्णाहुति नही हैं।

पूर्णाहुति के अवसर पर पूज्य स्वामी जी ने श्रीराम जी के सुंदर विग्रह के साथ आदरणीय आशू भैया जी एवं पूजा भाभी जी का सम्मान किया। उनके द्वारा किये गए अभूतपूर्व कार्य एवं अथक परिश्रम की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।
तत्पश्चात् अवसर था अपने गीता चार धाम की यात्रा के अनुभवों को सबके समक्ष रखने का, जिस हेतु बारी बारी से गीताव्रती साधक श्री निर्मल द्विवेदी जी एवं सुश्री मेघा तापड़िया जी ने सबके समक्ष अपने दिव्य मनोभाव प्रकट किए।
परीक्षा के स्वरूप को समझने हेतु दो परीक्षार्थियों के परीक्षण की प्रतिकृति प्रस्तुत भी की गयीं। जिनमें 8 वर्षीया श्रिया अग्रवाल एवं 59 वर्षीया श्रीमती शांता भूतड़ा जी सम्मिलित रही एवं उनका परीक्षण आदरणीय प्रशिक्षिका रुपाली कापरे दीदी, अनघा भातखण्डे दीदी ने किया।

तत्पश्चात् स्वामी परमानंद सरस्वती जी महाराज ने गीता के सम्बंध में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए जो अत्यंत ही सर्वग्राही एवं उत्तम थे। स्वामीजी ने गीता के महत्व को समझाने हेतु 4 बातें कहीं जो इस प्रकार से थी : प्रथम सिद्धान्त -

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वंय पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता ।।

गीता स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारविंद से निकली हुई हैं। गीता को माँ कृष्ण को पिता एवं अर्जुन को पुत्र स्वरूप बताते हुए कहा कि गीता तो भगवान के मुख से लोककल्याण हेतु अकस्मात् प्रकट हुई है। जैसे पुत्र की पिता के कोप से रक्षा करने हेतु माँ बीच में आ जाती है। "गीता मे हृदयं पार्थ" गीता स्वयं भगवान का हृदय है।

दूसरा महत्व बताते हुए स्वामी जी बताते हैं की भगवान वेदव्यास बहुत बड़े युगद्रष्टा थे। उन्होंने जान लिया था की आने वाले वर्षों में मनुष्य की ज्ञान, मेधा व स्मरण शक्ति क्षीण हो जाएगी। अतः सम्पूर्ण ज्ञान को 4 वेदों में तत्पश्चात् सारे उपनिषदों का सार गीता में उतार दिया।गीता का तीसरा महत्व बताते हुए स्वामी जी कहते हैं कि

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

गोपाल भगवान् श्रीकृष्ण ने सभी उपनिषदरूपी गायों के दूध को अर्जुन रूपी बछड़े को रखकर दुहा है।
चौथा एवं अंतिम महत्व का विस्तार करते हुए महाराज जी बताते हैं कि उपनिषदों का सार पाने हेतु ब्रह्मचारी, सन्यासी एवं विरक्त शिष्य अरण्य में ऋषियों के पास जाते थे। किंतु अरण्य की विद्या को भगवान् श्रीकृष्ण ने सरल रूप में गृहस्थ अर्जुन को रणभूमि में प्रदान किया है।

आगे गीता जी के ज्ञान को आज के मानव हेतु अति उपयुक्त बताते हुए स्वामी जी बताते हैं की पहले अध्याय में जिस तरह अर्जुन अत्यंत ही विषाद एवं तनावग्रस्त थे। वैसी ही स्थिति आज के मानव की है। अर्जुन की तरह ही हम भी चारों ओर से स्वजनों, उलझनों एवं समस्याओं से घिरे हुए हैं। हमारा मन ही कुरुक्षेत्र है।
गीता में भगवान ने मात्र परिस्थिति जन्य समस्याओं का ही नहीं वरन् जीवन के मूलभूत समस्याओं का भी समाधान दिया है। अतः आज भी गीता उतनी ही प्रासंगिक है।

प्रत्येक मानव जो धर्म अर्थात् सत्य, नैतिकता व कर्तव्यनिष्ठा के मार्ग पर चलना चाहता है वह अर्जुन की तरह है एवं उसका मन कुरुक्षेत्र है। समान्यतः धर्म को आस्था विशेष समझा जाता है किंतु धर्म कर्तव्य विषयक है। गीता के साधक को कर्तव्यनिष्ठ व नैतिकतानिष्ठ होना चाहिए। यही सच्चा बल है और यही हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है।
धर्मप्रधान कई लोग हैं किन्तु इनका भी एक अभिगम होना चाहिए जिसे कर्मयोग कहते हैं। सर्वकर्म को ईश्वर के चरणों मे अर्पित करना ही कर्मयोग है।

आज सभी को अधिक की इच्छा है अत: सभी विषादग्रस्त हैं, अधूरे, अपूर्ण व दु:खी हैं। गीता विषाद से छूटने की विद्या है। गीताव्रती बनना बहुत ही उत्तम है। पर हमें इसके अतिरिक्त गीताज्ञान भी प्राप्त करने में लगना चाहिए। जीवन मे 1 या 2 अध्याय को नित्य पढ़ने का नियम बनाना चाहिए। जीवन में रोज गीता को उतारना ही मनन है। रोज पढ़ने से जीवन में शास्त्र कृपा उतरती है। आप सभी शास्त्र रसिक एवं आत्मरसिक हो जाओ ऐसा आशीर्वाद देते हुए स्वामी परमानन्द सरस्वती जी महाराज ने सभी को साधुवाद देते हुए अपनी वाणी को विराम दिया।

आदरणीय संजय जी मालपाणी भैया ने स्वामीजी के अनेक कार्यों के वर्णन पश्चात् श्रद्धा दीदी के धन्यवाद ज्ञापन, अनुजा लाहोटी दीदी की अंतिम प्रार्थना तथा गीताव्रती परीक्षा के कुछ अविस्मरणीय क्षणों के प्रदर्शन के साथ सभा का समापन किया गया।

कोविड में गीता

प. पू. स्वामीजी एवं पू. स्वर्गीय श्री ओंकारनाथ जी मालपाणी ने जब गीता परिवार की स्थापना की उस समय से ही गीता परिवार को एक साधना के रूप में कार्यकर्ताओं के समझ प्रस्तुत किया।

और आज भी गीता परिवार की यह मूल भावना वैसे ही है। Learngeeta कार्यक्रम के अंतर्गत हम इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। आज हज़ारों की संख्या में गीता परिवार से जुड़कर साधक दिन रात बिना किसी पारितोषिक या नाम आदि के निरंतर पूरी श्रद्धा से कार्य कर रहे हैं। मनुष्य के जीवन का मुख्य ध्येय साधना है जिससे वह अपने दोषों को, जन्मांतर के पापों को एवं परम् लक्ष्य को प्राप्त करने जी बाधाओं को दूर कर सके।

यदि गीता परिवार के कार्य की व्याख्या गीता की दृष्टि से की जाए तो मात्र एक शब्द में यह कार्य समाहित हो जाता है - "कर्मयोग"।

यही तो कर्मयोग है। कार्यकर्ता **'ॐ श्रीकृष्णर्पणमस्तु'** बोलकर बिना किसी अपेक्षा के स्वार्थरहित होकर अपना अमूल्य समय एवं ऊर्जा दे रहे हैं।गीता में भगवान ने कहा है -

'यज्ञदानतप:कर्म न त्याज्यमिति चापरे।'

गीता परिवार का कार्य भी यज्ञ अर्थात् साधन की दृष्टि से हमारा मनोनीत कर्तव्य है, जिसमे अपने सांसारिक सुखों की आहुति डालकर परम् सुख की ओर बढ़ने की प्रेरणा प्रगाढ़ होती है। ओर गीता कार्य प्रचार हेतु अपने समय एवं ऊर्जा को लगाना यह परम दान है, अंत मे किसी भी कार्य को करने में बाधा न आये ऐसा हो नही सकता। साधना जितनी बड़ी होगी समस्याएं भी उतनी गहरी होंगी। और उन्हें सहर्ष सहन करना ही हमारा तप है।

"लोकमन संस्कार करना यह परम गति साधना है।"
"राह काटों से भरी है कुशलता से लांघना है।"

हमारे कार्यकर्ताओं ने इसे बड़ी दक्षता से समझा है। यही तो कारण है कि कितने ही साधक कोविड पॉजिटिव होकर भी अपनी कक्षा लेना, उसमे पढ़ना, पढ़ाना, टेक आदि की सेवा देना छोड़ा नही।

कितने ही लोगों ने कक्षाओं के बीच में ही अपने प्रियजनों को खो दिया किन्तु इस मुश्किल समय मे भी उन्होंने गीता की कक्षा छोड़ी नही वरन् और अधिक उत्साह के साथ ये इस यात्रा में आगे बढ़ गयें।

अनुभव तो यहां तक आ गए कि एक 80 वर्ष की माता जी अपनी अंतिम सांसे ले रही थीं एवं उस काल मे भी उन्होंने गीता परिवार द्वारा निर्मित गीता पठन सामग्री नही छोड़ी, श्लोकों की ऑडियो, पीडीएफ प्रिंट्स सभी को हृदय से लगाकर रखा एवं उसी अवस्था मे परलोक गमन किया। यह घटना एवं इसीप्रकार की अन्य घटनाएं मन को झंझोर कर रख देती हैं।

इसीक्रम में एक अनुभव यह भी आता है कि हमारी ही एक प्रशिक्षिका आ. किरण मुंदडा जी जो कि गीता परीक्षाओं में परीक्षक के रूप में अपनी सेवा देती हैं। किसी कारण से उन्हें जिज्ञासु परीक्षा के समय अस्पताल में एडमिट करना पड़ा। किन्तु गीता परिवार की साधना की शक्ति, घटना स्मरण में आते ही आह! निकल आती है कि उन्हीने किसी कार्यकर्ता को इसकी भनक नही लगने दी एवं हॉस्पिटल के बेड से ही उन्होंने गीता परीक्षाएं ली। अपने सेवा को अपना परम् कर्तव्य बनाकर ऐसे जटिल अवस्था मे भी उसे छोड़ा नही। और यह बात मात्र कार्यकर्ता की नही किन्तु कितने ही प्रशिक्षार्थी भी ऐसे हुए जिन्होंने गीता परीक्षाएं अस्पताल के बेड से ही दी।

तब ही तो हमारे संजय भैया एवं आशू भैया कहते हैं कि ऐसे सभी कार्यकर्ता एवं गीता साधक प्रणम्य हैं। जब सभी घटनाओं को एक साथ याद करो तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि

'एक हाथ मे ग्लूकोज़ की बोतल तो दूसरे हाथ मे Learngeeta की क्लास...
नयनो में जल की धारा तो और धारा में गीता ही एक आस.. सूखे कंठो में अध्यात्म की प्यास...
यही तो है गीता परिवार, यही तो है एक साधना।'



Learngeeta - निःस्वार्थ सेवा

Learngeeta का कार्य जब आरम्भ हुआ तो इसका स्वरूप इस प्रकार रखा गया कि समाज का प्रत्येक वर्ग इससे जुड़कर अपनी भूमिका निभा सके। बाहर से देखने मे तो यह मात्र अनुस्वार विसर्ग के नियमों के साथ गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने का एक साधन दिखता है किन्तु जब सूक्ष्मता से इसका अन्वेषण किया जाता है तो पता चलता है कि यह गीताप्रचार हेतु गीता सैनिक तैयार होने की प्रक्रिया है।

आज पूरे विश्व से लगभग 100 देशों से लाखों लोग हमारे साथ जुड़ गए हैं और इतना बड़ा मैनजमेंट गीता परिवार निःशुल्क कर रहा है। कोई भी किसी भी स्तर में गीता सीखा उससे किसी प्रकार की फीस आदि नही देनी होती है न ही गीता परिवार द्वारा निर्मित किसी सामग्री या ऑनलाइन साइट आदि का कोई चार्ज लिया जाता है।

जिसप्रकार सूर्य अपना प्रकाश एवं ऊष्मा बिना किसी स्वार्थ के चहुँ ओर वितरित करता है, जिस प्रकार चंद्रमा की आभा बिना किसी स्वार्थ के बिखरती है एवं जैसे सिन्धु अपना जल सभी को सुलभता से प्रदान करता है उसी प्रकार गीता परिवार की गीता पठन की कक्षाएं निःस्वार्थ भाव से मात्र सेवारूप में चल रही हैं।

यहां गीता पढ़ाने वाले प्रशिक्षक, गीता कक्षा होस्ट करने वाले तकनीकि सहायक एवं बैकएंड की सभी टीम्स कोई और नही है किंतु गीता सीखने वाले साधक ही अपना अतिरिक्त समय इस कार्य मे सेवा की दृष्टि से दे रहे हैं।

"गीता पढ़े, पढ़ाएं, जीवन मे लाएं" स्वामीजी द्वारा प्रदत्त यह वाक्य आज सभी का ध्येय बनता जा रहा है। गीता पढ़ाने में सहायता होगी, इस हेतु कार्यकर्ताओं को कोई भी कार्य हो वे दिन रात एक पद पर ही तैयार खड़े हैं। ऐसा उत्साह एवं सेवा भाव देखकर कोई पाषाणहृदय ही होगा जो विह्वल न हो।

Leargeeta के माध्यम से यह निःशुल्क सेवा सभी कार्यकर्ताओं की अध्यात्मिक उन्नति हेतु एक तीक्ष्ण साधन का स्वरूप ले रही है। अब तो सभी की बस एक ही धुन है-

"नर तन है साधन भव सिंधु तर लूँ,
ऐसा समय फिर आये न आये।"

मनोगत

ಗೀತಾ ಪರಿವಾರ ಕೇವಲ ಗೀತಾ ಪಠಣವನ್ನಷ್ಟೇ ಕಲಿಸಲಿಲ್ಲ. ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಸಮಯ ಪಾಲನೆ, ಸೌಜನ್ಯ, ಸಮನ್ವಯ, ಸಂಯಮ, ಸೇವಾಭಾವ, ಸಂಘಟನೆ, ಮುಂತಾದ ಹಲವಾರು ಜೀವನ ಪಾಠಗಳನ್ನೂ ಕಲಿಸಿದೆ.

ಈ ಕಲಿಕೆಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಎಲ್ಲ ಗುರುವೃಂದಕ್ಕೆ ಅನಂತ ವಂದನೆಗಳು

Manjunatha D S
Bengaluru

40 ನಿಮಿಷ ನಡೆಯುವ ತರಗತಿಗೆ ದಿನದಲ್ಲಿ ನಮ್ಮ ಅನುಕೂಲದಂತೆ ಸಮಯವನ್ನು ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡುವ ಸವಲತ್ತು ಇದೆ. ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ನಾನು ಮುಂಜಾನೆಯ ತರಗತಿಗೆ ಸೇರಿದೆ.

ಗುರು ಹಿರಿಯರ ಆಶೀರ್ವದಚನದೊಂದಿಗೆ ತರಗತಿಯಶುಭಾರಂಭ. ದೇಶವಿದೇಶಗಳಿಂದ ವೀಕ್ಷಣೆ.

Yashoda Shetty
Mumbai

Poem: I was a bird trapped in a maze
with so many confusion
it was the favor of God
I was introduced to Geeta Parivar which
opened my doors
and lead me to the charming life

Tides have their perfect time
like that I chose mine
I tried my whole life
to get up early but never did
but that first day accomplished it

The moon was chosen to be bright
From infinite stars
I had the opportunity to do my best
It feels on the top of the world
When God makes me recite Shlokas

On Saturday,
my head was full of a pierce pain trying
to push its way out through eyes
the clock finally had a right angle it was
seven pm
time for geeta arth vivechan
I went and sat, I listened and smiled
Headache disappeared like a bubble

The confusions were solved
I was able to see roads of paths
it brought me a new life
I was a bird who freely flied into the sky

Vaishnavi Kashinath Suryawanshi
Pune, Maharashtra

।। गीता परिवार।।

जे करिती निःस्वार्थ सेवा
त्यासी मिळे भक्तीचा मेवा
करूया गीतेचा जगी प्रचार
आपल्या सोबती गीता परिवार

अनेक जुळवूनी सत्संगाचे हात
गीता सांगे कृष्ण वसे देहात
माणूनी त्यांचे अनेक उपकार
आपल्या सोबती गीता परिवार

सकाळ,दुपार आणि संध्याकाळ
न समजती आम्हास वेळ - काळ
-हस्व,दीर्घ आणि उच्चार
आपल्या सोबती गीता परिवार

संथा देऊनी साधकास
करवूनी घेतला गीता अभ्यास
दिले आम्हासी जीवन सार
आपल्या सोबती गीता परिवार

कृष्ण सांगती गीता गीता
जुळूनी येती सर्व समता
दुर्बुद्धिसी देऊनी नकार
आपल्या सोबती गीता परिवार

Sakshi Sanjay Rishipathak
Airoli, Navi Mumbai

ગીતાજી ને....

કૃષ્ણ, તારો શ્વાસ છે, ગીતા
સ્વામીજી, આપનો વિશ્વાસ છે, ગીતા
પરિવાર નો અહીં પ્યાર છે,. ગીતા
સમજણ નો અહીં. સાર છે,. ગીતા
ગુરુ નુ અહીં સમર્પણ છે,. ગીતા
શિષ્યો ની અહીં સંભાળ છે,. ગીતા
જગતના પ્રશ્નો નો અહીં જવાબ છે, ગીતા
વેદો નો અહીં રણકાર છે, ગીતા
જીવન ની તુ અમૂલ્ય ભેટ છે અહીં, ગીતા
માનવ માનવ કેરો સેતુ અહીં છે, ગીતા
ભટક્યા મન ની અહીં સ્થિરતા છે, ગીતા
અમ ભક્તિ નું સાધન છે અહીં ગીતા
અમ પરિવાર ના શત શત પ્રણામ, ગીતા
કૃષ્ણ, તારો શ્વાસ છે,. ગીતા
સ્વામીજી, આપનો વિશ્વાસ છે,. ગીતા

Jayshree Soni

जय श्री कृष्ण ,

मी सौ. पौर्णिमा निबंधे. अमेरिकेत वास्तव्याला आहे. गीतापरिवारातून लेवल १ मध्ये गीता शिकत आहे. आज माझं मनोगत लिहायला बसले आणि संत तुकाराम व संत ज्ञानेश्वर यांच्या अभंगाची आठवण झाली. खरोखरच कुठेतरी याची छोटी सुरुवात झाली असेल आणि आज त्याचा प्रचार, प्रसार यांना देश, प्रांत, भाषा, सीमा यांचे कुठलेही बंधन न राहता ते अखंड प्रवाह प्रमाणे वाहत चालले आहे.

Poornima Nibandhe
Dallas USA

मेरा मनोगत
(प्रभाव)

ऐसा कहते हैं की, कोई दुर्घटना अगर घटती है तो उसके साथ मे या पीछे कुछ अच्छा हो होता ही है। मनुष्य स्वभाव है कि बुरी घटना के साथ जुड जाता है एवं साथ मे आई अच्छी बात को नजर अंदाज करता है, एवं बेहतर भविष्य की संभावनाओं को अंधकारमय कर देता है।

जी हाँ, मै कोरोना काल की बात कर रहा हूँ. जब सारा समाज भयकारक व अंधकारकारक स्थिति से गुजर रहा था, तब एक गीता संथा वर्ग की एक तेजोमय ज्योति पूजनीय गुरुदेव श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज के करकमलों से प्रज्वलित हो रही थी।

आज न केवल हिंन्दुस्थान मे, बल्कि अखिल जगत मे लाखों लोगो तक यह ज्योति गीता ज्ञान प्रकाश पहुँचा रही हैं। गीता परिवार के माध्यम से गीता संथा वर्ग ने यह ज्ञान स्त्रोत श्रीमद्भगवद्गीता के भक्तियोग यह बारहवे अध्याय से सिखाना शुरु किया। संकट से निपट जाने हेतु भक्ति में शांति मिलेगी ऐसा विचार कर जो भक्तजन भगवान का सहारा ढूँढने लगे थे वह सहज ही गीता परिवार से जुड गये। जिन लोगो को भक्ति क्या होती है, कैसी की जाती हैं, इसका ठीक ज्ञान भी नही था वह भी जुड गये, और धीरे धीरे भक्तिभाव से भक्तियोग समझने लगे।

भगवान कहते है कि यदि भक्ति करना नही आये तो किया हुआ हरेक कर्म मुझे अर्पित कर और अपने कर्म करते रहो, तब ये आसान सी बात कितने ही जन समझ गये और आनंद की कुंजी उन्हे मिल गयी।

अब एक एक अध्यायी/साधक प्रचारक बनकर यह यज्ञ मे आहुती डालता गया और सारा जगत ज्ञानयज्ञ मे शामिल होता गया. नि:स्वार्थ हेतु से प्रज्वलित यह ज्ञान यज्ञ/ ज्योति दिन दिन ज्यादा ज्यादा लोगोंको प्रभावित करता जा रहा हैं। मनोगत के अंतिम छोर पर गीता परिवार के संत जनों का उपकार व आभार व्यक्त करता हूँ। मनोगत व्यक्त करने के और क्षण अगर चलकर प्राप्त हुए तो मै उपकृत रहूँगा।

जय श्रीकृष्ण

Sharad l. Godbole
Kandivali, Mumbai

22 एप्रिल रोजी मी स्तर१ च्या वर्गाला मी प्रवेष्टित झालो आणि गीता परिवार या प्रचंड मोठ्या परिवाराशी माझे नाते जुळले ते तत्क्षणीच.
आता पाहता पाहता 2 रा स्तर वर्ग ही पूर्ण केला.
गुरुतुल्य प्रक्षिशक अपर्णा मालू ताई व शिल्पा कुलकर्णी ताई असो, गीता परिवाराचा आपला विशेष असा एक अभ्यासक्रम शिकवण्याची रीती,पद्धती,उपक्रम तसेच उत्तम लहेजा सर्वत्र सारखाच आहे.
तसेच अगदी तंतोतंत वेळेवरच सुरू होणारे वर्ग असोत,साप्ताहिक पूर्वार्ध ,उत्तरार्धचे विवेचन वर्ग सर्व काही अप्रतिमच आहे.
शिस्तबद्धता ,नम्रता,लाघवीपणा, असे कितीतरी सद्गुण प्रत्येक गीता परिवाराच्या साधकाच्या बोलण्यातून, व्यक्त होण्यातून दिसतात.

Kiran Laxmikant Inamdar

Kamothe, Navi Mumbai

।।जीवन का सार है गीता।।

दुनिया की हर समस्या का हल है गीता।
जीवन के कर्मों का फल है गीता।
कृष्ण का साक्षात स्वरूप और वेदों का सार है गीता।

ज्ञान का भंडार,धर्म, अर्थ
काम, मोक्ष का सार है गीता
माया, मोह, लोभ, क्रोध एवं
मोक्ष का आधार है गीता

सब ग्रंथों का सार एवं वेद

Rajkumari Pareek
Jaipur, Rajasthan

Jai Shree Krishna

"Jyot se jyot jagate chalo – Prem ki Ganga bahate chalo"

LearnGeeta programme is certainly lighting up the flame of divine learnings of love and spirituality in whoever it is touching. In this 21st century, our day-to-day life is completely controlled by Western values and computerization. The teachings of ancient Hindu scriptures and Sanskrut language have gone out of reach of common people who are forced to learn only through modern education systems through the English medium. In most of the schools in India, Sanskrut language is not being taught.

Learn Geeta movement is a wonderful lead taken by Geeta Parivar to introduce Geeta to the society completely free of cost. It is so nice to see people of all ages, from school-going children to senior citizens, are learning to recite the BhagvadGeeta and are successfully able to do so in a short time. While learning the recitation with exact pronunciations from the wonderful teachers, the students are automatically getting a good taste of the rich Sanskrut language and it's Grammar.

Ashok Deshmukh

Bhopal - MP

ஜெய் ஸ்ரீ கிருஷ்ணா..... கண்ணனின் க்ருபை இருந்தால்தான் கீதையை பாராயணம் செய்யும் பேறு நமக்கு கிடைக்கும் .... பெயருக்கு ஏற்ப, கீதா பரிவார் நம் எல்லோரையும் வாசுதேவ குடும்ப உறுப்பினர்களாக மாற்றி விட்டது என்று தான் நாம் பெருமிதம் கொள்ள வேண்டும்...பரிவும் ஷ்ரத்தையும் கொண்டு நம் ஆசிரியர்கள் சுத்தமான உச்சரிப்புடன் கீதையை நம்மை சொல்ல வைத்து கிருஷ்ணனின் க்ருபைக்கு நம்மை ஆளாக்குகிறார்கள்.. ஒவ்வொரு வரியையும் அர்த்தத்துடன் கற்கும் போது மனது பக்குவம் அடைகிறது...மென் மேலும் இத் தொண்டு தொடர கண்ணனை பிரார்த்திக்கிறேன்... ஸர்வம் ஸ்ரீ கிருஷ்ணார்பண மஸ்து...□□□

Andal Srinath

Chennai

கீதா
பரிவாரில்
கீதத
.
கீதததை கற்க கீதா பரிவாரில்
இதைந்ததன் , அங்குதன்னலமற்றததாை
தைகை் டுவிைந்ததன், நானும்
இக்குடும்பத்தில் இததை முனை் தறன் ,
என் முறை்சிதககூடிதைில்மகிழ்ந்ததன்,
வாழ்தகயில் மாற்றம் ஏற்பைை் தத
உரைந் ்ததன் , அதவ என் குடும்பத்திலும்
பிரதிபலிக்க சிலிரத் ்ததன் ,
தபாறுதமயும்,அன்பும்இங்குநிதறவுனை்
தபற்தறன், அததஅள்ளிவழங்குவதில்
கீதாபரிவாரக் ்குநிகர்கீதா
பரிவாதர!!!
ஸ்ரீ கிருஷ்ை ரின் கிருதப தமலும் தபற்று
இவரக் ளின் தேதவ
ததாரை வாழ் த்தி வைங் குகிதறன் . தெை்
ஸ்ரீ கிருஷ்ை ா

Krithika Manikandan
Dubai

एक छोटी सी कविता

गीता परिवार - मूर्तिमंत कर्मयोग
श्रीकृष्णाने सांगितली गीता अर्जुनाला, रणांगणी ।
गीतापरिवाराने रुजवली, ती गीता आपुल्या मनोमनी ।।१ ।।
भगवंताची दिव्य अमृतवाणी,
तशी प्रशिक्षकांची गोड मधुर गीता शिकवणी ।
गीतेचा प्रवाह सतत चालतो माझ्या श्वासाश्वासातूनी ।।२।।
सुप्रभाती, गीतामृत प्रतिदिनी,
आणि साप्ताहिक अर्थ सत्राचे पक्वान्न सेवूनी ।
तृप्त आम्ही, संतुष्ट बहु, 'गीता - अमृत भोजनी' ।।३।।
एकमेवाद्वितीय 'गीता - ज्ञानाचे'
दिव्य अलौकिक अखंड सेवा कार्य पाहुनी ।
सु-नियोजनाची आणि कौशल्यपूर्ण अध्यापनाची कमाल ही
किती करावी वाखाणणी ।।४।।
माझ्यासाठी तर गीता-परिवाराची ही
गीतारूपी सुवर्णकाठीची अमूल्य भेट म्हातारपणी ।
अर्थ-रुपी मोत्यांचे लेवूनी घुंगुरमणी,
श्लोकांच्या गोड चालीने, रंगबिरंगी सजलेली, मनमोहिनी ।।५।।
वाहते कृतज्ञतेची कोटी कोटी वंदन सुमने ।
गुरू प.पू. श्रीगोविंदगिरि महाराज चरणी ।।६।।
सर्व प्रशिक्षकांसह, सर्व तंत्र सहाय्यकांना अनेक प्रणाम ।
माझे दोन्ही कर जोडूनी ।।७।।

।। श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।।

Geeta Nipanikar
Mulund

गीता और परंपरा

सनातन परंपरा कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग सिखाती है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने इन परंपराओं का विस्तृत वर्णन किया है। भगवान कृष्ण ने गीता में अर्जुन को कर्मयोग के बारे में बताया तो अर्जुन ने संदेह प्रकट किया कि भगवान आप जो कर्मयोग का रहस्य बता रहे है उसका प्रथम प्रयोग मुझ पर है या इसमें भी कोई परंपरा है? यदि मै प्रथम हूँ तो मुझे ये स्वीकार नही है। अर्जुन संदेह से भरा हुआ है यह बात परमेश्वर भी जानते है इसलिये भगवान कहते है-

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ (१)

भावार्थ : मैंने इस अविनाशी योग-विधा का उपदेश सृष्टि के आरम्भ में विवस्वान (सूर्य देव) को, विवस्वान ने अपने पुत्र मनु को और मनु ने यह उपदेश अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु को दिया।

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः।स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप ॥ (२)

भावार्थ:- हे परंतप अर्जुन! इस प्रकार गुरु-शिष्य परम्परा से प्राप्त इस विज्ञान सहित ज्ञान को राज-ऋषियों ने विधि-पूर्वक समझा, किन्तु समय के प्रभाव से यह श्रेष्ठ विज्ञान सहित ज्ञान इस संसार से प्राय: छिन्न-भिन्न होकर नष्ट हो गया। (२)

अत: कर्म योग ज्ञानयोग व भक्ति योग हमारी परंपराएं है। अपनी परंपराओं से परिचय करवाने का कार्य भगवान कृष्ण द्वारा गीता में कहा गया है। गीता हर युग में प्रासंगिक थी, है और रहेगी। बिना जाति, वर्ग और धर्म के भेदभाव के ये सबको मार्गदर्शन देती है। इसीलिये कृष्ण को जगद्गुरु कहते है। गीता मन में उठने वाले सभी संदेहों का समाधान करती है। जीवन से संबंधित सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर गीता के पास है। यूँ प्रतीत होता है मानो स्वयं भगवान ही हमारी शंकाओं का निवारण कर रहे है। अत: अपनी जड़ो से और परंपराओं से परिचय होने के लिये प्रथम परिचय गीता से ही होना चाहिये। तभी जीवन का उद्देश्य भी ज्ञात होता है।

Nirupama Agarkar
Jabalpur, Madhya Pradesh

उठो,जागो और देखो
क्यों हो सोये हुए?

कभी तो खुद को पहचानो,
कभी तो खुद के लिए कुछ सीखो।
क्यों हो सोये हुए , उठो , जागो और देखो
क्यों हो सोये हुए?

न जाने कितने दिन व रातें,
हमने कुछ सीखे ही गवाये है।
काश गीता परिवार की
ऑनलाइन कक्षा का पता होता,
फिर बाद मे पछतावा न होता।।

तेरा वक़्त है उठ जा,
फिर पछताना ना तुमको पड़ेगा।
उठो, जागो और देखो,
गीता परिवार हमारे साथ है।।

Puja Mohata
Biratnagar, Nepal

चाहा था गीता पढ़ूं
शुरू और बंद करूं
ना समझ मैं पाती थी
पुस्तक कई तलाशी थीं
तभी एक अवसर मिला
भय मन में था भरा
सामने कठिन लक्ष्य था
समय पाने का प्रश्न था

शिक्षक का सहयोग मिला
धैर्य फिर बढ़ चला
जुड़ती गई स्तर स्तर
हिम्मत बढ़ी भर भर

खुशियां बहुत जीवन में
उतार रही अपने में
अब चित्त कुछ हल्का हुआ
आप सबों की दुआ

मुश्किल से लड़ना सीखा
खुद पर काबू पाया
प्रवृति कुछ है बदली
आपकी सहायता मिली

कसर जो और बाकी है
पूरन अब करनी है
अनुकंपा स्वीकारी है
गीता सेवा करनी है

Abha Maheshwari
New Delhi

नेतृत्व

"माखन तो चखा सभीने, दंड का भागी मैं अकेला
ऐसा क्यों अन्याय माते, ऐसा क्यों अन्याय भला"

हर्षित पलों के स्वामी सब,
पर विपदा पर हक ज्यादा है
नेतृत्व की मर्यादा कान्हा
नेतृत्व की (यही) मर्यादा है

वृंदावन में कई बालक
पर संकट में सदा मैं बेचारा
आमोद में थे सब साथी पर
कहां गया तब भाई चारा

संकट भी वही झेल पाते
जिनकी क्षमता ज्यादा है
नेतृत्व की मर्यादा कान्हा
नेतृत्व की (यही) मर्यादा है

रण कितने भी जीते हों
मात्र एक बार रण छोड़ भया
फ़िर भी क्यों जीवन भर माते
रणछोड़ मैं कहलाता रहा

जीतना ही है हर बार
हार एक बार भी कुछ ज्यादा है
नेतृत्व की मर्यादा कान्हा
नेतृत्व की (यही) मर्यादा है

माता पिता हुए बंदी मेरे
जन्मस्थल कारागार हुआ
अबोध नन्हे बालक पर
जन्म से अत्याचार हुआ
विधिलीखित क्यों ऐसा माते
कहो ना मेरे साथ हुआ

ईश्वर भी अवतरीत धरा पर यद्यपि होकर आते हैं
मानव जीवन की मर्यादा से बद्ध स्वयं को पाते हैं
ईश्वर ही इस मर्यादा की रक्षा सब से करवाता है
नेतृत्व की मर्यादा कान्हा, नेतृत्व की मर्यादा है

Dilipkumar Agrawal
Wani, Dist. Yavatmal, Maharashtra

प्रश्नमाला



1. प्रस्थानत्रयी में उपनिषद एवं ब्रह्मसूत्र के साथ तीसरा ग्रन्थ कौन सा है?

उ. श्रीमद्भगवद्गीता

2. गीता किस शास्त्र का एक अंग है?

उ. महाभारत

3. गीता में कितने अध्याय हैं?

उ. 18

4. गीता में अविकम्पन योग किस अध्याय में आया है?

उ. विभूतियोग (अध्याय 10)



5. गीता के श्लोकों में कितने छन्दों का प्रयोग है?

उ. दो, अनुष्टुप एवं त्रिष्टुप

6. गीता का पहला और अन्तिम शब्द कौन सा है?

उ. धर्म और मम

7. गीता जयन्ती कब मनायी जाती है?

उ. मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी

8. गीता में किस अध्याय को भक्तियोग कहा गया है?

उ. अध्याय 12



9. गीता में भगवान् ने किस यज्ञ को अपनी विभूति बताया है?

उ. जपयज्ञ

10. गीता में मन को वश में करने के कौन से दो उपाय बताये हैं?

उ. अभ्यास और वैराग्य

गीतासेवी टीम्स का परिचय

• **प्रवेश विभाग** - यह सभी कार्यों का सम्पादन करने हेतु प्रथम सोपान है, जिसके द्वारा बैच आरम्भ करने की दिनांक निश्चित करके उसका फॉर्म लॉन्च करना एवं अंतिम तिथि पर फॉर्म को क्लोज करके प्रशिक्षार्थियों को नये WhatsApp Groups बनाकर उसमें ऐड करना तथा किसी को यदि अपने ग्रुप का समय अथवा भाषा मे परिवर्तन करना है तो उसको सुनिश्चित करने का कार्य होता है।

• **साहित्य प्रकाशन विभाग** - लर्नगीता की कक्षायें देश में प्रचलित 10 प्रमुख भाषाओं में संपादित की जा रहीं हैं, एवं भगवद्कृपा से गीता के सम्पूर्ण 18 अध्याय का सभी भाषाओँ में शुद्ध सरल पाठ्य सामग्री के निर्माण का अद्भुद कार्य चल रहा है। प्रत्येक भाषा में अध्यायो के PDF बनाना, ज़ूम पर स्क्रीन शेयर करने हेतु स्लाइड्स, ऑडियो वीडियो एवं गीता व्याकरण आदि की भी सभी प्रकार का साहित्य इस टीम के द्वारा निर्मित किया जाता है।

• **प्रूफ रीडिंग विभाग** - सभी भाषाओँ में निर्मित साहित्य व सूचनाओं के नित्य भेजे जाने वाले मेसेज आदि साहित्य को पूर्ण शुद्ध बनाने की दृष्टि से प्रूफ रीडिंग की बड़ी टीम इस कार्य में निरन्तर तत्पर है।

• **ट्रांसलेशन टीम** - समूह में जाने वाला सभी साहित्य एवं सभी मेसेज उस समूह की ही भाषा में ही भेजे जाते हैं अतः सभी सामग्री को विभिन्न भाषाओं में ट्रांसलेट करने हेतु ट्रांसलेशन टीम कार्य निरन्तर कार्यरत है।

• **Helpline** - प्रशिक्षार्थियों को एडमिशन फॉर्म भरने से लेकर क्लास के ग्रुप में जुड़ने, भाषा- समय आदि का परिवर्तन करने व उन्हें किसी भी प्रकार की सहायता पँहुचाने हेतु दिल्ली में एक टेली, ईमेल व चैट हेल्पलाइन का विभाग स्थापित किया गया है जिसमें कुशल कार्यकर्ता नित्य आने वाली हजारों समस्याओं का निदान कर स्गीताप्रेमियों कि इस यात्रा को सुगम बनाते हैं। 1800 203 6500 पर प्रातः 10 बजे से सायं 6 बजे तक नित्य यह टीम सेवारत रहती है।

• **परीक्षा विभाग** - गीता कंठस्थीकरण परीक्षाओं में प्रतिमाह 3/6/12/18 अध्याय कंठस्थ कर लगभग 3000 गीता साधक जिज्ञासु, पाठक एवं पथिक तथा गीताव्रती की परीक्षाओं हेतु आवेदन करते हैं। प्रतिमाह इतनी बड़ी संख्या में सभी की सुगम परीक्षा का नियोजन कर उतीर्ण परीक्षार्थियों की मार्कशीट एवं सर्टिफिकेट भेजने का अत्यन्त विशाल कार्य इस टीम के द्वारा संपादित किया जाता है।

• **Class Monitoring Department** - 10 भाषाओँ में नित्य होने वाली लगभग 900 कक्षाओं की निगरानी की जिम्मेदारी इस विभाग की है। गीता परिवार प्रशिक्षार्थियों के उत्तम प्रशिक्षण हेतु निश्चित सभी नीतियों का क्रियान्वयन प्रत्येक कक्षा में ठीक से हो रहा है या नहीं, यह इस विभाग का मूल कार्य है। इस सेवा में संलग्न प्रत्येक गीतासेवी की गुणवत्ता का आंकलन कर उसकी रिपोर्ट सम्बंधित विभागों तक पंहुचाना इस विभाग की विशिष्ट सेवा है।

• **IT डिपार्टमेंट** - गीता कक्षाओं का सारा कार्य ऑनलाइन होने ले कारण सभी कार्यों की रीढ़ टेक्नोलॉजी ही है यदि ऐसा कहा जाए तो गलत नही होगा। हमारी आई. टी. टीम के द्वारा निरन्तर सॉफ्टवेयर सपोर्ट प्रदान कर व नित्य प्रतिदिन आने वाली समस्याओं के निदान प्रदान करने से लेकर सभी कार्यों को सरल सहज और द्रुतगामी बनाने हेतु समर्पित अत्यन्त सुयोग्य कार्यकर्ताओं द्वारा यह विभाग संचालित है।

• **कार्यक्रम संचालन विभाग** - यह विभाग ऑनलाइन गीता संथा वर्गों के अंतर्गत होने वाले सभी कार्यक्रमों को जैसे, उदघाटन -समापन समारोह, विभिन्न उत्सवों का आयोजना, व्याकरण वर्ग, विवेचन आदि आयोजित करने का कार्य करती है, उसमे सेवा देने वाले टेक बंधु, सूत्र संचालकों आदि की ट्रेनिंग तथा अन्य सभी बातों को नियोजित करने का कार्य किया जाता है।

• **प्रशिक्षण विभाग** - विभिन्न विभागों में सेवा देने के इच्छुक हजारों कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षक, तकनीकी सहायक, समूह संचालक एवं अनेक रूपों में सेवा देने हेतु हजारों कार्यकर्ताओं को प्रतिमाह अलग अलग विभाग में प्रशिक्षण प्रदान कर उनका चयन किया जाता है, यह एक अत्यन्त दुष्कर व कठिन कार्य करने में अनेक प्रशिक्षण विभाग सेवारत हैं।

• **गीता प्रचारक टीम** - एक बड़ी संख्या में कार्यकर्ता गीता कक्षाओं में गीता प्रचारक के रूप मे कार्य करते हैं जो आगामी बैच के लिंक को सोशल माध्यमों से आगे प्रेषित करते हैं, प्रोमो वीडिओज़ बनाते हैं और अनेक मार्गों से लोगों के गीता से जोड़ते हैं।

• **ग्राफ़िक एवं एनीमेशन टीम** - गीता वर्गों में प्रचार एवं सूचना आदि हेतु जो भी बैनर्स, वीडिओज़ आदि बनाये जाते हैं वे इस टीम के द्वारा ही निर्मित किये जाते हैं।

• **सर्टिफिकेशन डिपार्टमेंट** - ऑनलाइन गीता संथा वर्गों के अंतर्गत प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षार्थियों को प्रशस्तिपत्रक एवं प्रमाणपत्र भी दिये जाते हैं।

'गीता गुञ्जन प्रशास्तिपत्रक' - स्तर -1 में प्रशिक्षार्थियों से 12वें एवं 15वें अध्याय के पठन हेतु प्रदान किया जाता है. प्रतिमाह लगभग 10000 साधकों को गीता गुञ्जन का ई-प्रशस्तिपत्रक प्रदान किया जाता है।

'गीता जिज्ञासु, पाठक, पथिक एवं गीताव्रती प्रमाण पत्र' - आगे के स्तरों में गीता कंठस्थ करने हेतु सभी गीता साधकों को प्रेरित किया जाता है एवं परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उन्हें सुन्दर प्रमाणपत्र प्रदान किये जाते हैं। तीन अध्याय कण्ठस्थ कर परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर **'गीता जिज्ञासु'** एवं आगे छह, बारह, अट्ठारह अध्याय कंठस्थ होने पर क्रमशः पूज्य स्वामीजी द्वारा हस्ताक्षरित **'गीता पाठक, पथिक एवं गीताव्रती'** के ई-प्रमाण पत्र के साथ इच्छुक साधकों को पोस्ट के द्वारा भी मुद्रित प्रमाणपत्र भी कुरियर से भेजे जाते हैं।

फैकल्टी सर्टिफिकेट - गीता कक्षाओं में प्रशिक्षक, तकनीकी सहायक एवं समूह संचालक और अन्य बैकेन्ड के रूप में सेवा दे रहे कार्यकर्ताओं को भी सत्र समाप्त होने पर कार्यकर्ता अभिनन्दन पत्रक भी दिया जाता है

• **कंटेंट शेयरिंग टीम** - गीता कक्षाएं जैसा कि WhatsApp Groups पर संचालित की जाती हैं अतः सभी व्हाट्सएप्प ग्रुप्स में अनेक सूचनाएं, पीडीएफ, फ्लायर्स, बैनर्स, ऑडियो, वीडियो आदि प्रेषित करने हेतु एक टीम कार्य करते है जो सभी सामग्री को भाषा के अनुसार सभी समूहों में भेजने का कार्य करती है।

• **ऑब्जरवेशन एवं फीडबैक टीम** - यह टीम सभी डीपार्टमेंट्स के कार्यों को देखना एवं उनमे सुधार आदि करने का कार्य करता है एवं नई नीतियों के गठन में एक मुख्य भूमिका निभाती हैं।

• **सोशल मीडिया टीम** - ऑनलाइन वर्गों में होने वाले सभी कार्यक्रमों का प्रचार करना, उसे फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम, ट्विटर एवं LearnGeeta Site पर पोस्ट करने का कार्य करती है।

• **क्रिएटिव राइटिंग टीम** - यह टीम गीता वर्गों में भेजे जा रहें सभी मैसेज ड्राफ्ट करना एवं सभी विवेचनों को टाइप करके उनका पीडीएफ बनाना एवं अन्य डॉक्यूमेंट तैयार करने का कार्य करती है।

• **चिन्तनिका विभाग** - माह में दो बार प्रत्येक एकादशी को रात्रि 9 से 10 बजे तक होने वाले चिन्तनिका सत्र का आयोजन यह विभाग संभालता है। प्रत्येक एकदशी पर क्रमश: 3 अध्यायों का सामूहिक पाठ हजारों साधकों द्वारा ज़ूम पर होता है, विशेष बात यह है कि इस पाठ को सस्वर करने हेतु एवं इन्ही अध्यायों को संक्षिप्त विवेचना करने हेतु गीता साधकों को अवसर प्रदान किया जाता है।

LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

Total Extra Classes

GĪTĀ GUÑJANA - 52
GĪTĀ JIJÑĀSU - 48
GĪTĀ PĀṬHAKA - 54
GĪTĀ PATHIKA - 18
GĪTĀ VRATĪ - 9

Total Passed Examinees

GĪTĀ GUÑJANA - 70,000
GĪTĀ JIJÑĀSU - 11,203
GĪTĀ PĀṬHAKA - 2,587
GĪTĀ PATHIKA - 268
GĪTĀ VRATĪ - 60

Total Grammar Sessions

Level 1 - 16 Sessions
Level 2 - 1 Session

कुल विवेचन सत्र

Hindi - 337
English - 86
Total - 423

आंकड़ों की नज़र में...

4,000 Geeta Sewi volunteer from accross the globe

2,65,000 Registered Participants from **114** Countries

1,32,577 Geeta classes conducted yet

From June 20 to October 21

Volunteers' Brigade

PATRON
P. P. SWAMI SHRI GOVINDDEV GIRI JI MAHARAJ

CONCEPT CHIEF
Dr. Sanjay Malpani

PROGRAM DIRECTOR
Dr. Ashu Goyal

PRINCIPAL TRAINER
Sau. Suvarna Malpani, Sangamner

PROGRAM COORDINATORS
Ms. Jyoti Shukla
Ms. Rupal Shukla
Ms. Kavita Verma

TRAINER'S TRAINING DEPARTMENT
Smt. Vijaya Godbole, Dehradun
Shri Shrinivas Warnekar, Nagpur
Sau. Vandana Warnekar, Nagpur
Sau. Anita Sangamnerkar, Ayodhya
Shri Vikas Vaidya, Pune

IT & SOFTWARE DEPARTMENT
Shri Pradeep Rathi, Pune
Shri Vivek Sinha, USA
Shri Gagan Holani, Mumbai
Shri Vednath Mathur, Delhi
Smt. Minaxi Shah, Ahmedabad
Shri Ashish Tiwari, Chitrakoot

BATCH COORDINATOR DEPARTMENT
Shri Rahul Pore, Pune
Smt. Anshu Garg, Delhi

TRAINER MANAGEMENT DEPARTMENT
Shri Vivek Vij, Moga
Smt. Sheetal Salke, Pune
Smt. Mansi Ekbote, USA
Smt. Anita Ravishankar, Pune

LITERATURE PUBLICATION DEPARTMENT
Smt. Pooja Goyal, Lucknow (Compilation)
Smt. Deepti Pareek, Thailand (Roman)
Shri. Suresh Kumbhar, Ugar BK (Kannada)
Smt. Malathi Kini, Mangalore (Kannada)
Smt. Shruthi Kadagaonkar, Pune (Kannada)
Smt. Vidya Rao, Jalna (Kannada)
Smt. Ragini Polisetty, Guntur (Telugu)
Shri Gopalratnam Ji, Tiruchirapalli (Tamil)
Smt. Monika Bagdi, Chennai (Tamil)
Smt. Asha Saboo, Calcutta (Bangla)
Shri. Pramod Barik, Malkangiri (Odia)
Shri Vivek Vijayan, Kottakkal (Malayalam)
Ms. Kaveri Sangamnerkar, Nagpur (Roman)
Shri Vedmurti Rohan Sole, Pune (Marathi)
Ms. Hiral Patel, Satara (Gujarati)
Shri. Narayan Shete, Coimbatore (Grammar)
Shri. Suresh Garg, Rishikesh (Grammar)

TECHNICAL ASSISTANT DEPARTMENT
Smt. Manisha Bharadwaj, Abu Road
Smt. Mayuri Mathapati, USA
Shri Narendra Kotak, Pune
Smt. Vijaya Muchhal, USA
Shri Suraj Sharma, UAE
Shri Dinesh Chawla, Chennai
Smt. Bhumika Shah, Mumbai

GROUP COORDINATORS DEPARTMENT
Smt. Kavita Taparia, Ahmedabad
Smt. Smita Mundada, Pune
Smt. Saroj Saboo, Hyderabad
Smt. Punita Prasad, Chennai
Smt. Neeta Survyavanshi, Bhuj

EXAMINATION DEPARTMENT
Shri Arun Taparia, Lakhimpur Khiri
Shri Hemant Parmar, Mumbai

BACK OFFICE DEPARTMENT
Shri Nilesh Pathade, Sangamner
Shri Datta Bhandurge, Sangamner
Shri Prasad Shete, Sangamner
Shri Swapnil Gaikwad, Sangamner
Shri Ankit Vaghmare, Sangamner
Ms. Vaishnavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Janhvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Bhagyashri Pawnikar, Chhindwara

TELE & MAIL HELPLINE DEPARTMENT
Shri Siddharth Havelia, Delhi
Smt. Sarika Dhaundiyal, Delhi

LEGAL DEPARTMENT
Smt. Priyanka Havelia, Delhi

CLASS MONITORING DEPARTMENT
Smt. Shraddha Raodeo, Hyderabad
Smt. Namita Mehra, Mumbai
Smt. Anjali Joshi, Mumbai
Smt. Renu Chaudhary, Hyderabad

CREATIVE WRITING DEPARTMENT
Shri Vimal Jain, Calcutta
Shri Ghanshyam Das, New Delhi
Shri Swaminathan, Nasik
Shri Arvind S Patil, Mumbai

CHINTANIKA COORDINATORS
Smt. Nirmala Maru, Kota
Shri Harinarayan Vyas, Hyderabad

VIVECHAN COORDINATORS
Shri Gopal Singh Nathawat, Bikaner
Smt. Kavita Mandhane, Parbhani
Smt. Neeta Aspat, Mumbai
Shri Santosh Singh, Indore

GEETA PRACHARAK COORDINATORS
Shri Mahesh Goenka, Goa
Shri Suresh Dadhich, Mumbai



॥ श्रीहरिः ॥



प.पू. स्वामी श्रीगोविंददेवगिरिजी महाराज
(संस्थापक अध्यक्ष, गीता परिवार)

गीता परिवार

प्रणीत

गीताप्रेमी - साधकों के लिए

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

श्रीमद्भगवद्गीता प्रशस्तिपत्रक योजना

जो गीताप्रेमी साधक अनुस्वार, विसर्ग आघात पद्धति से गीता सीख एवं कंठस्थ कर रहें हैं, वह निम्न प्रक्रियाओं में सम्मिलित होकर विभिन्न प्रशस्तिपत्र प्राप्त कर सकते हैं



गीता गुञ्जन

गीता जिज्ञासु

गीता पाठक

गीता पथिक

गीताव्रती

गीता प्रवीण

गीता पारङ्गत

गीता विशारद

गीता प्राज्ञ

गीता मनीषी

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Learngeeta.com

गीता प्रशिक्षार्थियों के लिये –

स्तर 1 प्रशिक्षण वर्ग (L1) – 20 सत्र (12वाँ एवं 15वाँ अध्याय)

1) गीता गुञ्जन – 12वें एवं 15वें अध्याय की अनुस्वार-विसर्ग पद्धति से शुद्ध पठन की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीताप्रेमियों को 'गीता गुञ्जन' प्रशस्तिपत्र ई-मेल द्वारा प्रदान किया जायेगा।

स्तर 2 प्रशिक्षण वर्ग (L2) – 40 सत्र (16, 9, 14, 17वाँ अध्याय)

2) गीता जिज्ञासु – 12,15 एवं 16वाँ कुल 3 अध्याय शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले साधकों को 'गीता जिज्ञासु' उपाधि से विभूषित किया जायेगा एवं प्रशस्तिपत्र ई-मेल / पोस्ट द्वारा प्रदान किया जायेगा।

3) गीता पाठक – कुल 6 अध्याय शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीता साधकों को 'गीता पाठक' उपाधि से विभूषित किया जायेगा एवं प्रशस्तिपत्र ई-मेल / पोस्ट द्वारा प्रदान किया जायेगा।

स्तर 3 प्रशिक्षण वर्ग (L3) – 60 सत्र (1, 3, 4, 5, 6, 7वाँ अध्याय)

4) गीता पथिक – कुल 12 अध्याय शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीता साधकों को 'गीता पथिक' उपाधि से विभूषित किया जायेगा एवं प्रशस्तिपत्र ई-मेल / पोस्ट द्वारा प्रदान किया जायेगा।

स्तर 4 प्रशिक्षण वर्ग (L4) – 80 सत्र (2, 8, 10, 11, 13, 18वाँ अध्याय)

5) गीताव्रती – सम्पूर्ण भगवद्गीता (18 अध्याय) शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीता साधकों को 'गीताव्रती' उपाधि से विशेष कार्यक्रम में सम्मानित किया जायेगा।

गीता प्रशिक्षकों के लिये –

6) गीता प्रवीण – 150 साधकों को 'गीता पाठक' प्रशिक्षण देकर उत्तीर्ण करवाने वाले आदरणीय प्रशिक्षक को 'गीता प्रवीण' उपाधि एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जायेगा।

7) गीता पारङ्गत – 100 साधकों को 'गीता पथिक' प्रशिक्षण देने वाले आदरणीय प्रशिक्षक को 'गीता पारङ्गत' उपाधि एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जायेगा।

गीता प्रचारकों के लिये –

8) गीता विशारद – गीता पर 50 व्याख्यान देने वाले 'गीता पारङ्गत' को 'गीता विशारद' उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।

9) गीता प्राज्ञ – गीता - श्रीधरी व्याख्या / साधक सञ्जीवनी / ज्ञानेश्वरी की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले 'गीता विशारद' को 'गीता प्राज्ञ' उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।

10) गीता मनीषी – गीता ही जीवन ग्रन्थ बनाने वाले तद्रूप चिंतक को 'गीता मनीषी' उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

VISIT OUR WEBSITE (Learngeeta.com)

SUBSCRIBE OUR YOUTUBE CHANNEL

LIKE OUR FACEBOOK PAGE

FOLLOW US ON TWITTER

FOLLOW US ON INSTAGRAM

All rights reserved, Geeta Pariwar, Sangamner (Maharashtra) 422605
Ph +91 2425 222299, +912425 225011
www.geetapariwar.org